

कमल संदेश

17 सितम्बर, 2020 ₹100.00

विशेषांक

अभिनंदन!

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी
के 70वें जन्मदिन के
उपलक्ष्य में प्रकाशित



नए भारत के प्रणेता

न्यू इंडिया का सरोकार

तो जो सामने मुश्किलों का अंबार है
उसी से तो मेरे होसलों की मीनार है
चुनौतियों को देखकर, घबराना कैसा
इन्हीं में तो छिपी संभावना अपार है
विकास के यज्ञ में जन-जन के परिश्रम की आहुति
यही तो मां भारती का अनुपम शृंगार है
गरीब-अमीर बनें नए हिंद की भुजाएं
बदलते भारत की, यही तो पुकार है
देश पहले भी चला, और आगे भी बढ़ा
अब न्यू इंडिया दौड़ने को तैयार है
दौड़ना ही तो न्यू इंडिया का सरोकार है

- श्री नरेन्द्र मोदी

संपादक

प्रभात झा

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सह संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

राम नयन सिंह

कला संपादक

विकास सैनी

भोला राय

डिजिटल मीडिया

राजीव कुमार

विपुल शर्मा

सदस्यता एवं वितरण

सतीश कुमार

ई-मेल

mail.kamalsandesh@gmail.com

mail@kamalsandesh.com

फोन: 011-23381428, फैक्स: 011-23387887

वेबसाइट: www.kamalsandesh.org



- 04 संपादकीय
06 नरेन्द्र मोदी: एक परिचय

विशेष लेख

- 12 मोदी हैं, तो भरोसा है / जगत प्रकाश नड्डा
16 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के शिल्पकार / योगी आदित्यनाथ
18 विकसित भारत का वैश्विक चेहरा / सर्बानंद सोनोवाल

व्यक्ति दर्शन

- 24 एक विनम्र शुरुआत: आरंभिक वर्ष
25 समर्पित जीवन
28 एकता यात्रा: अखंड भारत के लिए खड़ा होना!
29 नरेन्द्र मोदी और भाजपा संगठन
29 अपने कार्य में आनंद लेना
30 उत्कृष्ट प्रबंधन कौशल

लालकिले की प्राचीर से...

- 36 2014 - मैं आपके बीच प्रधानसेवक के रूप में उपस्थित हूँ
38 2015 - भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है
40 2016 - सशक्त समाज बनना है सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर

- 42 2017 - न गाली से, न गोली से, परिवर्तन होगा गले लगाने से
44 2018 - देश आज आत्मविश्वास से भरा हुआ है
46 2019 - हम समस्याओं को न टालते हैं, न पालते हैं
48 2020 - 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना होगी साकार

विचार नवनीत

- 52 श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में दिया गया व्याख्यान
54 2014 में भाजपा संसदीय दल के नेता चुने जाने पर दिया गया उद्बोधन
56 2019 में राजग संसदीय दल के नेता चुने जाने पर दिया गया उद्बोधन
58 अमेरिका में 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम में दिया गया भाषण
60 लेह में भारतीय सशस्त्र बलों को संबोधित भाषण
64 अयोध्या में श्रीराम मंदिर भूमि पूजन के अवसर पर संबोधन
68 आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा के अवसर पर संबोधन

अन्य

- 70 मोदी सरकार के 70 ऐतिहासिक निर्णय
80 70 वर्षों की चित्रमय यात्रा
108 आध्यात्मिक एवं सामाजिक सक्रियता
114 वैश्विक मंच पर सम्मान
116 साहित्यकार नरेन्द्र मोदी



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक ऐसे भारत का उदय हो रहा है जिसकी आंखों में गौरव के सपने हैं, जो हर चुनौती को अवसर में बदलने को कृतसंकल्पित है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी एवं करिश्माई नेतृत्व का ही परिणाम है कि आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत आज 'आत्मनिर्भर भारत' की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है। श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आज हम ऐसा भारत देख रहे हैं जो एकजुट हो पूरे स्वाभिमान से अपने पैरों पर खड़ा है। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत के उदय का सही समय आ चुका है और पूरा राष्ट्र इसके लिए तैयार है। अब तो करोड़ों पग मां भारती की गौरवमयी यात्रा में शामिल हो जाना चाहते हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही जन-जन को ऐसा लगने लगा कि देश एक नये युग में प्रवेश कर गया है। इस नए युग को भारतीय पटल पर कार्य-आधारित, सुशासन एवं विकास की राजनीति के उदय के रूप में देखा जा सकता है। यह युग देश को 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की अवधारणा से अभिमंत्रित कर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के निर्माण का पथ प्रशस्त कर रहा है। यह युग 'अंत्योदय' की अवधारणा के प्रति समर्पित है तथा गरीब से गरीब व्यक्ति के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। देश के सर्वांगीण विकास के केंद्र में दलित, आदिवासी, पिछड़ा, महिला एवं युवा को रखकर एक सुदृढ़, समृद्ध एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण भारत के निर्माण का यह युग है। यह एक ऐसा युग है जिसकी प्राथमिकता ग्रामीण भारत है, जो उच्च तकनीक युक्त कृषि का स्वप्न देख रहा है और जिसमें किसान-मजदूर के जीवन के हर क्षेत्र को प्रकाशमान करने की क्षमता है। भविष्योन्मुखी एवं दूरदर्शी नीतियों के माध्यम से एक ऐसे भारत के निर्माण का युग है, जो हर क्षेत्र में अग्रणी हो, विकसित, समृद्ध एवं सुदृढ़ हो। श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही उस युग का आगमन हो गया, जिसमें 'नए भारत' के सपनों को साकार करने की सभी संभावनाएं विद्यमान हैं।

भाजपानीत राजग को लोकसभा चुनाव 2014 एवं 2019 में मिला जबरदस्त जनादेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व एवं अथक परिश्रम का परिणाम है। इसी कठिन परिश्रम एवं तप के बल पर कांग्रेसनीत यूपीए के शासनकाल के भ्रष्टाचार, पॉलिसी पैरालिसिस, कुशासन, आर्थिक गिरावट, कमरतोड़ महंगाई एवं निरंतर बढ़ते बजट घाटे से देश को पिछले पांच वर्षों में उबारने में श्री नरेन्द्र मोदी सफल हुए हैं। कांग्रेसनीत यूपीए के कुशासन के बीच देश को श्री नरेन्द्र मोदी के रूप में एक आशा की किरण दिखाई दी थी, जिसके परिणामस्वरूप कई दशकों के बाद जनता ने भाजपा को 2014 के लोकसभा चुनावों में पूर्ण बहुमत का जनादेश दिया था। इस जनादेश के पीछे पूरे देश की आशाएं, अपेक्षाएं एवं आकांक्षाएं जुड़ी हुई थीं। पांच वर्षों के सकारात्मक कार्य, निरंतरता एवं परिश्रम की पराकाष्ठा के साथ-साथ अभिनव योजनाएं एवं परिणामकारक नीतियों, शासन में नई कार्य-संस्कृति, संस्थाओं को पुनर्जीवन देने वाले कार्य, समयानुकूल निर्णय एवं कभी-कभी कठोर निर्णय लेने की क्षमता के फलस्वरूप आज एक ऐसी सरकार केन्द्र में है जिसकी प्रामाणिकता, विश्वसनीयता एवं कार्यक्षमता से पूरा देश गौरवान्वित हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रतिबद्धता का ही परिणाम है कि आज देश एक भ्रष्टाचारमुक्त-सरकार देख रहा है, जो देश के दूर-दराज इलाकों में भी गरीब से गरीब तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधा-सीधा पहुंचाने में सक्षम है। यह पहली बार हुआ है कि समाज की अंतिम पंक्ति में खड़ा व्यक्ति सरकारी योजनाओं का सीधा लाभार्थी बना है और पक्का आवास, बिजली कनेक्शन, गैस सिलिंडर, शौचालय, बैंक खाता और अन्य मूलभूत

श्री नरेन्द्र मोदी के अभ्युदय से भारत में नवीन ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ है, आशा एवं विश्वास का वातावरण बना है।



सुविधाओं के साथ-साथ अपने परिवार को सामाजिक सुरक्षा एवं दस करोड़ परिवारों को 5 लाख रुपए तक का स्वास्थ्य सुरक्षा प्राप्त हो पाया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि जिस प्रकार से 2014 में संसदीय दल के नेता चुने जाने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार को गरीबों, दलितों, आदिवासियों, वंचितों एवं शोषितों के प्रति समर्पित रहने की बात की थी, वे न केवल अपने बातों के लिए प्रतिबद्ध रहे, बल्कि उससे भी आगे बढ़कर सरकार को इन वर्गों के लिए समर्पित किया— इसका परिणाम सबके सामने है— 2014 से भी बड़ा जनादेश जो कि गरीब से गरीब व्यक्ति के आशीर्वाद का परिणाम है। देश की जनता ने जाति, मजहब एवं क्षेत्र की विभाजनकारी दीवारों को तोड़कर यह सुनिश्चित किया है कि भारत सुरक्षित हाथों में रहे और एक सुनहरे भविष्य का आलिंगन करे।

2019 का जबरदस्त जनादेश न केवल मोदी सरकार पर जन-जन के भारी विश्वास का परिणाम है, बल्कि विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की बढ़ती जनाकांक्षाओं के दायित्वों को निर्वहन करने का भी संदेश है। आज इस जनविश्वास का ही परिणाम है कि अनेक ऐतिहासिक निर्णयों के साथ धारा 370 को इतनी सहजता से समाप्त किया जा सका तथा भगवान श्रीराम मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ हो चुका है। एक ओर जहां कोविड-19 महामारी से विश्व के विकसित देश भी बुरी तरह प्रभावित हुए हैं, वहीं दूसरी ओर भारत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करिश्माई नेतृत्व में पूरी तरह से एकजुट है। महामारी की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 20 लाख करोड़ से भी अधिक के आत्मनिर्भर भारत आर्थिक पैकेज की घोषणा की है।

श्री नरेन्द्र मोदी के अभ्युदय से भारत में नवीन ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ है, आशा एवं विश्वास का वातावरण बना

इस वर्ष श्री नरेन्द्र मोदी अपने तेजस्वी और ओजस्वी जीवन के 70 वर्ष पूर्ण करेंगे। यह उत्सव मनाने का भी समय है और उनके जीवन तथा विचारों से प्रेरित होने का भी।

है। अद्भुत संकल्पशक्ति एवं दूरदृष्टि से परिपूर्ण श्री नरेन्द्र मोदी के मन में स्वच्छ, स्वस्थ, विकसित, सशक्त एवं आत्मनिर्भर भारत का चित्र है, एक नए भारत का स्वप्न है। उनकी स्वप्नशीलता में गौरवान्वित, विकसित एवं उदात्त भारत का विराट बिम्ब है। जहां एक ओर गरीब से गरीब के जीवन स्तर को संवेदनशीलता के साथ ऊंचा उठाने के लिए वे प्रतिबद्ध हैं, वहीं दूसरी ओर दृढ़ प्रशासक के रूप में उन्होंने निरर्थक हो चुकी प्रशासकीय रूढ़ियों को पहचाना और उन्हें समाप्त किया, एक नई कार्य-संस्कृति का सूत्रपात किया। उन्होंने भ्रष्टाचारमुक्त, सुशासनयुक्त, पारदर्शी एवं उत्तरदायी सरकार की नींव रखी।

17 सितंबर 2020 को हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री जी का पावन जन्मदिवस है। इस वर्ष वे अपने तेजस्वी और ओजस्वी जीवन के 70 वर्ष पूर्ण करेंगे। यह उत्सव मनाने का भी समय है और उनके जीवन तथा विचारों से प्रेरित होने का भी।

श्री नरेन्द्र मोदी का व्यक्तित्व इतना विराट है और उनकी उपलब्धियां इतनी वृहद हैं कि यदि केवल उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियों की चर्चा करनी हो, तब भी एक विशाल ग्रंथ की रचना करनी होगी। किसी एक अंक में तो उनकी तपोनिष्ठ उपलब्धियों को समेट पाना अत्यंत कठिन है। फिर भी, कमल संदेश टीम ने श्री नरेन्द्र मोदी के विराट व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं को अपने सुधी पाठकों के सामने लाने का एक विनम्र प्रयास किया है।

इस विशेषांक के लिए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ एवं असम के मुख्यमंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने बहुत ही कम समय में अपना आलेख देकर हमें उपकृत किया है। श्री नरेन्द्र मोदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित इस विशेषांक में उनके जीवन के कुछ पहलू, लालकिले की प्राचीर से दिए हुए उनके उद्बोधन एवं कुछ चुने हुए प्रमुख भाषणों के मुख्य अंश प्रकाशित किए गए हैं। साथ ही 70 ऐतिहासिक निर्णय, चित्रमय यात्रा, अंतरराष्ट्रीय सम्मान एवं उनके कुछ साहित्य का परिचय प्रकाशित किया गया है।

हम अपने परम आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 70वें जन्मदिवस पर प्रकाशित इस विशेषांक के माध्यम से उनका हृदय से अभिनंदन करते हैं और उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन की कामना करते हैं।

- डॉ. शिव शक्ति बक्सी

नरेन्द्र मोदी: एक परिचय





श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 मई 2019 को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली, जो उनके दूसरे कार्यकाल की शुरुआत थी। स्वतंत्रता के पश्चात् जन्म लेने वाले पहले प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पहले 2014 से 2019 तक भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाला है। इससे पूर्व उन्होंने अक्टूबर 2001 से मई 2014 तक, लंबे समय तक, गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में अपना कार्यभार संभाला है।

2014 और 2019 के संसदीय चुनावों में श्री मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने, दोनों अवसरों पर, पूर्ण बहुमत हासिल किया। आखिरी बार 1984 के चुनावों में किसी राजनीतिक दल ने पूर्ण बहुमत प्राप्त किया था।

‘सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास’ के आदर्श वाक्य से प्रेरित होकर श्री मोदी ने शासन व्यवस्था में कई परिवर्तनों की शुरुआत की और समावेशी, विकासोन्मुख और भ्रष्टाचार-मुक्त शासन का नेतृत्व किया। प्रधानमंत्री ने ‘अंत्योदय’ के उद्देश्य को साकार करने और समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए ‘स्पीड और स्केल’ पर काम किया है।



विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने इस बात को माना कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत रिकॉर्ड गति से गरीबी को खत्म कर रहा है। इसका श्रेय केंद्र सरकार द्वारा गरीबों के हित को ध्यान में रखते हुए लिए गए विभिन्न कल्याणकारी निर्णयों को जाता है।

आज भारत दुनिया के सबसे बड़े स्वास्थ्य सेवा कार्यक्रम ‘आयुष्मान भारत’ का नेतृत्व कर रहा है। 50 करोड़ से अधिक भारतीयों को कवर करते हुए ‘आयुष्मान भारत’ गरीब और नव-मध्यम वर्ग को उच्च गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित कर रहा है।

दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित स्वास्थ्य पत्रिकाओं में से एक लांसेट ने आयुष्मान भारत की सराहना करते हुए कहा है कि यह योजना भारत में स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े समस्याओं को दूर कर रही है। पत्रिका ने

सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज को प्राथमिकता देने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रयासों की भी सराहना की।

देश की बैंकिंग प्रणाली से दूर गरीबों को मुख्य वित्तीय धारा में लाने के लिए प्रधानमंत्री ने ‘प्रधानमंत्री जन धन योजना’ शुरू की, जिसका उद्देश्य प्रत्येक भारतीय का बैंक खाते खोलना था। अब तक 40.35 करोड़ से अधिक जन धन खाते खोले जा चुके हैं। इन खातों ने न केवल गरीबों को बैंक से जोड़ा, बल्कि उनके सशक्तिकरण के अन्य रास्ते भी खोले हैं।

जन-धन से एक कदम आगे बढ़ते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने समाज के सबसे कमजोर वर्गों को बीमा और पेंशन कवर देकर जन सुरक्षा पर जोर दिया। JAM ट्रिनिटी (जन धन- आधार- मोबाइल) ने बिचौलियों को समाप्त कर दिया है और प्रौद्योगिकी के माध्यम से पारदर्शिता और गति सुनिश्चित की गई है।

असंगठित क्षेत्र से जुड़े 42 करोड़ से अधिक लोगों के पास अब प्रधानमंत्री ‘श्रम योगी मान धन योजना’ के तहत पेंशन कवरेज मिली है। 2019 के चुनाव परिणामों के बाद पहली कैबिनेट बैठक के दौरान व्यापारियों के लिए इसी प्रकार की पेंशन योजना की घोषणा की गई है।

2016 में गरीबों को मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन प्रदान करने के लिए

‘प्रधानमंत्री उज्वला योजना’ शुरू की गई थी। यह योजना 8 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को धुआं मुक्त रसोई प्रदान करने में एक बड़ा कदम साबित हुई है। इसकी अधिकांश लाभार्थी महिलाएं हैं।

आजादी के बाद से 70 वर्षों के बाद भी 18,000 गांव बिना जहां बिजली नहीं थी वहां बिजली पहुंचाई गई है।

श्री मोदी का मानना है कि कोई भी भारतीय बेघर नहीं होना चाहिए और इस ‘विजन’ को साकार करने के लिए 2014 से 2019 के बीच 1.25 करोड़ से अधिक घर बनाए गए हैं। 2022 तक प्रधानमंत्री के ‘हाउसिंग फॉर ऑल’ के सपने को पूरा करने के लिए घर के निर्माण की गति में तेजी आई है।

कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जो श्री नरेन्द्र मोदी के बहुत करीब है। 2019



के अंतरिम बजट के दौरान सरकार ने किसानों के लिए 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' के रूप में एक मौद्रिक प्रोत्साहन योजना की घोषणा की। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूसरे कार्यकाल की पहली कैबिनेट बैठक के दौरान इस योजना में 5 एकड़ की सीमा को हटाते हुए सभी किसानों को 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' का लाभ देने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही भारत सरकार प्रति वर्ष लगभग 90,000 करोड़ रुपये किसान कल्याण के लिए समर्पित करेगी।

श्री नरेन्द्र मोदी ने सॉयल हेल्थ कार्ड, बेहतर बाजारों के लिए ई-नाम और सिंचाई पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने जैसी किसान कल्याण की दिशा में विभिन्न पहल शुरू की। 30 मई 2019 को प्रधानमंत्री ने जल संसाधनों से संबंधित सभी पहलुओं की देखरेख करने के लिए एक नया 'जल शक्ति मंत्रालय' बनाकर एक बड़ा वादा पूरा किया।

2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की जयंती पर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पूरे देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए 'स्वच्छ भारत मिशन' शुरू किया। इस जन आंदोलन का बड़े पैमाने पर दूरगामी प्रभाव पड़ा है। 2014 में स्वच्छता कवरेज 38% थी जो आज बढ़कर 99% हो गई है। पूरे देश



को खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) घोषित किया गया है। स्वच्छ गंगा के लिए पर्याप्त उपाय किए गए हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 'स्वच्छ भारत मिशन' की सराहना की और कहा कि इससे लाखों लोगों की जान बच सकती है।

श्री मोदी का मानना है कि परिवहन परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन है। इसीलिए भारत सरकार हाई-वे, रेलवे, आई-वे और वाटर-वे के रूप में अगली पीढ़ी के आधारभूत ढांचे को बनाने के लिए काम कर रही है। UDAN (उड़े देश के आम नागरिक) योजना ने उड़ान क्षेत्र को लोगों के अधिक अनुकूल बनाया है और 'कनेक्टिविटी' को बढ़ावा दिया है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारत को अंतरराष्ट्रीय विनिर्माण पॉवर हाऊस में बदलने के लिए 'मेक इन इंडिया' पहल शुरू की। इस प्रयास से परिवर्तनकारी परिणाम सामने आए हैं। भारत ने 'ईज ऑफ डूइंग

बिजनेस' में महत्वपूर्ण प्रगति की है, 2014 में भारत की रैंकिंग 142 थी जो 2019 में 63 हो गई है। 2017 में संसद के एक ऐतिहासिक सत्र के दौरान भारत सरकार ने 'जीएसटी' लागू किया, जिसने 'वन नेशन, वन टैक्स' के सपने को साकार किया।

उनके कार्यकाल में भारत के समृद्ध इतिहास और संस्कृति पर विशेष ध्यान दिया गया। श्रीराम मंदिर का शिलान्यास उनके हाथों होकर अब निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ है। भारत में दुनिया की सबसे बड़ी मूर्ति 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' बनाया गया जो सरदार पटेल को एक सच्ची श्रद्धांजलि है। इस स्टैच्यू को एक विशेष जन आंदोलन के माध्यम से बनाया गया था, जिसमें भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के किसानों के औजार और मिट्टी का इस्तेमाल किया गया था, जो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को दर्शाता है। धारा 370 की समाप्ति, तीन तलाक पर कड़े कानून एवं नागरिकता संशोधन अधिनियम जैसे

ऐतिहासिक निर्णय लेकर उन्होंने पूरे राष्ट्र में नवीन ऊर्जा का संचार किया है।

प्रधानमंत्री को पर्यावरण से जुड़े मुद्दों से गहरा लगाव है। उन्होंने हमेशा से माना है कि हमें एक स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त ग्रह बनाने के लिए काम करना चाहिए। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में श्री मोदी ने जलवायु परिवर्तन के

अभिनव समाधान तैयार करने के लिए अलग जलवायु परिवर्तन विभाग बनाया। इस भावना को पेरिस में 2015 के COP21 शिखर सम्मेलन में भी देखा गया था जहां श्री मोदी ने पर्यावरण से जुड़े मुद्दों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

जलवायु परिवर्तन से एक कदम आगे बढ़कर श्री नरेन्द्र मोदी ने जलवायु न्याय के बारे में बात की है। 2018 में 'अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन' के शुभारंभ के लिए कई देशों के राष्ट्राध्यक्ष भारत आए थे। यह गठबंधन एक बेहतर ग्रह के लिए सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने का एक अभिनव प्रयास है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके प्रयासों को स्वीकार करते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी को संयुक्त राष्ट्र के 'चैपियंस ऑफ अर्थ अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

जलवायु परिवर्तन ने हमारे ग्रह को प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त कर



दिया है, इस तथ्य के प्रति पूरी तरह से संवेदनशील होते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रौद्योगिकी की शक्ति और मानव संसाधनों की ताकत के उचित उपयोग के रूप में आपदा के लिए एक नया विजन साझा किया है। मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने 26 जनवरी 2001 को विनाशकारी भूकंप से तबाह हुए गुजरात को पुनः परिवर्तित कर दिया। इसी तरह उन्होंने गुजरात में बाढ़ और सूखे से निपटने के लिए नई प्रणालियों की शुरुआत की, जिनकी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा हुई।

प्रशासनिक सुधारों के माध्यम से श्री मोदी ने नागरिकों के लिए न्याय को हमेशा प्राथमिकता दी है। गुजरात में लोगों की समस्याओं को हल करने के लिए उन्होंने शाम की अदालतों की शुरुआत की। केंद्र में उन्होंने PRAGATI (प्रो-एक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन) शुरू किया, जो विकास में देरी कर रहे लंबित परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने के लिए एक कदम है।

श्री नरेन्द्र मोदी की विदेश नीति की पहल ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की वास्तविक क्षमता और भूमिका को महसूस किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सार्क देशों के सभी प्रमुखों की उपस्थिति में अपना पहला कार्यकाल शुरू किया और दूसरे की शुरुआत में बिम्सटेक नेताओं को आमंत्रित किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा में उनके संबोधन की दुनिया भर में सराहना हुई। श्री मोदी 17 साल



की लंबी अवधि के बाद नेपाल, 28 साल के बाद ऑस्ट्रेलिया, 31 साल के बाद फिजी और 34 साल के बाद सेशेल्स और यूएई के द्विपक्षीय दौर पर जाने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने। पदभार संभालने के बाद से श्री मोदी ने UN, BRICS, SAARC और G-20 समिट में भाग लिया, जहां विभिन्न वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर भारत के विचारों को व्यापक रूप से सराहा गया।

प्रधानमंत्री को सऊदी अरब के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'किंग अब्दुलअजीज सैश' से सम्मानित किया गया। श्री मोदी को रूस के शीर्ष सम्मान 'द ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टले सम्मान', फिलिस्तीन के 'ग्रैंड कॉलर ऑफ द स्टेट ऑफ फिलिस्तीन' सम्मान, अफगानिस्तान के 'अमीर अमानुल्ला खान अवॉर्ड', यूएई के 'जायेद मेडल' और मालदीव के 'निशान इज्जुद्दीन' सम्मान से सम्मानित किया गया है। 2018 में प्रधानमंत्री श्री मोदी को शांति और विकास में उनके

योगदान के लिए प्रतिष्ठित 'सियोल शांति पुरस्कार' दिया गया।

'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' मनाने के श्री नरेन्द्र मोदी के आग्रह का संयुक्त राष्ट्र में स्वागत हुआ। दुनिया भर में कुल 177 राष्ट्रों ने एक साथ मिलकर 21 जून को संयुक्त राष्ट्र में 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया।

श्री नरेन्द्र मोदी का जन्म 17 सितंबर 1950 को गुजरात के एक छोटे से शहर में हुआ था। वे 'अति पिछड़ा वर्ग' परिवार से आते हैं, जो समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों में से है। वह बेहद गरीब, लेकिन प्यार देने वाले परिवार में पले-बढ़े। जीवन की शुरुआती कठिनाइयों ने न केवल कड़ी मेहनत के मूल्य को सिखाया बल्कि उन्हें आम लोगों के कष्टों से भी अवगत कराया। आम जन की गरीबी ने उन्हें बहुत कम उम्र में ही लोगों और राष्ट्र की सेवा में डूबने के लिए प्रेरित किया। अपने प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ काम किया,

और बाद में राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर भारतीय जनता पार्टी के संगठन में काम करते हुए स्वयं को राजनीति में समर्पित किया। श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एमए पूरा किया है।

श्री नरेन्द्र मोदी जन-जन के नेता हैं और वे आमजन की समस्याओं को हल करने और उनके जीवन स्तर में सुधार करने के लिए समर्पित हैं। लोगों के बीच रहने, उनके साथ खुशियां

साझा करने और उनके दुःखों को दूर करने से अधिक कुछ भी उनके लिए संतोषजनक नहीं है। जमीनी स्तर पर तो उनका लोगों के साथ एक मजबूत व्यक्तिगत जुड़ाव तो है ही, साथ ही साथ सोशल मीडिया पर भी उनकी मजबूत उपस्थिति है। उन्हें भारत के सबसे अधिक टेक्नो सैवी नेता के रूप में भी जाना जाता है। वो लोगों तक पहुंचने और उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। वह फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, साउंड क्लाउड, लिंकिडन, वीबो और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर बहुत सक्रिय है।

राजनीति से परे श्री नरेन्द्र मोदी को लिखना पसंद है। उन्होंने कई कविता और कई किताबें लिखी हैं। वह अपने दिन की शुरुआत योग से करते हैं। दिनभर के अपने व्यस्त कार्यक्रमों में अथक कार्य करते हुए वे राष्ट्र को नित नवीन ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए कृतसंकल्पित हैं। ■

स्रोत : narendramodi.in

विशेष लेख



अनुक्रम

- 12 मोदी हैं, तो भरोसा है / जगत प्रकाश नड्डा
- 16 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के शिल्पकार / योगी आदित्यनाथ
- 18 विकसित भारत का वैश्विक चेहरा / सर्बानंद सोनोवाल

मोदी हैं, तो भरोसा है



जगत प्रकाश नड्डा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आज विश्वास और उम्मीद के प्रतीक हैं। उनके नेतृत्व में भारत आंतरिक मोर्चे, अंतरराष्ट्रीय मंच और आम जन के विषयों पर दृढ़ विश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। जिन

संकल्पों को लेकर भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई थी, जिन विषयों पर पार्टी अपने स्थापना काल से मुखर और सक्रिय रही और जिन कार्यों को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल

उपाध्याय से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी जी जैसे मनीषियों ने आगे बढ़ाया, पार्टी के कोटि-कोटि कार्यकर्ताओं ने जिन अभियानों को देश के आम जन तक पहुंचाया और जो संकल्प भारत को विश्वगुरु बनाने तथा समृद्ध, सुरक्षित और आत्मनिर्भर भारत बनाने हेतु लिए गए उन संकल्पों को देश मोदी जी के नेतृत्व में आज साकार होते देख रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में इन छह सालों में देश के नागरिकों में गर्व और स्वाभिमान का संचार हुआ। अखिल विश्व में भारत के प्रति देखने और सोचने का नजरिया बदला। 'सवा सौ करोड़ देशवासी' शब्द हमारी क्षमता और गौरवबोध के संबल बने। नेतृत्व सक्षम हो तो वही परंपरागत तंत्र उच्च मनोबल के साथ राष्ट्र निर्माण

प्रधानमंत्री श्री मोदी के रूप में प्रधान सेवक ने देश को विश्वास दिलाया कि यह जनतंत्र है जहां जनता ही जनार्दन है। सत्ता की कुर्सी सेवा के लिए है। देश की जनता प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में जिस अटूट विश्वास को जताती रही है, प्रधानमंत्री जी ने भी उन आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को स्पर्श करने का निरंतर प्रयास किया है।

में योगदान देने को आतुर रहता है। प्रधानमंत्री मोदी जी में आम नागरिक ने अपने जीवन की खुशहाली का समाधान देखा। उनके हर वाक्य को मंत्र माना। उनके हर अभियान में देश स्वतः स्फूर्त भागीदार बना। देश के प्रधानमंत्री के प्रति यह भाव व सम्मान होना देश और नागरिकों का सम्मान है, लोकतंत्र का सम्मान है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के रूप में प्रधान





सेवक ने देश को विश्वास दिलाया कि यह जनतंत्र है जहां जनता ही जनार्दन है। सत्ता की कुर्सी सेवा के लिए है। देश की जनता प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में जिस अटूट विश्वास को जताती रही है, प्रधानमंत्री जी ने भी उन आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को स्पर्श करने का निरंतर प्रयास किया है।



प्रधानमंत्री

जी का ही नेतृत्व है कि हर देशवासी उनके नेतृत्व में देश के प्रति अपने हर योगदान के लिए तत्पर रहता है। हमारे पड़ोसियों से सम्बन्ध जिन पूर्व की नीतियों और निर्णयों के कारण चले आ रहे थे। उन्हें प्रगाढ़ करने के प्रधानमंत्री जी के प्रयासों को देश जानता है। दो कदम आगे बढ़कर हाथ मिलाने और विश्वास करने का वातावरण भारत ने पूरे विश्व के सामने दिखाया। श्रद्धेय अटल जी के अमर वाक्य 'मित्र बदले जा सकते हैं, पड़ोसी नहीं' की दृष्टि से अपने पड़ोसियों से मित्रता को जीवंत करने के प्रयास ही नहीं किए, बल्कि पूरा विश्व गवाह है कि भारत किस तरह आत्मीयता और सम्मान से अपने संबंधों के प्रति आग्रही रहता है। पाकिस्तान की दशकों पुरानी नीति पर भारत का पुराना रवैया और वर्तमान तेवर पाकिस्तान देख चुका है। आज चीन के साथ सीमा पर बनी

स्थिति में देश मोदी जी के नेतृत्व में अटूट विश्वास रखते हुए भरोसा करता है, जिससे

आत्मबल लेकर चल रहा है, जहां नागरिक और राष्ट्रहित से समझौता नहीं होता है। यह मनोबल प्रधानमंत्री मोदीजी ने देश को दिया है।

'गरीबी' और 'आम जनता' अभी तक पोस्टरो और नारों में स्थायी भाव के साथ मौजूद थे। मोदी जी ने उनकी चिंताओं के समाधान को धरातल पर उतारा। सरकार के वायदों पर टकटकी लगाकर प्रतीक्षा करने वाले देश के

आम जन को विश्वास दिलाया कि उनकी सरकार उन्हीं की सेवा हेतु कृतसंकल्प है। आज देश के नागरिक सरकार की योजनाओं का लाभ ले रहे हैं। योजनाएं उनके जीवन के हर पहलू को स्पर्श कर रही हैं और पारदर्शी रूप में उनके पास चलकर आ रही हैं। समाज के हर वर्ग का अपनी सरकार के प्रति आदर भाव होना बताता है कि सरकार ने लोकतंत्र में लोक के सम्मान का भाव उत्पन्न किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कालखंड में गरीब को ध्यान में रखकर बनी योजना और नीति प्रत्यक्ष रूप से गरीब की सेवा कर रही है। उनके सम्मान, भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास, रोजगार जैसे मूलभूत विषयों का मोदी सरकार द्वारा समाधान हो रहा है। शौचालय जैसे आवश्यक किंतु उपेक्षित विषय पर लाल किले की प्राचीर से चिंता जता कर मोदी

जन-धन खाते, रोजगार, आवास योजना, उज्ज्वला योजना, किसान सम्मान निधि और आयुष्मान भारत जैसे विषय बताते हैं कि सत्ता सुख भोगने या पीढ़ियों को उपकृत करने का साधन नहीं है। लीक से हटकर मोदी जी ने 'टू द पीपल, फ़ॉर द पीपल, बाय द पीपल' के विचार को सार्थक किया। आम जन को सरकार की उपयोगिता, सरकार के निर्णय और स्वयं नागरिक होने की जिम्मेदारी के बोध होने और राष्ट्रीय अभियानों में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करने का वातावरण बनाया।

कि देश का सबसे प्रभावी और मजबूत स्टैंड आज चीन के सामने दिख रहा है जिसने बराबरी के साथ पड़ोसी को एहसास कराया कि नया भारत स्वाभिमान से जीने का



जी ने पूर्व की परंपरा ही नहीं तोड़ी, बल्कि अहसास दिलाया कि राष्ट्र के संबोधन में केवल भारी भरकम विषयों और अलंकारों से कहने के बजाय धरातल की सच्चाई पर चर्चा होनी चाहिये और उसे साकार करने का संकल्प ऐसे महत्वपूर्ण अवसरों पर लेना चाहिये।

जन-धन खाते, रोजगार, आवास योजना, उज्ज्वला योजना, किसान सम्मान निधि और आयुष्मान भारत जैसे विषय बताते हैं कि सत्ता सुख भोगने या पीढ़ियों को उपकृत करने का साधन नहीं है। लीक से हटकर मोदी जी ने 'टू द पीपल, फ़ॉर द पीपल, बाय द पीपल' के विचार को सार्थक किया। आमजन को सरकार की उपयोगिता, सरकार के निर्णय और स्वयं नागरिक होने की जिम्मेदारी के बोध होने और राष्ट्रीय अभियानों में नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित करने का वातावरण बनाया।

पूर्व में दलों द्वारा सत्ता को स्थायी बनाए रखने के उपक्रम इस देश में चले। वोट बैंक के खेल के माइंडसेट से बाहर निकल कर देश के लिए सोचने का नजरिया प्रधानमंत्री मोदी जी का ब्लूप्रिंट है, जिसमें गरीब, जरूरतमंद की चिंता प्राथमिक है। लोकतंत्र में विकास के अवसर क्षेत्र, वर्ग या व्यक्ति के आधार पर न होकर आवश्यकता के आधार पर होंगे। यह नजरिया आज सिस्टम में भी विकसित हुआ है। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटाकर इसी विचार को पुष्ट किया गया है कि देश के सभी नागरिक और क्षेत्र समान हैं। सबका विकास समान अधिकारों के

साथ होगा। हमारे पूज्य डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इसी विचार के लिए बलिदान दिया। अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनने का सपना भी मोदी सरकार में ही मुमकिन



वोकल फॉर लोकल का अभियान शुरू कर प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत को एक नई दिशा दी। मोदी हैं तो भरोसा है, यह भाव प्रधानमंत्री जी ने अचानक पैदा नहीं किया। 2014 की परिस्थितियां याद करें, तब देश केवल भ्रष्टाचार की चर्चाओं और अवसाद की स्थिति में घिरा था। प्रधानमंत्री मोदीजी ने इन परिस्थितियों से देश को उबारा ही नहीं बल्कि सकारात्मक मनोबल भी दिया।

हुआ। मुस्लिम बहनों के लिए तीन तलाक जैसा अपमानजनक विषय इसलिए समाप्त किया गया कि किसी समाज की आधी आबादी को किसी प्रथा से पीड़ित नहीं किया जा सकता। आजादी के बाद से ही सरकारों ने सरकारी सिस्टम को अपने निजी हितों को साधने और अपने सांचे में ढाल कर जिस तरह पिंजरे में बंद रखा था, आज वही तंत्र देश के आमजन के लिए जवाबदेह और दायित्वशील होकर विकास की नई इबारत लिख रहा है। यह सोच प्रधानमंत्री मोदीजी

द्वारा सिस्टम को दिया गया नया नजरिया आज हमें उसके कामकाज में दिखाई दे रहा है।

प्रधानमंत्री जी ने सदैव अपने संबोधन में एक सौ पच्चीस करोड़ देशवासियों को देश की तकदीर बदलने वाला साधन और संसाधन माना। अभी तक जिसे भीड़ की संज्ञा और बढ़ती आबादी को सभी दिक्कतों की जड़ माना जाता था उसे नया नजरिया देकर प्रधानमंत्री जी ने उसे नए मायने दिए 'अगर हम उपभोक्ता हैं तो उत्पादक क्यों नहीं।' हमारी बाहरी

देशों व तकनीकी पर निर्भरता बदलने का काम प्रधानमंत्री जी ने किया। मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया जैसे अभियान देश की धमनियों में विकास रोजगार का संचार करने वाले साबित हुए। यही कारण है कि प्रधानमंत्री जी के संबोधन में देश को हर बार नई उम्मीद और ऊर्जा का संचार होता है देश उनके अभियान में स्वतः सम्मिलित हो जाता है। उनके प्रेरक अभियान देश को नया भारत बनाने के लिए है। पिछले 6 वर्षों में देश ने वे सभी बदलाव अनुभव किए हैं। जीवन के हर पहलू को स्पर्श करती प्रधानमंत्री मोदीजी की सोच और दर्शन उन्हें देश के भरोसे का प्रतीक बनाती है।

एक अत्यंत निर्धन पृष्ठभूमि से आने वाले प्रधानमंत्री मोदीजी ने एक नागरिक के रूप में जिन अनुभवों का जीवन में साक्षात्कार किया, वह उनके चिंतन का स्थायी उत्प्रेरक है जिन्हें वे हर योजना, विचार और कार्यक्रम में प्रमुखता से स्थान



देते हैं। आम आदमी उनकी इसी मौलिकता में अपनी निकटता देखता है। शौचालय एक महिला की निजी जिंदगी में कितना महत्वपूर्ण है, उस पर संवेदनशीलता की पराकाष्ठा तक जाकर सोचना और धरातल पर उसके समाधान को उतारने का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम लाना दुरूह कार्य था, जो जन-आंदोलन बन गया। शौचालय न होने पर किसी महिला की विवशता का जिक्र उनके अनेक संबोधनों में मिलता है। ईंधन की व्यवस्था एक नारी की दिनचर्या का जरूरी और समय खपाने वाला हिस्सा था, जिसका समाधान उज्ज्वला योजना के रूप में एक महाभियान बन

गया। प्रधानमंत्री मोदीजी द्वारा बेटियों की शिक्षा, स्वरोजगार, सुरक्षा और मातृत्व से लेकर वृद्धावस्था तक हर जगह सरकार की योजना का संबल देना बताता है कि पदों पर संवेदनशील व्यक्ति के बैठने पर किस तरह समाज को प्रत्यक्ष लाभ मिलता है।

वैश्विक महामारी कोरोना पूरे विश्व को प्रभावित किया है। समाज और जीवन के हर क्षेत्र पर इसका असर पड़ा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है। कोरोना के कारण देशवासियों का जनजीवन भी प्रभावित हुआ है। विश्वभर में भय और निराशा का वातावरण बना, किंतु भारत ने इन परिस्थितियों का डटकर मुकाबला

किया। देश के 80 करोड़ लोगों को मार्च से नवंबर तक के लिए मुफ्त राशन की व्यवस्था की गई। 1.70 लाख करोड़ रुपये

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के छह वर्षों के कार्यकाल में देश की जनता को आजादी के बाद पहली बार इस बात की अनुभूति हुई है कि गरीबों के लिए काम करने वाली सरकार कैसी होती है, देश को आगे ले जाने वाली सरकार कैसी होती है और देश के प्रति दुनिया के नजरिये में बदलाव लाने वाली सरकार कैसी होती है।

की प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, 20 लाख करोड़ रुपये की निधि से आत्मनिर्भर भारत अभियान की शुरुआत की गई। गरीबों को रोजगार देने के लिए प्रधानमंत्री गरीब रोजगार योजना की शुरुआत की गई। एग्रीकल्चर इंफ्रास्ट्रक्चर को दुरुस्त करने के लिए एक लाख करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई। वोकल फॉर लोकल का अभियान शुरू कर प्रधानमंत्री जी ने आत्मनिर्भर भारत को एक नई दिशा दी। मोदी हैं, तो भरोसा है, यह भाव प्रधानमंत्री जी ने अचानक पैदा नहीं किया। 2014 की परिस्थितियां याद करें, तब देश केवल भ्रष्टाचार की चर्चाओं और अवसाद की स्थिति में घिरा था।

प्रधानमंत्री मोदीजी ने इन परिस्थितियों से देश को उबारा ही नहीं बल्कि सकारात्मक मनोबल भी दिया।

कोरोना काल से पहले देश में वेंटिलेटर्स की अपेक्षित संख्या नहीं थी, हमारे स्वास्थ्य ढांचे का तंत्र वैश्विक महामारी से निपटने में सक्षम नहीं था। मास्क और सैनिटाइजर पर भी हमारी लगभग बाहरी निर्भरता थी। लॉकडाउन जैसे ऐतिहासिक निर्णय के समय संक्रमण को रोककर हमने अपने स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत ही नहीं किया, बल्कि सैनिटाइजर और मास्क के उत्पादन से इस कोरोना काल में लघु उद्यम भी खड़ा किया और हमारी बाहरी निर्भरता भी समाप्त हुई। आज हम पीपीई, किट, फेस कवर और वेंटीलेटर्स निर्यात कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के छह वर्षों के कार्यकाल में देश की जनता को आजादी के बाद पहली बार इस बात की अनुभूति हुई है कि गरीबों के लिए काम करने वाली सरकार कैसी होती है, देश को आगे ले जाने वाली सरकार कैसी होती है और देश के प्रति दुनिया के नजरिये में बदलाव लाने वाली सरकार कैसी होती है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं)

जनसंघ और भाजपा के जन्म का मूलतः उद्देश्य यही था कि हमारा देश सुखी और समृद्ध कैसे बने। इसी मूल प्रेरणा के साथ, भारतीयता की प्रेरणा के साथ, सेवा-भावना के साथ हमलोग राजनीति में आए। हमलोगों ने राजनीति में सत्ता को सेवा का माध्यम माना, हमने कभी भी सत्ता को अपने लाभ का माध्यम नहीं बनाया। निःस्वार्थ सेवा ही हमारा संकल्प रहा है, हमारे संस्कार रहे हैं! हमारे यहां कहा जाता है—

‘यथा यथा स तुष्येत, तथा संतोषयेत् तु तम्’

अर्थात्, जिसकी हम सेवा करते हैं, उसका सुख ही हमारा संतोष है।

—श्री नरेन्द्र मोदी, ‘सेवा ही संगठन’ कार्यक्रम, 4 जुलाई 2020

‘एक भारत—श्रेष्ठ भारत’ के शिल्पकार



योगी आदित्यनाथ

ना यको यस्य राष्ट्रस्य धृतिमान्
मतिमान् भवेत्।

उन्नतिस्तस्य राष्ट्रस्य जायते नात्र
संशयः ॥

अर्थात् जिस राष्ट्र का नायक धैर्यशाली, बुद्धिमान होता है, उस राष्ट्र की सदैव उन्नति होती है, इसमें संशय नहीं है।

उक्त भावनाओं को समेकित रूप में देखना है तो भारत के मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का व्यक्तित्व इसमें स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। राष्ट्रभावों से ओतप्रोत, मां भारती के प्रति समर्पण की प्रतिमूर्ति, जनगण के मर्म को सम्मान देने वाले जननायक, मातृशक्ति और मातृभूमि के अगाध श्रद्धाभाव सम्पन्न प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन, उनके विचार और उनके संकल्प का ही परिणाम है कि जो राष्ट्र पिछले 70 वर्षों से बहुत लोकाचारों के तटबंधों के बीच ठहरा हुआ था, वह अब ‘एक भारत — श्रेष्ठ भारत’ बनकर सम्पूर्ण विश्व हर कदम पर उसकी तरफ देखने के लिए विवश है।

‘जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी’ के भाव को प्रधानमंत्री मोदीजी ने न केवल अपनाया

बल्कि दोनों के प्रति अपने कर्तव्यों का पवित्रता के साथ निर्वहन भी किया। ‘बेटी बचाओ— बेटी पढ़ाओ’ के माध्यम से बेटियों के न केवल अस्तित्व और सुरक्षा को सुनिश्चित किया बल्कि उन्हें सामाजिक और वित्तीय रूप से सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाने का सत्कार्य भी किया। 2014 के पहले मातृ शक्ति के सम्मान की सिर्फ बातें होती थीं। स्वच्छ भारत अभियान ने उनके उस मान की रक्षा ही नहीं की बल्कि नारी गरिमा की रक्षा के साथ ही बालिकाओं के स्कूल ड्रॉप रेट



को रोककर उन्हें शिक्षित और कुशल बनाया ताकि वे अपने स्वाभिमान की रक्षा स्वयं कर सकें। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना ने मातृशक्ति को न केवल कार्बनजनित बीमारियों से बचाया बल्कि उन्हें सामाजिक गौरव की अनुभूति भी करायी। इसके अतिरिक्त प्रधानमंत्री धनलक्ष्मी योजना, प्री सिलाई योजना, बालिका अनुदान योजना, विद्या लक्ष्मी शिक्षा ऋण योजना और

प्रधानमंत्री श्री मातृवंदना योजना जैसी बहुत सी योजनाएं हैं जो मातृशक्ति को कुशल, प्रतिस्पर्धी, आत्मनिर्भर और सशक्त बनाकर नारी शक्ति को राष्ट्रशक्ति का पूरक बनाने में समर्थ हैं।

आजादी के पहले से ही हमारे राष्ट्रनायक अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति की बात करते आए हैं। लेकिन आजादी के 70 वर्षों में इसे कोई भी जमीन पर नहीं उतार पाया किन्तु प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इसे जमीन पर उतारा भी और उसकी अनुभूति भी करायी।

जनधन जैसी योजनाओं ने जब इस अंतिम व्यक्ति को राष्ट्र की वित्तीय व्यवस्था से सीधे जुड़ने का अवसर दिया तो पहली बार उसे यह अनुभूति हुई कि राष्ट्र के बैंक उनके लिए हैं और वह राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की एक इकाई है। इससे भी महान कार्य है भारत के जन के भाव को समझना और उसे राष्ट्रभाव से जोड़ना। जनोत्थान को राष्ट्रोत्थान की थाती बनाना। सभी को एक प्रकार से और एक जैसा सोचने के लिए प्रेरित करना। अंत्योदय

को राष्ट्रोदय के सांचे में ढालना। यह सिर्फ मोदी जी ही कर सकते थे। सच में, महाकुंभ के समय गंगा के तट पर जब वे उन स्वच्छताकर्मियों, जिनसे जनसामान्य भी दूरी बनाए रखता है, के पांव पखार रहे थे तो सही अर्थों में वे अंत्योदय से राष्ट्रोदय तक की भारत की यात्रा को सम्पन्न कर रहे थे।

प्रधानमंत्री मोदीजी आज के युग में



राष्ट्रनीति के प्रतिबिम्ब हैं। उनकी दूरदृष्टि राष्ट्र को जीवंत और समर्थ बनाती है। कोरोना की महामारी में आज हम जिन वजहों से स्वयं को बचाने में सफल हो रहे हैं, उन्हें प्रधानमंत्री ने आज से 5-6 वर्ष पहले ही अपनाने के लिए प्रेरित किया था। कोरोना महामारी में सबसे कारगर मंत्र स्वच्छता का है, जबकि प्रधानमंत्री जी ने 02 अक्टूबर 2014 में ही इसे अभियान के रूप में शुरू कर दिया था। कोरोना काल में शिक्षा से लेकर व्यवस्था तक और चिकित्सा से लेकर अध्यात्म तक का सबसे सशक्त माध्यम वर्चुअल प्लेटफार्म साबित हुआ। जबकि प्रधानमंत्री जी ने 6 साल पहले ही डिजिटल इंडिया की सशक्त नींव रख दी थी। प्रधानमंत्री जी ने भारत के प्रत्येक जन के मन को छुआ और उसकी आवश्यकताओं को ही नहीं बल्कि आकांक्षाओं को भी ध्यान में रखते हुए योजनाएं शुरू कीं। आज जब वे अपने जीवन के 70 वर्ष पूरे कर रहे हैं उन्हें भारत को 70 से अधिक ऐसी योजनाएं देने का श्रेय जाता है जो भारत के जनगण के साथ-साथ भारत राष्ट्र के उन्नयन का इतिहास लिख रही हैं।

2014 से पहले दो विशिष्ट विचारधाराओं ने एकेडमीशिया पर कब्जा कर रखा था। इसके चलते भारत अपने मूल चरित्र से लम्बे समय तक वंचित रहा। इस कारण से वैश्विक मंचों पर भारत की साख घटी और वैश्विक वैचारिकी में भारत के लिए सॉफ्ट स्टेट यानी कायर राज्य जैसे शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने कर्मठता, अपने व्यक्तित्व के प्रभाव, अपने विचारों और कूटनीतिक क्षमता से भारत राष्ट्र और उसके 135 करोड़ लोगों के मान और सम्मान को पुनर्प्रतिष्ठित किया। जो अमेरिका कभी उन्हें वीजा देने से ऐतराज कर रहा था उसी अमेरिका ने टाइम्स स्क्वायर पर प्रधानमंत्री जी के स्वागत को देखा और भारत की जीवंत शक्ति को भी। उसी अमेरिका ने हाउडी मोदी कार्यक्रम में भारत को एक विजेता के रूप में देखा, जहां दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्र के राष्ट्रपति को भारत के प्रधानमंत्री के साथ

कदम से कदम मिलाकर चलते हुए देखा गया। प्रधानमंत्री ने पड़ोसी प्रथम नीति के जरिए भारत के पड़ोसी राज्यों को वह सम्मान दिया जिसके वे हकदार थे और वर्षों से उसकी अपेक्षा करते आए थे। हमारी एक्ट ईस्ट और पीवोट टू वेस्ट ने पूरब और पश्चिम के बीच एक महान सेतु का काम किया। इसी का परिणाम है कि जिस ओआईसी ने भारत को पाकिस्तान के दबाव में आमंत्रण तक नहीं दिया था उसी ओआईसी ने पाकिस्तान को दरकिनार कर भारत के लिए पलक पांवड़े बिछाए।

कई अरब देशों द्वारा प्रधानमंत्री जी को सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिया गया जो यह बताता है कि प्रधानमंत्री सार्वभौम एवं सर्वस्वीकार्य व्यक्तित्व हैं। आज के दिन दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं है जो भारत से जुड़ना नहीं चाहता, जो भारत के साथ मिलकर चलना नहीं चाहता और जो भारत के साथ नयी विश्वव्यवस्था में नवनिर्माणों को सम्पन्न नहीं करना चाहता। इसका श्रेय सिर्फ प्रधानमंत्री को जाता है, यह उन्हीं के व्यक्तित्व और कृतित्व के कारण ही संभव हुआ है।

अयोध्या और कश्मीर दो ऐसे विषय हैं जो पूरे भारतीय जनमानस के मन को प्रायः कचोटते थे। अयोध्या सही अर्थों में लगभग 500 वर्षों से गुलामी जैसा अभिशाप झेल रही थी। भगवान श्रीराम के जन्मस्थान को मुक्त कराने के लिए हिन्दू समाज प्राणों की आहुतियां देता चला आ रहा था। 5 अगस्त 2020 को जब प्रधानमंत्री ने श्रीराम मंदिर की नींव रखी तो ऐसा लगा कि ऋषियों, यतियों और योगियों द्वारा किया जाने वाला राष्ट्रयज्ञ सम्पन्न हुआ। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 370 दशकों से भारतीय मानस को आहत करता था क्योंकि इसके रहते 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना अधूरी थी। प्रधानमंत्री ने अपने दृढ़संकल्प और अपनी प्रबल राजनीतिक इच्छा से इसे हटाकर राष्ट्रनायक श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 'एक निशान, एक विधान, एक प्रधान' के संकल्प को साकार किया।

वैश्विक महामारी कोरोना की विभीषिका के

सम्मुख जब अनेक विकसित राष्ट्र पूरी तरह से पस्त थे उस दुस्साध्य कालखण्ड में प्रधानमंत्री श्री मोदी की दूरदर्शिता, कुशल नियोजन तथा बड़े और कड़े निर्णय लेने की क्षमता के कारण ही आज 'जान और जहान' दोनों सुरक्षित हैं।

आजादी के बाद के लम्बे कालखण्ड में भारत कुछ लोकाचारों से मुक्त नहीं हो पाया था, जिसमें सबसे बड़ा पक्ष था अर्थव्यवस्था के साथ नये एवं अन्वेषी आयामों का न जुड़ पाना। प्रधानमंत्री ने जनधन योजना के माध्यम से वित्तीय समावेशन की नींव रखी, डिजिटल इण्डिया के द्वारा अर्थव्यवस्था को अनौपचारिक से औपचारिक अर्थव्यवस्था में बदला और साथ ही भारत को टैक्नोलॉजिकल कोऑपरेटिव फेडरलिज्म के सांचे में ढाला। जीएसटी के साथ ही भारतीय अर्थव्यवस्था में एक नए युग की शुरुआत हुई और 'वन टैक्स वन नेशन' के साथ ही आर्थिक कड़ियां मजबूत हुईं और भारत एक प्रतिस्पर्धी, टैक्नोलॉजिकल और स्किल्ड राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ा।

यह मेरा सौभाग्य है कि शुचिता, संस्कार, संवेदना और सेवा की समृद्ध परम्परा के जाज्वल्यमान प्रतीक पुरुष आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और मार्गदर्शन में हमें जनसेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' के शिल्पकार आदरणीय प्रधानमंत्री जी का सान्निध्य हमें आजीवन ऐसे ही प्राप्त होता रहे। लक्ष्य अंत्योदय, प्रण अंत्योदय, पथ अंत्योदय का संकल्प सुफलित हो रहा है, यही आत्मनिर्भर भारत का वास्तविक मंत्र है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जन्मदिवस की कोटि-कोटि बधाई। आपके सुदीर्घ यशस्वी और सुखद जीवन की कामना के साथ—

ध्रुवं ते राजा वरूणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः।
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां
ध्रुवम॥ (ऋग्वेद 10वां मण्डल, सूक्त 5) ■

(लेखक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

विकसित भारत का वैश्विक चेहरा



सर्बानंद सोनोवाल

भारत को विश्वगुरु के आसन पर प्रतिष्ठित करने के लक्ष्य से महान जननेता, विशाल व्यक्तित्व के धनी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मूल्यबोध एवं भारतीय दर्शन पर आधारित उठाए गए कदमों से वैश्विक स्तर पर हमारे देश की छवि मजबूत हुई है। इस महान व्यक्ति का जीवन और कर्म आज विश्ववासियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुका है। राजनीति, समाज नीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीक समेत सभी क्षेत्रों में परिवर्तन की लहर बहाकर प्रधानमंत्री मोदी जी ने हरेक भारतीय के आत्मविश्वास को सुदृढ़ किया है।

चुनौतियों के समक्ष सिर नहीं झुकाने वाले इस विश्व समादरित नेता का जीवन जिस तरह से आलोकित हुआ है, वह हरेक व्यक्ति के लिए अत्यंत प्रेरक है। एक चाय दुकान से विश्व के शक्तिशाली लोकतांत्रिक देश भारतवर्ष के प्रधानमंत्री पद तक पहुंचना कोई साधारण बात नहीं है। चुनौतियों के विरुद्ध साहस के साथ लड़ते हुए आगे बढ़ने की प्रगाढ़ मानसिकता के अधिकारी हैं मोदीजी। आर्थिक रूप से कमजोर एक परिवार में जन्म लेकर पिता के उपार्जनस्थली एकमात्र चाय दुकान में हाथ बंटाते हुए मोदी जी ने जिस तरह अपनी



पढ़ाई भी जारी रखी, यह उनकी दृढ़ निश्चय का परिचायक है। कठोर जीवन संग्राम में लगे रहने के बावजूद भारतमाता की सेवा की अदम्य इच्छा के कारण वे अपने लक्ष्य तक

साथ ही देश को विश्व में शक्तिशाली बनाने के लिए 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' की नीति के आधार सभी जाति-जनजाति, भाषा-भाषी, धर्मावलंबी लोगों को लेकर उन्होंने जो यात्रा आरंभ की थी, उसका फलदायी परिणाम आज हरेक भारतवासी देख रहा है। इस महान नेता के भविष्य में झांकने की क्षमता के कारण अप्रवासी भारतीय भी आज स्वयं को भारतीय कहलाने में गौरव का अनुभव करते हैं। प्रत्येक विदेश दौरे में मिले अपार आदर और स्नेह पर्वतसम व्यक्तित्व के धनी इस प्रधानमंत्री की विश्वव्यापी लोकप्रियता को प्रमाणित करता है।

प्रधानमंत्री जी पांच हजार वर्ष पुरानी भारतीय सभ्यता-संस्कृति से समग्र देशवासी को आगे लेकर बढ़े और विश्वमंच को हमारे देश की शक्ति और सामर्थ्य से परिचित कराने के लिए किए गए उनके प्रयास के फलस्वरूप विश्व की 750

चुनौतियों के विरुद्ध साहस के साथ लड़ते हुए आगे बढ़ने की प्रगाढ़ मानसिकता के अधिकारी हैं मोदीजी। आर्थिक रूप से कमजोर एक परिवार में जन्म लेकर पिता के उपार्जनस्थली एकमात्र चाय दुकान में हाथ बंटाते हुए मोदी जी ने जिस तरह अपनी पढ़ाई भी जारी रखी, यह उनकी दृढ़ निश्चय का परिचायक है।

पहुंचने में सफल हुए हैं। कठोर परिश्रम के आदर्श और पिता के प्रति अनुराग समाज के लिए एक विरल दृष्टिकोण है।

2014 में देश का प्रधानमंत्री बनने के



करोड़ आबादी भारत की तरफ आकर्षित हुई। भारतीय संस्कृति और मूल्यबोध ने आज विश्व को नई प्रेरणा दी है। प्रधानमंत्री जी के आह्वान का समर्थन करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन 2015 में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की औपचारिक घोषणा करके विश्व नेता के रूप में उनके व्यक्तित्व को अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति प्रदान की। मोदी जी के मजबूत पदक्षेप के कारण ही आज विश्ववासी विश्व शांति, स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन के लिए योगाभ्यास की जरूरत को समझ पाए हैं।

21वीं सदी विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है। नई-नई प्रौद्योगिकी के माध्यम से देश की नई पीढ़ी को आगे ले जाने के लिए 2014 में जब माननीय प्रधानमंत्री जी ने 'डिजिटल इंडिया अभियान' का नारा दिया था, तब अधिकतर लोग उनके इस पदक्षेप की गहराई समझ नहीं पाए थे। विज्ञानसम्मत नजरिये से संचार साधन, प्रशासन में पूरी तरह पारदर्शिता और सभी कामकाज डिजिटल माध्यम से पूरा करके भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने की उनकी पहल से आज देश तेजी से आगे बढ़ने में सफल हुआ है। आज आगामी पीढ़ी आगे बढ़कर 'डिजिटल इंडिया' के स्वप्न को वास्तविक रूप देने के लिए खुद आगे बढ़ रही है। कोविड-19 जैसे महासंकट के समय देशवासियों ने डिजिटल के उपयोग की गंभीरता और महत्व को समझा। शिक्षा से लेकर सरकारी-गैरसरकारी कार्यालयों में कामकाज आज डिजिटल माध्यम से करना संभव हो पाया है।

उसी तरह देश की सभी जाति-जनजाति की स्वयं की भाषा-संस्कृति को पुनर्जीवित कर स्वाभिमान के साथ जीवित रह सके, इसके लिए मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार की ओर से लागू की गई 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' से जो राह दिखाई गई है, उसे आज देशवासी

अच्छी तरह महसूस कर रहे हैं। विश्व मंच पर आधुनिक चिंतनधारा को आगे बढ़ाने के साथ-साथ भारतीय परंपरा व मूल्यबोध की नींव पर जीवन गढ़ने के लिए यह शिक्षा नीति नई आशा और उत्साह ले आई है। नई शिक्षा नीति के वास्तविक रूप से लागू होने से भारतवर्ष विश्व का बौद्धिक ज्ञान केंद्र बन उठेगा।

प्रधानमंत्री जी वैश्विक स्तर पर हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने के लक्ष्य से आरंभ से ही कार्य क्षेत्र में लगे हुए हैं। देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में मोदीजी की अगाध आस्था है। प्रधानमंत्री के रूप में संसद में पहली बार प्रवेश करने के

देश के अन्य प्रदेशों के साथ ही असम तथा पूर्वोत्तर को समान रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री जी आरंभ से ही पूरी दृढ़ता के साथ विभिन्न कदम उठा रहे हैं। इसके पहले के किसी भी प्रधानमंत्री ने असम तथा पूर्वोत्तर की प्राकृतिक संपदाओं और संभावनाओं को लेकर इस तरह का काम नहीं किया था।

समय संसद भवन की सीढ़ी पर मत्था टेक कर लोकतंत्र के प्रति अपनी गहरी आस्था का उदाहरण प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री जी ने यह दर्शाया है कि संसदीय लोकतंत्र हमारे जीवन का प्रवाह और विकास का पावन क्षेत्र है। प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने स्वयं को एक सेवक बताया है। देश सेवा ही उनके जीवन का मूलमंत्र है, पिछले छह वर्षों से देशवासी स्वयं अपनी आंखों से इसे देख रहे हैं।

भारत की सार्वभौमिकता, एकता और अखंडता की रक्षा के लिए प्रधानमंत्री जी के उठाए गए कदमों से आज देशवासियों में

आत्मविश्वास बढ़ा है। पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक, भारत-चीन सीमा पर भारतीय सेना की मजबूत स्थिति—प्रधानमंत्री का देश के प्रति गंभीर दायित्व का प्रमाण है। कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म कर उन्होंने भारतवासियों में 'एक राष्ट्र, एक संविधान' के आदर्श की अवधारणा कायम की है। महात्मा गांधी के रामराज्य के सपने को साकार करने के लिए प्रधानमंत्री जी ने भारतीय मूल्यों पर आधारित जो-जो कदम उठाए हैं, वे सब हमारे लिए एक महत आदर्श हैं। 500 वर्ष पुराने राम मंदिर भूमि विवाद का कानून के अनुसार निपटारा तथा राम मंदिर भूमि पूजन कर माननीय प्रधानमंत्री ने देशवासियों की दीर्घकालिक आकांक्षाओं को पूरा किया है।

देश के अन्य प्रदेशों के साथ ही असम तथा पूर्वोत्तर को समान रूप से आगे बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री जी आरंभ से ही पूरी दृढ़ता के साथ विभिन्न कदम उठा रहे हैं। इसके पहले के किसी भी प्रधानमंत्री ने असम तथा पूर्वोत्तर की प्राकृतिक संपदाओं और संभावनाओं को लेकर इस तरह का काम नहीं किया था। प्राकृतिक संपदाओं से समृद्ध होने के बावजूद पहले की सरकारों की उपेक्षा के कारण इस क्षेत्र के लोगों का मनोबल तेजी से गिरने लगा था। फलस्वरूप पूर्वोत्तर के लोग देश की विकास प्रक्रिया का हिस्सा नहीं बन पा रहे थे। इसके विपरीत आज माननीय प्रधानमंत्री की दूरदर्शी नीति के कारण इस अंचल के आम लोगों का मनोबल बढ़ा है।

इस युगद्रष्टा ने पूर्वोत्तर को 'अष्टलक्ष्मी' और 'देश के विकास का इंजन' मानते हुए तेजी के साथ विकास योजनाओं को लागू करने के लिए ऐतिहासिक कदम उठाए हैं। इस अंचल के लिए केंद्रीय योजनाएं समय पर और सही ढंग से लागू हो सकें, इसके लिए उन्होंने हरेक



केंद्रीय मंत्री को हर पखवाड़े एक बार इस अंचल का दौरा करने का निर्देश दिया है। वहीं देश के इतिहास में एक मिसाल कायम करते हुए प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वयं 30 से अधिक बार इस अंचल का दौरा किया है। यह दर्शाता है कि पूर्वोत्तर के लिए उनके हृदय में कितना गहरा लगाव है। प्रधानमंत्री जी के 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के जरिए असम तथा पूर्वोत्तर के साथ दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ने के उपायों के फलस्वरूप यातायात, संचार, व्यवसाय-वाणिज्य, पर्यटन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, खेल, सूचना-तकनीक, कृषि इत्यादि हर क्षेत्र में संभावनाओं के नए द्वार खुले हैं।

प्रधानमंत्री जी ने असमिया जाति के मान-सम्मान को आज देश और दुनिया में विशिष्ट पहचान दिलाई है। निजी जीवन के साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में असमिया गामोछा पहनकर उन्होंने असमिया बुनकरों के स्वाभिमान को विश्व भर में उज्ज्वलित किया है। बुनकरों के हथकरघे में बुने सपनों को मान देकर उन्होंने समग्र जाति के स्वाभिमान को बढ़ाया है। सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका को देश का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' प्रदान कर असमिया संस्कृति को और अधिक उज्ज्वल करने के साथ ही हमारे क्षेत्रीय स्वाभिमान को नए रूप में संजीवनी दी है। असम की हरेक जाति-जनगोष्ठी के प्रति उनकी सद्भावना अतुलनीय है। बीटीआर समझौते के जरिए राज्य में शांति स्थापना के प्रयासों के फलस्वरूप आज राज्य में विकास प्रक्रिया को विशेष गति मिली है।

प्रधानमंत्री ने देशवासियों के समक्ष कर्म-संस्कृति की नई मिसाल पेश की है। एक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के सपने को साकार करने की दिशा में

परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। दूसरों को उपदेश देने के बजाय स्वयं एक आदर्श स्थापित करते हुए मोदी जी ने आज देशवासियों को कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित किया है। रोजाना 20 घंटे काम में लगे रहकर उन्होंने एक आदर्श दृष्टिकोण हमारे सामने रखा है।

देश के प्रत्येक व्यक्ति के समान विकास के लिए प्रधानमंत्री जी ने स्वयं को समर्पित किया है। विशेष रूप से समर्थ व्यक्ति को दिव्यांग की आख्या देकर उन्हें सामाजिक मान-मर्यादा और स्वाभिमान से जीवन्-यापन का अवसर उपलब्ध कराया है। महिला, शिशु, किसान, श्रमिक, बेरोजगार सभी के लिए योजनाएं बनाकर उन्हें जमीनी स्तर तक ले जाने में सफल रहे हैं। लॉकडाउन के कारण मंद पड़ी देश की अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए उन्होंने 20 लाख करोड़ रुपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा की और अब उसे लागू भी किया जा रहा है। 'आत्मनिर्भर' भारत बनाने के प्रधानमंत्री जी के प्रयासों से देशवासियों का आत्मविश्वास बढ़ा है। देशवासियों के हित में किसी सरकार द्वारा वृहद आर्थिक पैकेज घोषित करने का उदाहरण भारत के इतिहास में नहीं मिलता।

गौरवमयी संस्कृति और परंपरा से समृद्ध भारतवर्ष गढ़ने के लिए प्रधानमंत्री के प्रयासों ने आज देशवासियों में आत्मानुभूति का संचार किया है। हरेक नागरिक राष्ट्र निर्माण का हिस्सेदार बनने को उत्सुक है। देश की प्रगति की गति को तेज करने के प्रधानमंत्री के प्रयासों से भारतवर्ष का विश्व का एक प्रमुख शक्तिशाली राष्ट्र बनना निश्चित है। इस बात को यथार्थ अनुभवों के साथ हम सभी समझ चुके हैं। ■

(लेखक असम के मुख्यमंत्री हैं)

नॉर्थ ईस्ट भारत की Natural और Cultural Diversity का, Cultural Strength का एक बहुत बड़ा प्रतीक है। भारत की आन बान शान है। ऐसे में जब आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण होता है तो टूरिज्म को भी बहुत बल मिलता है।

अब तो मैं देखता हूँ कि सोशल मीडिया और वीडियो स्ट्रीमिंग के माध्यमों से देश और विदेश तक नॉर्थ ईस्ट की तस्वीर, Potential घर-घर पहुंचने की संभावना बन गई है। और नॉर्थ-ईस्ट के अलग-अलग स्थानों के वीडियो लोगों को अचरज कर रहे हैं, लोगों के मन में होता है, ये हमारे देश में है। ऐसा लोगों के मन में लगता है। नॉर्थ ईस्ट अपनी इस ताकत का पूरा लाभ उठाए, यहां के युवाओं को रोजगार के अवसर मिलें, इसी दिशा में सरकार के अनेक काम आगे बढ़ रहे हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी, जल आपूर्ति परियोजना आधारशिला कार्यक्रम (मणिपुर), 23 जुलाई 2020

पाथेय

हमारे लिए हमारा संगठन चुनाव जीतने की मशीन नहीं है।

हमारे लिए हमारे संगठन का मतलब है— सेवा।

व्यक्ति के जीवन में, समाज के जीवन में, राष्ट्र के जीवन में बदलाव लाने के लिए अहर्निश यज्ञ में आहुति देते रहना...

हमारे लिए हमारे संगठन का मतलब है— सबका संग, सबका साथ।

सबको लेकर चलना है।

हमारे लिए हमारे संगठन का मतलब है— सबका सुख, सबकी समृद्धि।

हमारा संगठन समाज हित के लिए काम करने वाला है, संघर्ष करने वाला है, समाज और देश के लिए खप जाने वाला है।

हमारे लिए हमेशा 'राष्ट्र प्रथम', नेशन फर्स्ट रहा है।

ऐसा नहीं है कि ये बात हमने पार्टी के प्रस्ताव में लिखकर पास कराई हो। जी नहीं।

राष्ट्रहित के इस भाव को, राष्ट्र प्रथम के इस भाव को स्थापित करने में हमारी कई पीढ़ियां खप गई हैं।

दीनदयाल उपाध्याय जी, श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी, अनेक महापुरुष, सभी वरिष्ठ नेता, अनगिनत, जिनके संस्कारों ने, जी कर दिखाए हुए संस्कार की शृंखला ने हमें प्रेरित किया है और इसी प्रेरणा से भारतीय जनता पार्टी ने वंचित हो, शोषित हो, दलित हो, पीड़ित हो, सभी को समाज के अन्य वर्गों की बराबरी में लाने का, उन्हें सशक्त करने का निरंतर प्रयास किया है।



भाजपा के प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने साथ, मैंने ये इलाहाबाद में पार्टी की कार्यसमिति में शायद कहा था, सात 'स' Seven 'S' की शक्ति लेकर आगे बढ़ना चाहिए। देखिए वो सात बातें क्या कही थी मैंने—

पहला— सेवाभाव,

दूसरा— संतुलन,

तीसरा— संयम,

चौथा— समन्वय,

पांचवां— सकारात्मकता,

छठा— सद्भावना

और सातवां— संवाद।

—श्री नरेन्द्र मोदी, 'सेवा ही संगठन' कार्यक्रम, 4 जुलाई 2020

अनुक्रम

- 24 एक विनम्र शुरुआत: आरंभिक वर्ष
- 25 समर्पित जीवन
- 28 एकता यात्रा: अखंड भारत के लिए खड़ा होना!
- 29 नरेन्द्र मोदी और भाजपा संगठन
- 29 अपने कार्य में आनंद लेना
- 30 उत्कृष्ट प्रबंधन कौशल

स्रोत : narendramodi.in



एक विनम्र शुरुआत: आरंभिक वर्ष

श्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा वड़नगर की गलियों से शुरू होती है— उत्तरी गुजरात के मेहसाणा जिले का एक छोटा-सा कस्बा। भारत के स्वतंत्र होने के तीन साल और भारत में गणतंत्र की स्थापना के कुछ महीने बाद 17 सितम्बर 1950 को जन्मे श्री नरेन्द्र मोदी, श्री दामोदरदास मोदी और श्रीमती हीराबा की छह संतानों में से तीसरी संतान हैं। वड़नगर इतिहास के टापू पर खड़ा हुआ एक शहर है। पुरातत्व खुदाई से पता चलता है कि यह अध्ययन और आध्यात्मिकता का एक जीवंत केंद्र था। चीनी यात्री ह्वेनत्सांग ने वड़नगर का दौरा किया था। वड़नगर का एक समृद्ध बौद्ध इतिहास भी रहा है। शताब्दियों पूर्व 10 हजार से अधिक बौद्ध भिक्षुओं ने इस भूमि को अपना निवास स्थान बनाया था।

श्री नरेन्द्र मोदी के जीवन के आरंभिक वर्ष सामान्य परिवार से कोसों दूर थे। उनका परिवार समाज के उस कमजोर तबके से था, जिसे दो वक्त का भोजन जुटाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था। पूरा परिवार एक बेहद छोटे से घर में रहता था, जो कि लगभग 40×12 फुट के आकार का था। उनके पिता स्थानीय रेलवे स्टेशन पर बनी चाय की दुकान पर चाय बेचते थे। अपने प्रारंभिक वर्षों में श्री नरेन्द्र मोदी इस चाय की दुकान पर अपने पिता का हाथ बंटते थे।

इन प्रारंभिक वर्षों ने श्री नरेन्द्र मोदी पर एक मजबूत छाप छोड़ी। एक बच्चे के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी पढ़ाई, पाठ्योत्तर जीवन और पिता के चाय स्टाल में उनके योगदान के बीच संतुलन स्थापित किया। उनके सहपाठी श्री नरेन्द्र मोदी को एक तर्कशील, मेधावी और मेहनती छात्र के रूप में याद करते हैं, जिसमें तर्क-वितर्क और अध्ययन करने का अदभुत कौशल था। वह स्कूल के पुस्तकालय में अध्ययन हेतु घंटों समय व्यतीत किया करते थे। खेलों में उन्हें तैराकी का बहुत शौक था। श्री नरेन्द्र मोदी का सभी समुदायों में मित्रों का व्यापक दायरा था। एक बच्चे के रूप में वह अक्सर हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के त्योहारों को मनाया करते थे, क्योंकि उनके पड़ोस में उनके बहुत सारे मित्र मुस्लिम समाज से थे।

फिर भी उनके विचार और स्वप्न विद्यालय की कक्षा में शुरू होकर

किसी दफ्तर के माहौल में खत्म हो जाने वाले पारम्परिक जीवन में नहीं बंधे, बल्कि कहीं आगे निकल गए। वे लीक से हटकर चलना चाहते थे और समाज में एक परिवर्तन देखना चाहते थे, समाज और व्यवस्था के हाशिये पर पड़े लोगों के दुःख-दर्द को खत्म करना चाहते थे। युवावस्था में ही उनका झुकाव त्याग और तप की ओर बढ़ रहा था। उन्होंने नमक, मिर्च, तेल और गुड़ खाना छोड़ दिया था। स्वामी विवेकानंद के कार्यों का गहन अध्ययन श्री नरेन्द्र मोदी को अध्यात्म की यात्रा की ओर ले गया और उन्होंने भारत को जगतगुरु बनाने के स्वामी विवेकानंद के सपनों को पूरा करने के लिए अपने मिशन की नींव रखी।



अगर कोई एक शब्द है जो श्री नरेन्द्र मोदी के जीवन का चरित्र चित्रण कर सकता है और जो जीवन भर उनके साथ रहा है, वह है 'सेवा'। जब ताप्ती नदी ने बाढ़ का कहर ढाया था, नौ वर्ष के श्री नरेन्द्र मोदी और उनके मित्रों ने खाने के स्टाल लगाये और राहत कार्यों हेतु धन जुटाने का कार्य किया था। जब पाकिस्तान के साथ युद्ध अपने चरम पर था, उन्होंने रेलवे स्टेशन पर सीमा की ओर जाने और वहां से लौटने वाले जवानों के लिए चाय वितरित करने का कार्य किया। यह एक छोटा कदम था लेकिन उन्होंने बेहद कम उम्र में भारत माता के आह्वान पर अपने सामर्थ्य का दृढ़ संकल्पित होकर प्रदर्शन किया।

एक बालक के तौर पर श्री नरेन्द्र मोदी का एक सपना था – भारतीय सेना में जाकर देश की सेवा करने का। उनके समय के तमाम युवाओं के लिए, भारत माता की सेवा के लिए सेना सर्वोत्कृष्ट माध्यम था। श्री नरेन्द्र मोदी जामनगर के समीप स्थित सैनिक स्कूल में पढ़ने के बेहद इच्छुक थे, लेकिन जब फीस चुकाने की बात आई तो घर पर पैसों का घोर अभाव सामने आ गया। निश्चित तौर पर श्री नरेन्द्र बेहद दुखी हुए। लेकिन जो बालक सैनिक की वर्दी न पहन सकने के कारण बेहद निराश था, भाग्य ने उसके लिए कुछ अलग ही सोच कर रखा था। इन वर्षों में उसने एक अद्वितीय पथ पर यात्रा आरम्भ की, जो उन्हें मानवता की सेवा के लिए बड़े मिशन की खोज के लिए भारत भर में ले गया। ■

समर्पित जीवन

अधिकांश किशोर 17 वर्ष की आयु में अपने भविष्य के बारे में और बचपन के इस आखिरी पड़ाव का आनंद लेने के बारे में सोचते हैं, लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी के लिए यह अवस्था पूर्णतः अलग थी। 17 वर्ष की आयु में उन्होंने एक असाधारण निर्णय लिया, जिसने उनका जीवन बदल दिया। उन्होंने घर छोड़ने और देश भर में भ्रमण करने का निर्णय कर लिया। उनका परिवार श्री नरेन्द्र मोदी के इस निर्णय पर चकित था, लेकिन उन्होंने श्री नरेन्द्र मोदी के छोटे शहर का सीमित जीवन छोड़ने की इच्छा को अंततः स्वीकार कर लिया। जब घर त्यागने का वह दिन आ गया, उस दिन उनकी मां ने उनके लिए विशेष अवसरों पर बनाया जाने वाला मिष्ठान्न बनाया और उनके मस्तक पर परम्परागत तिलक किया। जिन स्थानों की उन्होंने यात्राएं की उसमें हिमालय (जहां वे गुरूदाचट्टी में ठहरे), पश्चिम बंगाल में रामकृष्ण आश्रम और यहां तक कि पूर्वोत्तर भी शामिल है। इन यात्राओं ने इस नौजवान के ऊपर अमित छाप छोड़ी। उन्होंने भारत के विशाल भू-भाग में यात्राएं कीं और देश के विभिन्न भागों की विभिन्न संस्कृतियों को अनुभव किया। यह उनके लिए आध्यात्मिक जागृति का भी एक समय था, जिसने श्री नरेन्द्र मोदी को उस व्यक्ति से अधिक गहराई से जुड़ने का अवसर दिया, जिसके वे सदैव से प्रशंसक रहे हैं – स्वामी विवेकानंद।



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव

श्री नरेन्द्र मोदी दो वर्ष के बाद वापस लौट आये, लेकिन घर पर केवल दो सप्ताह ही रुके। इस बार उनका लक्ष्य निर्धारित था और उद्देश्य स्पष्ट था – वह अहमदाबाद जा रहे थे। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ कार्य करने का मन बना चुके थे। 1925 में स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक सामाजिक सांस्कृतिक संगठन है, जो भारत के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए कार्य करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से उनका पहला परिचय आठ वर्ष की बेहद कम आयु में हुआ, जब वह अपनी चाय की दुकान पर दिन भर काम करने के बाद संघ के युवाओं की स्थानीय बैठक में भाग लिया करते थे।

इन बैठकों में भाग लेने का प्रयोजन राजनीति से परे था। वे यहां अपने जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाले श्री लक्ष्मणराव इनामदार, जिनको 'वकील साहेब' के नाम से भी जाना जाता था, से मिले थे।

अहमदाबाद और उसके आगे की राह

अपनी इस पृष्ठभूमि के साथ, लगभग 20 वर्षीय श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के सबसे बड़े शहर अहमदाबाद पहुंच गए। वह संघ के नियमित स्वयंसेवक बन गए और उनके समर्पण और संगठन कौशल ने वकील साहब और अन्य लोगों को प्रभावित किया। 1972 में वह प्रचारक बन गए और पूरा समय संघ को देने लगे। वह अन्य प्रचारकों के साथ अपना आवास साझा करते थे और एक कठोर दैनिक दिनचर्या का पालन करते थे। दिन की शुरुआत प्रातः काल 5 बजे होती थी जो देर रात तक चलती थी। इस तरह के एक व्यस्त दिनचर्या के बीच श्री नरेन्द्र

मोदी ने राजनीति विज्ञान में अपनी डिग्री पूर्ण की। उन्होंने शिक्षा और अध्ययन को सदैव महत्वपूर्ण माना।

एक प्रचारक के तौर पर उन्हें गुजरात भर में घूमना पड़ता था। वर्ष 1972 और 1973 के मध्य वे नादियाड के संतराम मंदिर में रुके, जो कि खेड़ा जिले का भाग है। 1973 में श्री नरेन्द्र मोदी को सिद्धपुर में एक विशाल सम्मलेन आयोजित करने

का उत्तरदायित्व सौंपा गया, जहां वह संघ के शीर्ष अधिकारियों से मिले। श्री नरेन्द्र मोदी जब एक कार्यकर्ता के तौर पर अपने आप को स्थापित कर रहे थे उस समय गुजरात सहित देश भर में बेहद अस्थिर माहौल था। जब वह अहमदाबाद पहुंचे, शहर साम्प्रदायिक दंगों की भयानक विभीषिका से जूझ रहा था। देश के अन्य भागों में भी, कांग्रेस पार्टी को 1967 के लोकसभा चुनावों में शिकस्त मिली थी। कांग्रेस पार्टी उस समय श्रीमती इंदिरा गांधी और अन्य असंतुष्ट गुट में बंट गई थी, इस गुट के नेताओं में गुजरात के मोरारजी देसाई भी थे। 'गरीबी हटाओ' के प्रचार की लहर पर सवार श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1971 के चुनावों में लोकसभा की 518 में से 352 सीटें जीतकर बड़ी वापसी की थी।

गुजरात राज्य के चुनावों में भी श्रीमती इंदिरा गांधी ने केंद्र की सफलता को दोहराया और 50 प्रतिशत से अधिक मतों के साथ 182



में से 140 सीटें प्राप्त कीं। हालांकि कांग्रेस और श्रीमती गांधी का यह उल्लासोन्माद जिस तेजी के साथ निर्मित हुआ था, उतनी ही तेजी से फीका पड़ा। त्वरित सुधार और प्रगति का सपना गुजरात में कारगर साबित नहीं हुआ और यहां के आम आदमी के बीच कांग्रेस से मोहभंग निर्मित होने लगा। श्री इन्दुलाल याज्ञिक, श्री जीवराज मेहता और श्री बलवंत राय मेहता जैसे वरिष्ठ राजनीतिज्ञों का संघर्ष और बलिदान लालच की राजनीति की भेंट चढ़ गया।

1960 की समाप्ति और 1970 के शुरुआत में कांग्रेस सरकारों ने भ्रष्टाचार और कुशासन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। 'गरीबी हटाओ' का दिव्य नारा धीरे-धीरे 'गरीब हटाओ' में बदल गया। गरीब की हालत बदतर होती चली गई। गंभीर अकाल और भारी कीमत वृद्धि ने गुजरात को दुर्दशा की पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया। आवश्यक वस्तुओं के लिए अंतहीन कतारें एक सामान्य सा दृश्य बन गया था। आम आदमी के लिए कोई राहत नहीं थी।

नवनिर्माण आन्दोलन : युवा शक्ति

जनता का असंतोष सार्वजनिक आक्रोश में बदल गया जब दिसम्बर 1973 में मोरबी (गुजरात) इंजीनियरिंग कॉलेज के कुछ छात्रों ने उनके खाने के बिलों में बेतहाशा वृद्धि का विरोध किया। इस तरह का प्रदर्शन गुजरात के अन्य राज्यों में भी हुआ। इन प्रदर्शनों को व्यापक समर्थन मिलने लगा और सरकार के खिलाफ एक बड़ा आन्दोलन खड़ा हुआ, जिसे नवनिर्माण आन्दोलन के नाम से जाना जाता है।

श्री नरेन्द्र मोदी ने एक व्यापक जन आन्दोलन तैयार किया, जिसे समाज के सभी वर्गों का समर्थन हासिल हुआ। इस आन्दोलन को उस समय और ताकत मिली जब एक सम्मानित सार्वजनिक हस्ती और भ्रष्टाचार के खिलाफ शंखनाद करने वाले श्री जयप्रकाश नारायण ने इस आन्दोलन को अपना समर्थन दिया। जब श्री जयप्रकाश नारायण अहमदाबाद आये तब श्री नरेन्द्र मोदी को उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अन्य अनुभवी नेताओं द्वारा आयोजित कई वार्ताओं ने नौजवान श्री नरेन्द्र मोदी पर एक मजबूत छाप छोड़ी। आखिरकार छात्र शक्ति की जीत हुई और कांग्रेस के तत्कालीन मुख्यमंत्री को त्यागपत्र देना पड़ा। तथापि यह हर्ष अधिक समय तक नहीं रहा। अधिनायकवाद के काले बादलों ने 25 जून 1975 की आधी रात को देश को अपनी गिरफ्त में ले लिया, जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश के ऊपर आपातकाल थोप दिया।

आपातकाल के काले दिन

श्रीमती गांधी को भय था कि न्यायालय द्वारा उनके चुनाव को निरस्त करने के बाद उन्हें अपना शीर्ष पद गंवाना पड़ सकता है। उन्हें

लगा कि इन हालात में आपातकाल ही श्रेष्ठ विकल्प है। लोकतंत्र सलाखों के पहरे में चला गया, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता छीन ली गई और विपक्ष के मुखर स्वर श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री लाल कृष्ण आडवाणी, श्री जॉर्ज फर्नांडीज से लेकर श्री मोरारजी देसाई को गिरफ्तार कर लिया गया।

श्री नरेन्द्र मोदी आपातकाल विरोधी आंदोलन के मूल में थे। वे उस तानाशाह अत्याचार का विरोध करने के लिए गठित की गई गुजरात लोक संघर्ष समिति के एक सदस्य थे। कालांतर में वे इस समिति के महासचिव बन गए, जिसके तौर पर उनकी प्राथमिक भूमिका राज्य भर में कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय स्थापित करने की थी। कांग्रेस विरोधी नेताओं और कार्यकर्ताओं के ऊपर की जा रही सख्त निगरानी के चलते यह बेहद मुश्किल काम था। आपातकाल के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए गए काम के बारे में कई कहानियां हैं। उनमें से एक यह है कि वह एक स्कूटर पर सवार होकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता को एक सुरक्षित घर में ले गए थे। इसी प्रकार, एक बार यह बात सामने आई कि गिरफ्तार किए गए नेताओं में से एक गिरफ्तारी के समय अपने साथ कई महत्वपूर्ण कागजात ले जा रहे थे। वे कागजात किसी भी कीमत पर पुनः प्राप्त किए जाने थे। यह जिम्मेदारी श्री नरेन्द्र मोदी को सौंपी गई कि वे किसी भी तरह उन कागजात को पुलिस थाने में पुलिस की हिरासत में बैठे उस नेता से लेकर आएँ और वह भी पुलिस बल के सामने। जब नानाजी देशमुख को गिरफ्तार कर लिया गया था, तब उनके पास एक पुस्तक थी जिसमें उनसे सहानुभूति रखने वालों के पते लिखे हुए थे। श्री नरेन्द्र मोदी ने उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का प्रबंध कर दिया कि उनमें से किसी को भी आततायी सरकार के पुलिस बल गिरफ्तार नहीं कर पाए।

श्री नरेन्द्र मोदी की अन्य जिम्मेदारियों में से एक गुजरात में आने व वहां से जाने वाले आपातकाल विरोधी कार्यकर्ताओं के लिए यात्रा की व्यवस्था बनाना भी था। कभी-कभी अपने काम के चलते उन्हें कई तरह के भेष बदल कर जाना होता था ताकि वे पहचाने न जाएँ – एक दिन वे एक सिख सज्जन के रूप में होते थे, तो अगले दिन एक दाढ़ी वाले बुजुर्ग आदमी के रूप में।

आपातकाल के दिनों में श्री नरेन्द्र मोदी के सबसे मूल्यवान अनुभवों में से एक यह था कि उस दौरान उन्हें विभिन्न दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का अवसर मिला। श्री नरेन्द्र मोदी ने जून 2013 को अपने ब्लॉग पर लिखा है:

“मुझ जैसे युवाओं को आपातकाल ने एक ही लक्ष्य के लिए लड़ रहे अनेक नेताओं और संगठनों के एक व्यापक एवं आश्चर्यजनक समूह के साथ काम करने का एक अदभुत अवसर दिया। इसने हमें



उन संस्थाओं से परे काम करने में सक्षम बनाया, जिनसे हम प्रारंभ से जुड़े थे। हमारे परिवार के नेताओं जैसे अटल जी, आडवाणी जी, स्वर्गीय श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी, स्वर्गीय श्री नानाजी देशमुख से लेकर श्री जॉर्ज फर्नांडिस जैसे समाजवादियों तथा श्री रवीन्द्र वर्मा जैसे कांग्रेसियों तक जो श्री मोरारजी भाई देसाई के साथ मिलकर काम कर रहे थे व आपात स्थिति से दुखी थे, विभिन्न विचारधाराओं से जुड़े नेताओं ने हमें प्रेरित किया। मैं भाग्यशाली हूँ कि मैंने गुजरात विद्यापीठ के पूर्व उपकुलपति श्री धीरूभाई देसाई, मानवतावादी श्री सी.टी. दारू व गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्रियों श्री बाबूभाई जशभाई पटेल और श्री चिंमनभाई पटेल तथा प्रमुख मुस्लिम नेता स्वर्गीय श्री हबीब उर रहमान जैसे लोगों से बहुत कुछ सीखा है। इस बारे में कांग्रेस की निरंकुशता का विरोध करने वाले और यहां तक कि पार्टी छोड़ने वाले स्वर्गीय श्री मोरारजी भाई देसाई का संघर्ष और दृढ़ संकल्प मन में आता है।

ऐसा लग रहा था जैसे विभिन्न विचारों और विचारधाराओं का एक जीवंत संगम एक बड़े और नेक उद्देश्य के लिए आकार ले चुका था। हम सब अपने साझा उद्देश्य यानी देश के लोकतांत्रिक लोकाचार को बनाए रखने के लिए जाति, धर्म, समुदाय या धर्म के मतभेदों से ऊपर उठ कर एक साथ काम कर रहे थे। हमने दिसंबर 1975 में गांधीनगर में सभी विपक्षी सांसदों की एक महत्वपूर्ण बैठक के लिए तैयारी की। इस बैठक में स्वर्गीय श्री पुरुषोत्तम मावलंकर, श्री उमाशंकर जोशी और श्री कृष्णकांत जैसे निर्दलीय सांसदों ने भी भाग लिया।

राजनीति के दायरे के बाहर श्री नरेन्द्र मोदी को सामाजिक संगठनों और कई गांधीवादियों के साथ काम करने का अवसर मिला है। वे जार्ज फर्नांडिस (जिन्हें वह 'जॉर्ज साहब' के नाम से पुकारते हैं) और श्री नानाजी देशमुख दोनों के साथ हुई बैठक को अक्सर याद करते हैं। उन स्याह दिनों के दौरान वह अपने अनुभवों के बारे में लिखते रहते थे, जिसे बाद में 'आपातकाल में गुजरात' नाम की एक पुस्तक के रूप में छपा भी गया।

आपातकाल से परे नवनिर्माण आंदोलन की ही तरह, आपातकाल की समाप्ति लोगों की जीत के रूप में हुई। 1977 के संसदीय चुनावों में श्रीमती इंदिरा गांधी बुरी तरह पराजित हुईं। जनता ने बदलाव के लिए वोट दिया और नई जनता पार्टी की सरकार में अटल जी और

आडवाणी जी जैसे जनसंघ नेताओं को महत्वपूर्ण कैबिनेट मंत्री बनाया गया। लगभग उसी समय श्री नरेन्द्र मोदी को पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान उनकी सक्रियता और अच्छे संगठनात्मक काम की सराहना के तौर पर 'संभाग प्रचारक' (एक क्षेत्रीय आयोजक के बराबर का पद) बनाया गया था। उन्हें दक्षिण और मध्य गुजरात का प्रभार दिया गया था। उसी समय उन्हें दिल्ली बुलाया गया था और आपातकालीन अवधि के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुभवों को आधिकारिक तौर पर प्रस्तुत करने का दायित्व दिया गया। इस जिम्मेदारी का अर्थ काम का अधिक बोझ तथा क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दोनों कर्तव्यों के मध्य संतुलन स्थापित करना था, जिसे श्री नरेन्द्र मोदी ने आसानी और दक्षता के साथ निभाया।

गुजरात में उनकी यात्राएं जारी रहीं तथा 1980 के दशक के प्रारंभ में काफी बढ़ गईं। इस दौरान उन्हें राज्य के हर तालुके तथा लगभग हर गांव का दौरा करने का अवसर मिला। यह अनुभव एक आयोजक तथा एक मुख्यमंत्री, दोनों के रूप में उनके लिए बहुत काम आया। इस दौरान वे लोगों की समस्याओं से सीधे रूबरू हुए तथा उन्हें हल करने के लिए कठिन काम करने के उनके संकल्प में वृद्धि हुई। सूखा, बाढ़ या दंगों के दौरान वे अनेक बार राहत कार्यों का नेतृत्व भी करते थे।

श्री नरेन्द्र मोदी खुशी से अपने काम में डूबे थे, लेकिन राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ और नवगठित भाजपा में उनके वरिष्ठ उन्हें और अधिक जिम्मेदारी सौंपना चाहते थे और इस प्रकार 1987 में एक और अध्याय श्री नरेन्द्र मोदी के जीवन में शुरू हुआ। उसके बाद से वे जितना समय सड़कों पर काम करते थे उतना ही समय वे पार्टी की रणनीतियां तैयार करने में व्यतीत करते थे। उन्हें पार्टी के नेताओं के साथ काम करना होता था व कार्यकर्ताओं के साथ बैठना होता था। राष्ट्र की सेवा के लिए अपना घर छोड़ देने वाला वह वड़नगर का बालक एक और लंबी छलांग लगाने ही वाला था, हालांकि उसके अपने लिए यह अपने देशवासियों और महिलाओं के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए चल रही अपनी यात्रा की निरंतरता में महज एक छोटा सा मोड़ था। कैलाश मानसरोवर की एक यात्रा के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात भाजपा में महासचिव के रूप में काम करना प्रारंभ कर दिया। ■

श्री नरेन्द्र मोदी आपातकाल विरोधी आंदोलन के मूल में थे। वे उस तानाशाह अत्याचार का विरोध करने के लिए गठित की गई गुजरात लोक संघर्ष समिति के एक सदस्य थे। कालांतर में वे इस समिति के महासचिव बन गए। उनकी प्राथमिक भूमिका राज्य भर में कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय स्थापित करने की थी।



एकता यात्रा: अखंड भारत के लिए खड़ा होना

1 1980 के दशक के अंत तक, देश का सबसे उत्तरी राज्य जम्मू और कश्मीर जिसे 'पृथ्वी पर स्वर्ग' के रूप में जाना जाता था, वह पूर्ण रूप से युद्ध का मैदान बन गया था। 1987 राज्य चुनावों के दौरान लोकतंत्र के कोलाहली समापन के साथ केंद्र की अवसरवादी नीति ने जम्मू और कश्मीर को भारत विरोधी गतिविधियों का गढ़ बना दिया। वह घाटी जिसे कभी पृथ्वी पर सबसे सुंदर स्थान कहा जाता था वह तेजी से युद्ध का मैदान बन रही थी क्योंकि सड़कों पर खून फैला था। मामले को इतने हल्के से लिया गया कि कश्मीर में तिरंगे को फहराना भी वर्जित हो गया था। कोई कार्रवाई करने के बजाय केंद्र असहाय होकर देखती रही।

रुबैया सैयद, संघ के गृह मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सैयद की पुत्री का 1989 में उन्हीं राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा अपहरण कर लिया गया था। किंतु, कठोर कदम उठाने के बजाय, नई दिल्ली में सरकार ने भारत विरोधी भावनाओं के साथ प्रसिद्ध अलगाववादियों को शीघ्रता से छोड़ने के लिए आसान रास्ता अपनाया, जिससे ऐसे राष्ट्र विरोधी तत्वों को ढील मिली।

भाजपा कश्मीर में उभरती इन स्थितियों की मूक दर्शक नहीं बन सकी। वह कश्मीर का ही विषय था जिसके लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना जीवन त्याग दिया था। अप्रत्याशित स्थिति के प्रतिवाद के रूप में तत्कालीन पार्टी अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने राष्ट्रीय एकता को सशक्त करने के लिए एक 'एकता यात्रा' को प्रारंभ करने का निर्णय लिया। यात्रा कन्याकुमारी से प्रारंभ हुई, वह स्थान जहां स्वामी विवेकानंद को जीवन का उद्देश्य मिला और श्रीनगर में लाल चौक पर तिरंगे के फहरने के साथ समाप्त हुई।

श्री नरेन्द्र मोदी के सुस्थापित संगठनात्मक कौशल को ध्यान में रखते हुए यात्रा को तैयार करने का कार्य उनके कंधों पर सौंपा गया। अपने मस्तिष्क, संगठनात्मक दृढ़ता और मेहनत को उत्तरदायित्व में लगाते हुए उन्होंने बहुत ही अल्प समय में इसके साथ आए बड़े जोखिमों का सामना करते हुए व्यापक व्यवस्थाएं की। बिना किसी डर के, उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मिलते हुए हर उस स्थान का दौरा किया जहां से यात्रा को गुजरना था।

उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित और प्रेरित किया, उनमें देशभक्ति की भावना का निर्माण किया, इस प्रकार यात्रा की सफलता का आधार तैयार किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने न केवल यह दिखाया कि वह एक कुशल आयोजक थे, बल्कि उन्होंने किसी भी परिस्थिति में अद्भुत गति पर उपयोग करने की क्षमता का भी प्रदर्शन किया था, जो आज सार्वजनिक जीवन में एक दुर्लभ गुण है। श्री नरेन्द्र मोदी विपरीत परिस्थितियों में भी एक त्वरित निर्णायक के रूप में उभरे और जो उन्होंने निर्णय किया था कुछ लोगों के पास उसे लागू करने की योग्यता थी।

एकता यात्रा के दौरान नरेन्द्र मोदी

एकता यात्रा 11 दिसंबर 1991 को संयोगवश सुब्रमण्य भारती स्मृति गुरु तेग बहादुर के 'बलिदान दिवस' पर प्रारंभ हुई। महत्वपूर्ण समस्याएं, जो संपूर्ण देश में उठी हुई थीं, वे विभाजक और हिंसक नीतियों का विरोध और कश्मीर में आंतक का अंत थीं।

वह जहां भी गए, श्री मोदी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संदेश का उद्घोष किया, यह कहते हुए कि भारत की एकता अन्य हर चीज से ऊपर है। राष्ट्र विरोधी तत्वों के लिए एक उपयुक्त उत्तर समय की आवश्यकता थी और जब समय आया, श्री मोदी ने आगे से नेतृत्व किया। जहां कहीं भी एकता यात्रा गई उसको प्रभावशाली अभिवादन मिला। डॉ. जोशी ने राष्ट्रीय पुनरुद्धार की आवश्यकता पर

जोर दिया, जिसने भारत के लोगों के हृदय में एक स्थान बना लिया। दिल्ली में एक अंधी कांग्रेस सरकार के लिए एकता यात्रा के अलावा बेहतर आंखें खोलने वाला कोई और विकल्प नहीं हो सकता था। कहने की आवश्यकता नहीं, यात्रा की सफलता श्री नरेन्द्र मोदी के लिए मील का पत्थर थी, जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ी उनका संगठन कौशल अमूल्य सिद्ध हुआ। श्री मोदी ने स्वयं भारत के लोगों से छद्म धर्मनिरपेक्षता और वोट बैंक की राजनीति को ठोकर मारने के लिए निवेदन किया था। आखिरकार 26 जनवरी 1992 को श्रीनगर में तिरंगा फहराया गया। भारत माता की शक्ति ने पुनः एक बार फिर भारत विरोधी तत्वों की मंसूबों को नष्ट कर दिया। ■





नरेन्द्र मोदी और भाजपा संगठन

क्या आप जानते हैं कि चुनावी राजनीति में आने से पहले श्री नरेन्द्र मोदी ने कई साल तक भाजपा संगठन में काम किया। यहां वो अपने संगठन कौशल और जमीनी स्तर पर काम करने के लिए जाने जाते थे। इस बात ने उन्हें पार्टी कार्यकर्ताओं का प्रिय बना दिया।

श्री नरेन्द्र मोदी 1987 में भाजपा से जुड़े और उन्हें सबसे पहले जो जिम्मेदारियां दी गईं, उनमें 1987 के अहमदाबाद स्थानीय चुनाव के लिए प्रचार करना शामिल था। एक उत्साहपूर्ण प्रचार अभियान ने इस चुनाव में भाजपा की जीत पक्की कर दी।

वो 1990 में गुजरात विधानसभा चुनावों के लिए रणनीति बनाने वाली मुख्य टीम का हिस्सा थे। इस चुनाव के परिणामों ने एक दशक पुराने कांग्रेस शासन का अंत कर दिया। राज्य में कांग्रेस ने 1980 और 1985 में क्रमशः 141 और 149 सीटें जीती थीं, लेकिन इस बार कांग्रेस का आंकड़ा घटकर 33 सीटों पर आ गया। भाजपा को 67 सीटों पर सफलता मिली और

पार्टी श्री चिमनभाई पटेल के साथ गठबंधन सरकार में शामिल हुई। हालांकि ये गठबंधन कुछ समय तक ही चला, लेकिन भाजपा गुजरात में एक अजेय शक्ति के रूप में उभरकर सामने आई।

श्री नरेन्द्र मोदी 1995 के विधानसभा चुनावों के प्रचार अभियान में सक्रिय रूप से शामिल थे। इस बार भाजपा ने पहली बार सभी 182 सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला किया। नतीजे ऐतिहासिक रहे, पार्टी को 121 सीटों पर जीत मिली और भाजपा की सरकार बनी।

वर्ष 1996 में श्री मोदी भाजपा के राष्ट्रीय सचिव के रूप में दिल्ली आए और उन्हें पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर जैसे प्रमुख उत्तर भारतीय राज्यों का प्रभार सौंपा गया। वर्ष 1998 में भाजपा ने अपने बल पर हिमाचल में सरकार का गठन किया और हरियाणा (1996), पंजाब (1997) तथा जम्मू और कश्मीर में गठबंधन की सरकार बनाई। दिल्ली में मिले उत्तरदायित्व ने श्री मोदी को सरदार प्रकाश सिंह बादल, श्री बंसी लाल और श्री फारूक अब्दुल्ला जैसे नेताओं के साथ काम करने का अवसर दिया।

श्री मोदी को राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) की भूमिका सौंपी गई। इस महत्वपूर्ण पद पर इससे पहले श्री सुंदर सिंह भंडारी और कुशाभाऊ ठाकरे जैसे वरिष्ठ नेता रह चुके थे। राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) के रूप में 1998 और 1999 के लोकसभा चुनावों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। दोनों चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनी और उसने श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार बनाई।

संगठन में रहते हुए श्री मोदी ने नए नेतृत्व को तैयार किया, युवा कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाया और चुनाव प्रचार के लिए टेक्नालॉजी के इस्तेमाल पर भी जोर दिया। इस सब उपायों के जरिए उन्होंने पार्टी के उस सफर में अपना योगदान दिया, जो सफर दो सांसदों से बढ़कर 1998 से 2004 के बीच केंद्र में सरकार बनाकर देश की सेवा करने तक पहुंचा। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को शानदार सफलता प्राप्त हुई। ■

संगठन में रहते हुए श्री मोदी ने नए नेतृत्व को तैयार किया, युवा कार्यकर्ताओं का हौसला बढ़ाया और चुनाव प्रचार के लिए टेक्नालॉजी के इस्तेमाल पर भी जोर दिया।

अपने कार्य में आनंद लेना

ऐसा कैसे है कि श्री नरेन्द्र मोदी थकते नहीं? उनकी ऊर्जा का क्या स्रोत है कि वे सप्ताह दर सप्ताह, इतनी व्यस्त दिनचर्या के बावजूद, मशीनी सटीकता एवं उसी ऊंची गुणवत्ता के साथ कार्यपालन करते रहते हैं? यह ऐसा प्रश्न है जो प्रधानमंत्री के समर्थकों एवं उनका आलोचनात्मक विश्लेषण करने वाले, दोनों के द्वारा पूछा जाता रहा है।

यह प्रश्न उनसे सीधे तौर पर भी माईगोव के प्रथम टाउन हॉल कार्यक्रम में तथा हाल ही में दिल्ली के एक मीडिया हाउस के टी.वी. कार्यक्रम में भी पूछा गया। श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए उत्तर से न ही केवल उनकी व्यक्तिगत व्यवहारिक सोच झलकती है, बल्कि इसके दार्शनिक पहलू भी सामने आते हैं— थकान किसी मिशन की प्राप्ति के लिए की गई मेहनत से नहीं होती, बल्कि बच गए अपूर्ण कार्य के बारे में सोचकर होने वाली मानसिक चिंता से होती है। श्री राहुल जोशी को दिए गए साक्षात्कार में श्री मोदी ने अपने इस विचार को कुछ इस तरह से व्यक्त किया, “वास्तव में हम काम नहीं करने से थकते हैं, अपितु काम तो हमें संतुष्टि देता है। यह संतुष्टि हमें ऊर्जा देती है। मैंने हमेशा ऐसा ही महसूस किया है और अपने युवा दोस्तों को भी यही बताया है। आप अगर नई चुनौतियां स्वीकार करते रहें तो स्वयं आपके अंदर से ही आपको समर्थन मिलेगा। यह आपमें अंतर्निर्मित है।”

उनका मन्त्र सरल लेकिन अचूक है— यदि आप अपने काम में आनंद ले रहे हैं तो आप कभी भी थकावट नहीं महसूस करेंगे, क्योंकि आप तो वही कर रहे हैं जिसमें आपको आनंद आता है! ■



उत्कृष्ट प्रबंधन कौशल

श्री नरेन्द्र मोदी ने 6 अप्रैल, 2013 को अहमदाबाद में कार्यकर्ता महासम्मेलन के दौरान कार्यकर्ताओं से कहा—

“भाजपा की यात्रा भारत के लोगों के बीच आशा की किरण पैदा करने की यात्रा है। आज भाजपा जहां भी पहुंची है, वह एक व्यक्ति की वजह से नहीं है, बल्कि कार्यकर्ताओं की कई पीढ़ियों की कड़ी मेहनत, पसीने और बलिदान के कारण है। हमारे लिए देश हमेशा पार्टी से ऊपर रहेगा। भाजपा ‘प्रथम भारत’ के अपने आदर्श वाक्य के साथ आगे बढ़ती ही रहेगी।”

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, जिन्होंने एक पार्टी कार्यकर्ता के रूप में अपनी यात्रा आरंभ की और देश के सर्वोच्च पद तक पहुंचे, इसकी वजह यह है कि उनमें लगभग एक गुणी कलाकार की तरह संगठनात्मक

पर ध्यान केंद्रित करने के महत्व पर जोर देते हैं और अक्सर इसके बारे में बोलते भी हैं।

यह वह भाषण है जो कि श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद में उमस भरी सितम्बर की एक दोपहर को उस समय दिया था जब वे भाजपा की युवा शाखा यानी ‘भारतीय जनता युवा मोर्चा’ के कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के लिए मंच पर आसीन थे। इस भाषण का मुख्य संदेश बूथ प्रबंधन के महत्व पर केंद्रित था।

“बूथ प्रबंधन चुनाव के दौरान बहुत महत्वपूर्ण है। जिस तरह आप एक किला जीते बिना एक युद्ध नहीं जीत सकते, उसी तरह आप मतदान बूथ पर एक जीत हासिल किए बिना कोई चुनाव नहीं जीत सकते। मतदान बूथ पर विजयी होना चुनाव की असली परीक्षा है।”



भावना तथा किसी भी उत्तरदायित्व को कुशलता से सफलतापूर्वक निभाने की गहरी क्षमता कूट-कूट कर भरी है। यहां तक कि जब वे एक पार्टी कार्यकर्ता थे तब भी अपनी संगठनात्मक भूमिका के तौर पर किसी भी कार्यभार को लाजवाब तरीके से पूरा करने की अपनी योग्यता के लिए वे जाने जाते थे। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने उन्हें ऐसे क्षेत्रों में समस्याओं का निवारण करने के लिए भेजा जो कि पार्टी के विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण थे। जब भी उन्हें पार्टी में कोई जिम्मेदारी दी गई — चाहे वह किसी चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में एक रैली या एक चुनाव अभियान का आयोजन करना हो— वे हमेशा उम्मीद से अधिक खरे उतरे।

आज तक वह हर स्तर पर कार्यकर्ताओं की संगठनात्मक भूमिका

इसी भाषण में उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि पार्टी कार्यकर्ता खुशी और दुःख के समय लोगों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहें और व्यक्तिगत तौर पर उनके साथ निजी प्रगाढ़ता विकसित करें।

आज दुनिया एक गतिशील विकास पुरुष के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी को जानती है। जिन्होंने अपने गृह राज्य गुजरात के परिदृश्य को पूरी तरह बदल डाला है। लेकिन अपने ज़बर्दस्त प्रबंधन कौशल के कारण ‘मिट्टी को सोने में बदल देने वाला व्यक्ति’ होने की प्रतिष्ठा अर्जित करने से पहले उन्होंने भाजपा के लिए जिस भी क्षेत्र में काम किया, उसमें सफलता के नए प्रतिमान गढ़ दिए।

चुनावी राजनीति की जटिलताओं में कूदने के प्रति श्री मोदी की



अनिच्छा के बावजूद उन्हें 1987 में महासचिव के रूप में भाजपा में उनकी नियुक्ति हुई। उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और अनवरत् रूप से एक चुनाव के बाद दूसरा चुनाव जीतते रहे व भाजपा के दूसरे नेताओं की चुनाव जीतने में सहायता भी करते रहे।

नगर निगम चुनाव: छोटा लेकिन महत्वपूर्ण

1987 में भाजपा में शामिल होने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी की पहली परीक्षा अहमदाबाद में उसी साल हुए नगर निगम के चुनाव थे। हालांकि 1980 के दशक के प्रारंभ में भाजपा राजकोट और जूनागढ़ निगमों में सफलता का स्वाद चख चुकी थी और विधानसभा में कुछ सीटें भी जीत चुकी थी, फिर भी अहमदाबाद नगर निगम पर जीत हासिल करना राज्य में पैर जमाने की इच्छुक एक पार्टी के लिए आवश्यक था। संसद के साथ-साथ गुजरात विधान सभा और राज्य की लगभग हर पंचायत/निगम में मजबूती से जमी हुई कांग्रेस बुरी तरह बदनाम हो चुकी थी, लेकिन उसकी छल-बल की रणनीतियों के कारण उसे हरा पाना कठिन बना हुआ था।

इस चुनौती को अपने सिर पर लेते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे शहर को बारीकी से पढ़ा तथा भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास किए। अंत में, परिणाम वही निकले जो भाजपा चाहती थी। अहमदाबाद नगर निगम में सत्ताधारी पार्टी बनने के बाद भाजपा को आगामी वर्षों में लोगों की सेवा करने और अपने आधार का विस्तार करने का अवसर प्राप्त हुआ।

विधान सभा में सफलता: गांधीनगर में खिला कमल

श्री माधव सिंह सोलंकी और उनके वाम गठबंधन के नेतृत्व में कांग्रेस ने 1980 के विधानसभा चुनाव में 51.04% के वोट प्रतिशत के साथ राज्य में 141 सीटें जीतीं। भाजपा को केवल 9 सीटें मिलीं। श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद उपजी सहानुभूति लहर के साथ एक नए सामाजिक गठबंधन की युति का लाभ उठाते हुए श्री सोलंकी 149 सीटों तथा 55.55% वोट प्रतिशत के साथ कांग्रेस को एक और शानदार जीत दिलवाने में कामयाब रहे। भाजपा के लिए यह एक बार फिर से निराशा की घड़ी थी। पार्टी को अपने वोट प्रतिशत में मामूली सुधार (14.96%) के साथ मात्र 11 सीटों से ही संतोष करना पड़ा। फिर भी, कांग्रेस के पास किसी भी स्पष्ट नीति का अभाव था तथा वे सिर्फ आरक्षण को लेकर राजनैतिक खिलवाड़ करने तथा अनेक सामाजिक गठबंधनों को जोड़ने व तोड़ने के काम में माहिर थे। 1985 और 1988 के बीच के वर्षों में राज्य में गंभीर सूखा पड़ा। कई बम विस्फोटों से गुजरात का सामाजिक ढांचा छिन्न-भिन्न हो गया।

1990 के विधानसभा चुनाव के दौरान राज्य में जोरदार कांग्रेस विरोधी माहौल था, लेकिन पार्टी की छल-बल की रणनीतियां पहले की ही तरह कायम थीं। श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने काम का स्वरूप स्पष्ट कर लिया— लोगों से जनादेश प्राप्त करने के लिए उन्होंने एक मजबूत संगठन खड़ा करने का निश्चय किया जो पार्टी के राजनीतिक नेतृत्व

का पूरक बने। 27 फरवरी 1990 को कांग्रेस शासन के एक दशक के बाद, गुजरात में नए विधान सभा चुनाव हुए। चुनाव परिणामों ने 70 सीटों और 29.36% वोट प्रतिशत के साथ श्री चिमनभाई पटेल के जनता दल को महत्वपूर्ण स्थिति में ला दिया। भाजपा 67 सीटों और 26.69% वोट प्रतिशत के साथ दूसरे नंबर पर रही।

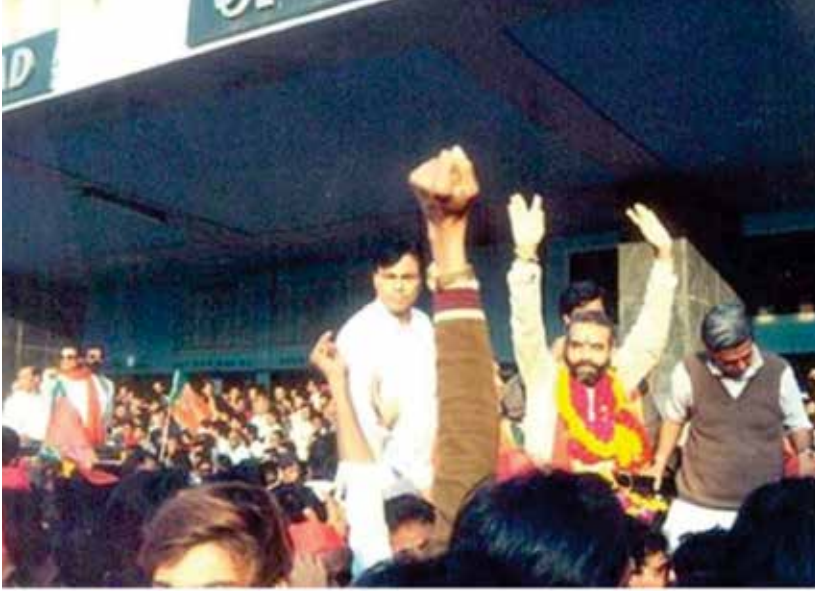
मुश्किल से अपनी उपस्थिति रखने वाली पार्टी से यहां तक पहुंच कर भाजपा ने एक ऐसी दुर्जेय शक्ति का रूप हासिल कर लिया, जिसे अब यहां लंबे समय तक मजबूती से बने रहना था। श्री नरेन्द्र मोदी के राज्य इकाई में एक आयोजक के रूप में बहुत सक्रिय रहने के दौरान गुजरात भाजपा के सामने आने वाली दूसरी परीक्षा की घड़ी 1995 के विधानसभा चुनाव थे। 1995 के चुनावों में यह पहली बार हुआ था कि जब भाजपा ने सभी 182 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ा था। यह भी पहली बार था कि पार्टी कांग्रेस से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ रही थी। गुजरात की जनता ने भाजपा को 121 सीटों पर जीत के रूप में ज़बर्दस्त विजय दिलवाई। भाजपा का वोट प्रतिशत 42.51% तक बढ़ गया। कांग्रेस के लिए यह निराशाजनक समय था। उसे केवल 45 सीटों पर कामयाबी मिली थी। श्री नरेन्द्र मोदी ने सफलतापूर्वक संगठन को मजबूत किया और कांग्रेस के किले में कई दरारों को उजागर किया।

1996 में भाजपा के विद्रोही नेताओं द्वारा कांग्रेस से गठबंधन कर सरकार का गठन किया गया। परन्तु 1998 के विधानसभा चुनावों में पार्टी ने सरकार में अपनी वापसी की। 1998 से 2001 तक समय गुजरात राज्य के लिए कठिनाइयों भरा रहा। बाढ़, तूफान, सूखा एवं कच्छ में आये विनाशकारी भूकंप के कारण जनता में असंतोष का माहौल बनने लगा था। इन विपरीत परिस्थितियों में दिनांक 7 अक्टूबर 2001 को श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। एक ऐसा सामाजिक कार्यकर्ता जिसने हमेशा स्वयं को सत्ता की राजनीति दूर रखा, उस कार्यकर्ता के सामने सिर्फ यह लक्ष्य था कि गुजरात में भाजपा सरकार को जनसेवा के कार्यों में और अधिक मजबूती से लगाया जाय। राज्य में मार्च 2003 में विधानसभा के चुनाव संभावित थे एवं विश्लेषकों की नजर में यह एक कठिन लक्ष्य जान पड़ता था। गोधरा एवं उसके बाद राज्य में और अधिक मजबूती से लगाया जाय। हुई अप्रिय घटनाओं के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने यह निश्चय किया कि राज्य का समग्र विकास ही प्रदेश की जनता को सही मायने में राहत प्रदान करेगा। भाजपा समग्र विकास की अवधारणा के प्रति समर्पित पार्टी है एवं श्री नरेन्द्र मोदी ने इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए दिसंबर 2002 में विधानसभा को भंग करते हुए फिर से जनादेश प्राप्त करने का निर्णय लिया। चुनाव अभियान के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी को मीडिया एवं विपक्षी राजनैतिक दलों द्वारा लक्ष्य बनाकर अपमानित करने का प्रयास किया जाता रहा। राजनैतिक पंडितों द्वारा एवं सर्वेक्षण में इस चुनाव को कांग्रेस के पक्ष में प्रचारित किया गया। श्री नरेन्द्र मोदी ने इस चुनाव अभियान को सक्षम नेतृत्व प्रदान करते हुए कड़ी मेहनत की एवं सम्पूर्ण राज्य का दौरा कर आशा की नई किरण दिखाई। विपरीत परिस्थितियों के उपरान्त भी भाजपा ने इस



चुनाव में शानदार प्रदर्शन करते 49.85 प्रतिशत मत प्राप्त करते हुए 127 सीटों पर जीत दर्ज की। इस चुनाव में कांग्रेस को मात्र 51 सीटें ही प्राप्त हुईं।

वर्ष 2002-2007 के मध्य श्री नरेन्द्र मोदी ने विकासोन्मुख एवं स्वच्छ प्रशासन के माध्यम से गुजरात के विकास में नए आयाम जोड़े। इस सफल कार्यकाल के कारण विपक्षी दलों एवं उसके नेताओं में हताशा का वातावरण बन गया। इसी हताशा में वर्ष 2007 के विधानसभा चुनाव के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी पर फिर से व्यक्तिगत हमले किए गए। कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा उन्हें 'मौत का सौदागर' तक बोला गया, परन्तु इस सब से अलग श्री नरेन्द्र मोदी ने अपना ध्यान अपनी विकास योजनाओं एवं गुजरात के समग्र विकास के मिशन पर ही केंद्रित किया। अंततः गुजरात की जनता ने उन्हें अपना आशीर्वाद देते हुए 49.12 प्रतिशत मत के साथ भाजपा को 117 सीटों पर विजय दिलाई। इस चुनाव में भी कांग्रेस की करारी हार हुई एवं उसको मात्र 49 सीटें ही प्राप्त हुईं। वर्ष 2012 के विधानसभा चुनावों में भी गुजरात की जनता ने श्री नरेन्द्र मोदी को उत्साहजनक आशीर्वाद प्रदान किया एवं भाजपा ने तीसरी बार श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बड़ी जीत दर्ज की। वर्ष 2001 से हाल तक गुजरात में पंचायत, नगर पालिकाओं एवं हर स्तर के चुनावों में भाजपा ने अपनी जीत दर्ज की है। इतने वर्षों में श्री नरेन्द्र मोदी ने अथक परिश्रम, लगन एवं सक्षम नेतृत्व के माध्यम से प्रत्येक चुनाव अभियान को अभिनव तरीके से संपादित किया एवं भाजपा की जीत सुनिश्चित की।



लोकसभा चुनाव

श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने संगठनात्मक कौशल का परिचय देते हुए लोकसभा चुनावों में गुजरात से सर्वाधिक संसद सदस्यों की जीत सुनिश्चित की। वर्ष 1984 में भाजपा ने गुजरात में मात्र 1 सीट पर विजय प्राप्त की थी परन्तु 1989 के चुनाव में यह संख्या बढ़ कर 12 हुई एवं 1991 के चुनाव में गुजरात से 20 लोकसभा सांसद चुन कर आये।

1996, 1998 एवं 1999 में हुए लोकसभा चुनावों में भाजपा को 20 से ज्यादा संसदीय क्षेत्रों में विजय प्राप्त हुई। श्री नरेन्द्र मोदी के अथक प्रयासों से 2004 एवं 2009 के चुनावों में भी भाजपा को

उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई।

राजनैतिक यात्राएं – राष्ट्र को सर्वोच्च प्राथमिकता

गुजरात भाजपा के महामंत्री के पद पर रहते हुए श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वर्ष 1987 में 'न्याय यात्रा' एवं 1989 में 'लोकशक्ति यात्रा' का आयोजन किया गया। इन यात्राओं के माध्यम से गुजरात की जनता को कांग्रेस के भ्रष्ट शासन के खिलाफ आंदोलन मुखर करने का अवसर मिला।

राष्ट्रीय स्तर पर भी श्री नरेन्द्र मोदी ने 'सोमनाथ से अयोध्या' की श्री लालकृष्ण आडवाणी की रथ यात्रा एवं डॉ. मुरली मनोहर जोशी की 'एकता यात्रा' के सफल संचालन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि एकता यात्रा उस समय आयोजित की गई जब कश्मीर घाटी में आतंकवाद चरम पर था और घाटी में आतंकवादियों

द्वारा भय का ऐसा माहौल बना दिया गया था कि घाटी में तिरंगा फहराने से भी लोग डरते थे। इस हेतु श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सम्पूर्ण यात्रा कार्यक्रम के स्थानों का व्यक्तिगत स्तर पर अवलोकन कर सफलता सुनिश्चित की गयी।

इतने बड़े एवं भव्य स्तर पर यात्राओं का आयोजन हमेशा से ही चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। यात्रा मार्ग के निर्धारण से लेकर यात्रा की सम्पूर्ण योजना एवं उसके सफल क्रियान्वयन की

जिम्मेदारी यात्रा के आयोजकों की रहती है एवं श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस कार्य को पूर्ण सफलता के साथ सम्पादित किया जाता रहा है। बतौर मुख्यमंत्री भी श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कई यात्राओं का आयोजन किया गया। वर्ष 2012 में स्वामी विवेकानंद के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से उनके द्वारा विवेकानंद युवा विकास यात्रा का आयोजन सम्पूर्ण गुजरात में किया गया।

उत्तर भारत में सफल नेतृत्व

वर्ष 1995 में श्री नरेन्द्र मोदी को भाजपा के राष्ट्रीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। राष्ट्रीय सचिव के रूप में उन्हें जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा एवं चंडीगढ़ जैसे राज्यों का प्रभार दिया गया था। इन सभी राज्यों में भाजपा की स्थिति कमजोर थी



एवं संगठन हताश स्थिति में था। पंजाब एवं जम्मू-कश्मीर पिछले 15 वर्षों से आतंकवाद के शिकार थे। वर्ष 1987 में जम्मू एवं कश्मीर में अनुचित तरीके से चुनाव संपन्न करवाए गए, वहीं सम्पूर्ण विपक्ष द्वारा 1992 के पंजाब विधानसभा चुनावों का बहिष्कार किया गया। हरियाणा में कांग्रेस का एकछत्र राज था एवं हिमाचल प्रदेश में 1993 में भाजपा को सफलता नहीं मिल पाई थी।

इन विपरीत परिस्थितियों में श्री नरेन्द्र मोदी से अपने संगठन कौशल एवं सूझबूझ से कार्य किया। हरियाणा में 1996 के विधानसभा चुनावों के पूर्व भाजपा ने श्री बंसीलाल की हरियाणा विकास पार्टी के साथ गठबंधन करते हुए सत्ता में वापसी की। इस चुनाव में गठबंधन को 44 क्षेत्रों में विजय प्राप्त हुई। भाजपा ने 25 क्षेत्रों में चुनाव लड़ते हुए 11 क्षेत्रों में जीत दर्ज की। उल्लेखनीय है कि 1991 के चुनाव में भाजपा ने 90 सीटों में से 89 क्षेत्रों में चुनाव लड़ते हुए मात्र 2 स्थानों पर विजय प्राप्त की थी। चौधरी देवी लाल एवं श्री बंसी लाल के साथ गठबंधन को असंभव माना जाता था, लेकिन श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी राजनैतिक समझ और दक्षता का परिचय देते हुए यह असंभव कार्य

भी कुशलतापूर्वक संपन्न किया। आतंकवाद के कारण जम्मू एवं कश्मीर की स्थिति राजनैतिक तौर पर बहुत ही संवेदनशील रही है। वर्ष 1987 में हुए चुनाव पक्षपातपूर्ण एवं विवादित परिस्थितियों के लिए जाने जाते रहे हैं एवं 1990 से राज्य राष्ट्रपति शासन के अंतर्गत रहा था। 1996 में विधानसभा चुनावों में श्री फारूख अब्दुल्ला के नेतृत्व में नेशनल कांफ्रेंस ने बहुमत प्राप्त किया एवं 87 में से 57 क्षेत्रों में विजय प्राप्त की। इन चुनावों में भाजपा 8 सीटों के साथ दूसरे नंबर पर रही एवं वह कांग्रेस एवं जनता दल जैसी पार्टियों से ज्यादा स्थान पाने में सफल रही। श्री नरेन्द्र मोदी के प्रभार वाले एक अन्य राज्य हिमाचल प्रदेश में पूरी तरह से अलग राजनैतिक परिस्थितियां थी। वर्ष 1990 में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा ने 46 सीटें प्राप्त कर सरकार का गठन किया था, परन्तु 1992 में यह सरकार बर्खास्त कर दी गयी। 1993 में हुए चुनावों में भाजपा को भारी नुकसान उठाना पड़ा एवं वह मात्र 8 सीटें ही बचा पाने में सफल रही। 1998 में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा एवं कांग्रेस दोनों दलों को 31-31 सीटें प्राप्त हुई एवं श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने राजनैतिक कौशल कर परिचय देते हुए पूर्व टेलीकॉम मंत्री श्री सुखराम की हिमाचल विकास कांग्रेस के साथ तालमेल कर श्री प्रेम कुमार धूमल को राज्य का मुख्यमंत्री बनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं राज्य में एक नए नेतृत्व के हाथ में बागडोर सौंपी। आगे चलकर श्री धूमल के नेतृत्व में 2007 में भाजपा को पूर्ण बहुमत दिलाते हुए पार्टी विजयी हुई।

अशांति से ग्रस्त पंजाब में श्री नरेन्द्र मोदी ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। वर्ष 1997 में हुए विधानसभा चुनाव में अकाली-भाजपा गठबंधन ने 117 में से 93 सीटों पर सफलता प्राप्त की। भाजपा ने 22 में से 18 क्षेत्रों में अपना परचम फहराया एवं रिकॉर्ड 48.22 प्रतिशत मत प्राप्त किए। इसके लगभग एक वर्ष पूर्व चंडीगढ़ स्थानीय निकाय के चुनावों में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने तीन-चौथाई बहुमत प्राप्त कर रिकॉर्ड बनाया था। यहां यह उल्लेखनीय है कि चंडीगढ़ एक केंद्रशासित क्षेत्र है एवं वहां पर कुछ सदस्यों को उप राज्यपाल द्वारा नामांकित किया जाता है, जिन्हें गैर-भाजपा सरकार ने नियुक्त किया था। श्री नरेन्द्र मोदी ने विस्तृत एवं योजनाबद्ध तरीके से श्री सत्यपाल जैन को आगे बढ़ाया एवं 1998 के लोकसभा चुनाव में श्री जैन ने श्री पवन कुमार बंसल को पराजित किया।

श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी संगठनात्मक कार्य क्षमता का परिचय विभिन्न लोकसभा चुनावों के समय भी दिया है। उनके प्रभार वाले राज्यों में तीन बार हुए लोकसभा चुनावों में पार्टी ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। अपने प्रभार के अंतर्गत हुए प्रथम लोकसभा चुनाव में पार्टी को जम्मू एवं कश्मीर में 1, हरियाणा में 4 सीटें प्राप्त हुईं, परन्तु पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश में पार्टी अपना खाता भी नहीं खोल पायी। इसके उपरान्त श्री नरेन्द्र मोदी ने पार्टी के स्तर पर सफलतापूर्वक कार्य करते हुए 1999 में हुए चुनाव में जम्मू एवं कश्मीर में दो, हिमाचल प्रदेश में तीन, पंजाब में एक एवं हरियाणा में पांच सीटों पर विजय प्राप्त की।

श्री नरेन्द्र मोदी को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) का दायित्व वर्ष 1998 में दिया गया। भाजपा में संगठन के राष्ट्रीय महासचिव का पद अत्यंत महत्वपूर्ण होता है एवं इसमें पूरे देश में पार्टी की गतिविधियों के समन्वय का कार्य प्रमुख होता है। श्री नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) के पद पर रहते समय ही भाजपा ने 182 लोकसभा सीटों पर विजय प्राप्त की थी।

जून 2013 में श्री नरेन्द्र मोदी को 2014 के लोकसभा में चुनाव अभियान की महती जिम्मेदारी दी गयी एवं 13 सितम्बर 2013 को उन्हें भारतीय जनता पार्टी की तरफ से प्रधानमंत्री पद उम्मीदवार घोषित किया गया। 2014 के लोकसभा चुनाव में श्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन किया। उसके पश्चात् 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की।

श्री नरेन्द्र मोदी ने छोटे से छोटे काम से लेकर पंचायतों एवं लोकसभा के चुनावों का सफलतापूर्वक संचालन किया है। अपने कौशल, परिश्रम एवं लगन के बल पर श्री मोदी ने विपरीत परिस्थितियों में भी संगठन को नयी ऊंचाइयां प्रदान की हैं। ■

श्री नरेन्द्र मोदी ने छोटे से छोटे काम से लेकर पंचायतों एवं लोकसभा के चुनावों का सफलता पूर्वक संचालन किया है। अपने कौशल, परिश्रम एवं लगन के बल पर श्री मोदी ने विपरीत परिस्थितियों में भी संगठन को नयी ऊंचाइयां प्रदान की हैं।

लालकिले की प्राचीर से...



अनुक्रम

- 36 2014 - मैं आपके बीच प्रधानसेवक के रूप में उपस्थित हूं
- 38 2015 - भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है
- 40 2016 - सशक्त समाज बनता है सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर
- 42 2017 - न गाली से, न गोली से, परिवर्तन होगा गले लगाने से
- 44 2018 - देश आज आत्मविश्वास से भरा हुआ है
- 46 2019 - हम समस्याओं को न टालते हैं, न पालते हैं
- 48 2020 - 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना होगी साकार

‘मैं आपके बीच प्रधानसेवक के रूप में उपस्थित हूँ’

68वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2014 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2014 को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित किया। उनके भाषण की देशभर में भरपूर प्रशंसा हुई और इससे लोगों में उत्साह और विश्वास का संचार हुआ। हम यहां उनके भाषण के मुख्य बिन्दु प्रकाशित कर रहे हैं:-

- इस आजादी के पावन पर्व पर प्यारे देशवासियों को भारत के प्रधान सेवक की अनेक-अनेक शुभकामनाएं। मैं आपके बीच प्रधानमंत्री के रूप में नहीं, प्रधान सेवक के रूप में उपस्थित हूँ।
- स्वतंत्रता दिवस हमारे देश के गरीब, पीड़ित, दलित, शोषित समाज के पिछड़े हुए सभी लोगों के कल्याण का, उनके लिए कुछ न कुछ कर गुजरने का संकल्प लेने का पर्व है।
- ये देश को शासकों ने नहीं, किसानों ने, मजदूरों ने, माताओं-बहनों ने, नौजवानों ने, ऋषियों-मुनियों, आचार्यों, शिक्षकों ने, वैज्ञानिकों ने और समाज सेवकों ने बनाया है।
- एक छोटे से नगर का गरीब परिवार का एक बालक आज लाल किले की प्राचीर से भारत के तिरंगे के सामने सिर झुकाने के लिए उसने सौभाग्य प्राप्त किया है। यह भारत के लोकतंत्र की ताकत है। भारत के संविधान रचयिताओं का दिया हुआ अनमोल सौभाग्य है। भारत के संविधान निर्माताओं को नमन करता हूँ।
- हम साथ चलें, मिलकर चलें, मिलकर सोचें, मिलकर संकल्प करें, और मिलकर के हम देश को आगे बढ़ाएं, इस मूलमंत्र को लेकर के सवा सौ करोड़ देशवासियों ने देश को आगे बढ़ाया है।
- हम बहुमत के बल पर चलने वाले लोग नहीं हैं। हम सहमति के मजबूत धरातल पर आगे बढ़ना चाहते हैं।



- लालकिले के प्राचीर से गर्व के साथ मैं सभी सांसदों का, सभी राजनीतिक दलों का भी अभिवादन करता हूँ। जहां हम सहमति के मजबूत धरातल पर राष्ट्र को आगे ले जाने के महत्वपूर्ण प्रयोग करके हमने कल संसद के सत्र का समापन किया।
- जब दिल्ली आकर कर एक इनसाइडर व्यू देखा, तो ऐसा लगा जैसे एक सरकार के अंदर भी दर्जनों अलग-अलग सरकारें चल रही हैं। हरेक की अपनी-अपनी जागीरें बनी हुई हैं। मुझे बिखराव नजर आया, मुझे टकराव नजर आया। मैंने कोशिश प्रारंभ की है कि सरकार एक ऑर्गेनिक यूनिट बने।

• जन सामान्य की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए शासन, व्यवस्था नाम का जो पुर्जा है, जो मशीन है उसको और धारदार और तेज बनाना है

• चपरासी से लेकर के कैबिनेट सेक्रेटरी तक हर कोई सामर्थ्यवान है। हरेक की शक्ति व अनुभव है। मैं उस शक्ति को जगाना चाहता हूँ। मैं उस शक्ति को जोड़ना चाहता हूँ और उस शक्ति के माध्यम से राष्ट्र कल्याण की गति को तेज करना चाहता हूँ और मैं करके रहूंगा।

• हमारे महापुरुषों ने आजादी दिलाई, क्या उनके सपनों के भारत के लिए हमारा भी कोई कर्तव्य है या नहीं,

हमारा भी कोई राष्ट्रीय चरित्र है या नहीं है, उस पर अब गंभीरता से सोचने का समय आ गया है।

- क्या सवा सौ करोड़ देशवासियों का मंत्र नहीं होना चाहिए कि जीवन का हर कदम देश हित में हो।
- बेटी से तो सैकड़ों सवाल मां-बाप पूछते हैं, क्या कभी मां-बाप ने अपने बेटों से पूछने की हिम्मत की है। आखिर बलात्कार करने वाला किसी न किसी का बेटा तो है।
- आजादी के बाद भी कभी जातिवाद का जहर, कभी साम्प्रदायिकता



का जहर, ये पापाचार कब तक चलेगा? किसका भला होगा?

- मैं देश के नौजवानों से आह्वान करता हूँ कि जातिवाद का जहर हो, साम्प्रयिकता का जहर हो, प्रांतवाद का जहर हो ऊंच-नीच का भाव ये देश को आगे बढ़ाने में रुकावट है। एक बार मन में तय करो, 10 साल के लिए मोरिटोरियम ट्राई करो, 10 साल तक हम इन सारे तनावों से मुक्त समाज की ओर जाना चाहते हैं।
- हमारा देश विश्व का सबसे नौजवान देश है। देश को विकास की ओर आगे बढ़ाना है तो स्किल डेवलपमेंट हमारा मिशन है।
- आप कल्पना कीजिए सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम आगे चलें तो ये देश सवा सौ करोड़ कदम आगे चला जाएगा।
- मैं ऐसे नौजवानों को भी तैयार करना चाहता हूँ, जो जॉब क्रिएटर हों।
- अगर हमें नौजवानों को ज्यादा से ज्यादा रोजगार देना है तो हमें मैनुफैक्चरिंग सेक्टर को बढ़ावा देना होगा।
- देश के लिए हमारा सपना है डिजिटल इंडिया। जब मैं डिजिटल इंडिया कहता हूँ तब यह बड़े लोगों की बात नहीं है, यह गरीब के लिए है।
- एक जमाना था जब कहा जाता था कि रेलवे देश को जोड़ती है, ऐसा कहा जाता था। मैं कहता हूँ आज आई-टी देश को जन-जन को जोड़ने की ताकत रखती है।
- हम टूरिज्म को बढ़ावा देना चाहते हैं। टूरिज्म से गरीब से गरीब व्यक्ति को रोजगार मिलता है। चना बेचने वाला, आँटो रिक्शा वाला, पकौड़े बेचने वाला और चाय बेचने वाला भी कमाता है। जब चाय बेचने वाले की बात आती है तो मुझे अपनापन महसूस होता है।
- राष्ट्र के चरित्र के रूप में भी सबसे बड़ी रुकावट है— हमारे चारों ओर दिखाई दे रही गंदगी। मैंने यहां आकर के सरकार में सबसे पहला काम सफाई का किया। लोगों को आश्चर्य हुआ कि क्या यह प्रधानमंत्री का काम है। मेरे लिए तो बहुत बड़ा काम है।
- हम तय करें कि 2019 में जब महात्मा गांधी के 150वीं जयंती मनाएंगे, हमारा गांव, हमारा शहर, हमारा देश, हमारा मोहल्ला, हमारे स्कूल, हमारे मंदिर, हमारे अस्पताल, सभी क्षेत्र में गंदगी का नामोनिशान नहीं रहने देंगे, ये सरकार से नहीं होता है। जनभागीदारी से होता है।
- आज हमारी माताओं बहनों को खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है, क्या हम ये चाहते हैं? क्या ये हम सबका दायित्व नहीं है? हमें

कम से कम शौचालय का प्रबंध करना चाहिए।

- मुझे स्वच्छ भारत का अभियान इसी 2 अक्टूबर से आरम्भ करना है और चार साल के भीतर हम इस काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं।
- एक काम तो मैं आज ही शुरू करना चाहता हूँ वो है हिंदुस्तान के सभी स्कूलों में टॉयलेट हो, बच्चियों के लिए अलग टॉयलेट हो तभी तो हमारी बच्चियां स्कूल छोड़कर भागेगी नहीं और मैं एमपी फंड का उपयोग करने वाले सांसदों से आग्रह करता हूँ कि एक साल के लिए अपना धन स्कूलों में टॉयलेटों को बनाने में खर्च कीजिए।
- अगले 15 अगस्त को जब हम यहां खड़े हों तो विश्वास के साथ खड़े हों, तब हिंदुस्तान का कोई स्कूल ऐसा ना हो जहां बच्चे और बच्चियों के लिए अलग टॉयलेटों का निर्माण होना बाकी हो।
- हमारे संघीय ढांचे को विकास की धरोहर के रूप में काम लेना, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री की टीम फोर्मेशन हो, केंद्र और राज्य की टीम बनकर आगे चलें, तो इसलिए अब प्लानिंग कमीशन के नए रंगरूप को सोचना पड़ेगा।
 - राज्य सरकारों को, संघीय ढांचे को ताकतवर बनाना, एक ऐसे नए रंगरूप के साथ, नए शरीर नई आत्मा के साथ, नई दिशा के साथ, नए विश्वास के साथ नए इंस्टिट्यूशन का हम निर्माण करेंगे। बहुत ही जल्द योजना आयोग की जगह पर यह नए इंस्टिट्यूट काम करें, दिशा में हम आगे बढ़ने वाले हैं।
- क्यों न हम सार्क देशों के सभी साथी को मिलाकर के गरीबी के खिलाफ लड़ाई-लड़ने की योजना बनाएं। हम मिलकर लड़ाई लड़े। गरीबी को परास्त करें।
- मैं भूटान गया, नेपाल गया, सार्क देशों के सभी महानुभाव शपथ समारोह में आए। एक बहुत अच्छी हमारी शुरुआत हुई। निश्चित रूप से अच्छे परिणाम मिलेंगे।
- मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ अगर आप 12 घंटे काम करेंगे तो मैं 13 घंटे काम करूंगा। क्यों, क्योंकि मैं प्रधानमंत्री नहीं, प्रधान सेवक के रूप में आपके बीच आया हूँ। मैं शासक के रूप में नहीं सेवक के रूप में सरकार लेकर आया हूँ।
- मैं देश के सुरक्षाबलों को, अर्धसैनिक बलों को, देश की सभी सिक्स्योरिटी फोर्सेस को मां भारती की रक्षा के लिए उनकी तपस्या, उनके त्याग, उनके बलिदान, उनका गौरव करता हूँ। ■

एक काम तो मैं आज ही शुरू करना चाहता हूँ, वो है हिंदुस्तान के सभी स्कूलों में टॉयलेट हो, बच्चियों के लिए अलग टॉयलेट हो तभी तो हमारी बच्चियां स्कूल छोड़कर भागेगी नहीं और मैं एमपी फंड का उपयोग करने वाले सांसदों से आग्रह करता हूँ कि एक साल के लिए अपना धन स्कूलों में टॉयलेटों को बनाने में खर्च कीजिए।

‘भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है’

69वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2015 को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 69वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा कि 15 अगस्त का यह सवेरा मामूली सवेरा नहीं है। यह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का स्वातंत्र्य पर्व का सवेरा है। यह सवेरा, सवा सौ करोड़ देशवासियों के सपनों का सवेरा है। यह सवेरा सवा सौ करोड़ देशवासियों के संकल्प का सवेरा है और ऐसे पावन पर्व पर जिन महापुरुषों के बलिदान के कारण, त्याग और तपस्या के कारण सदियों तक भारत की अस्मिता के लिए जूझते रहे, अपने सर कटवाते रहे, जवानी जेल में खपाते रहे, यातनाएं झेलते रहे, लेकिन सपने नहीं छोड़े, संकल्प नहीं छोड़े। ऐसे आजादी के स्वतंत्रता सेनानियों को मैं आज कोटि-कोटि वंदन करता हूँ। पिछले दिनों हमारे देश के अनेक गणमान्य नागरिकों ने, अनेक युवकों ने, साहित्यकारों ने, समाजसेवियों ने, चाहे वो बेटा हो या बेटा हो, विश्व भर में भारत का माथा ऊंचा करने का अभिनंदनीय कार्य किया है। अननितगत वो लोग हैं, जिनको मैं आज लालकिले के प्राचीर से भारत का माथा ऊंचा करने के लिए हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ, अभिनंदन करता हूँ।



- इस अवसर पर श्री मोदी ने कहा कि किस तरह राजग सरकार की पहल से शासन के विभिन्न पक्षों से भ्रष्टाचार समाप्त हुआ है। उन्होंने इस संदर्भ में कोयला, स्पेक्ट्रम तथा एफएम रेडियो लाइसेंस की नीलामी की चर्चा की। उन्होंने एलपीजी सब्सिडी के प्रत्यक्ष अंतरण के लिए ‘पहल’ योजना की चर्चा की जिससे 15 हजार करोड़ रुपए की बचत हुई है। उन्होंने कहा कि नीम चढ़ी यूरिया से सब्सिडी यूरिया को गैर कृषि उद्देश्यों में लगाने के काम को रोकने में मदद मिली है। हालांकि उन्होंने स्वीकार किया कि आम जन को अभी भी भ्रष्टाचार के कारण समस्याओं

का सामना करना पड़ रहा है। प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार को दीमक बताते हुए कहा कि इसके इलाज के लिए साइट इफेक्ट के प्रभाव के साथ कड़वी दवा की जरूरत है। प्रधानमंत्री ने सरकार के विभिन्न प्रयासों का उल्लेख करते हुए कहा कि कैसे इन प्रयासों से बिचैलियों को समाप्त कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि सीबीआई ने पिछले वर्ष भ्रष्टाचार के 1,800 मामलों दर्ज हुये, जबकि इससे पहले के वर्ष में 800 मामले दर्ज हुये थे।

- प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि सरकार बनने के पहले दिन सुप्रीम कोर्ट मार्गदर्शन में एसआईटी बना दी। तीन साल से लटका हुआ काम हमने पहले ही सप्ताह में पूरा कर दिया, वो एसआईटी आज काम कर रही है। मैं जी-20 समिट में गया, दुनिया के वो देश वहां मौजूद थे, जिनकी मदद से काला धन वापस आ सकता है। जी-20 समिट में भारत के आग्रह पर काले धन के खिलाफ प्रस्ताव किया गया और हर देश एक-दूसरे को मदद करेगा, काला धन देशों को वापस पहुंचाने के लिए संकल्प लिया गया। उन्होंने कहा कि हमने विश्व के कई देशों के साथ काले धन की जानकारी प्राप्त करने हेतु संधियों की है, ताकि वे देश अपने पास भारतीय नागरिकों के काले धन की जानकारीयों हमें शीघ्र उपलब्ध कराते रहें।
- उन्होंने कहा कि 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती हम मनाने वाले हैं और महात्मा गांधी की 150वीं जयंती स्वच्छ भारत को हमें उन्हें अर्पित करना है। महात्मा गांधी को 150वीं जयंती पर इससे बड़ी कोई श्रद्धांजलि नहीं हो सकती और इसलिए अभी तो काम शुरू हुआ है लेकिन मुझे इसको आगे बढ़ाना है। इसको रोकना नहीं है, संतोष मानना नहीं है।
- प्रधानमंत्री ने कहा कि काले धन के खिलाफ अभियान चलाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं और विदेशों में जाने



वाली बिना हिसाब किताब की आय को रोक दिया गया है। प्रधानमंत्री ने किसानों के कल्याण की जरूरत पर जोर दिया और घोषणा की कि कृषि मंत्रालय का कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार का जोर कृषि उत्पादकता बढ़ाने, बिजली उपलब्ध कराने तथा किसानों को सिंचाई सुविधा देने पर है। उन्होंने कहा कि 50,000 करोड़ रुपये के आबंटन के साथ प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना लॉन्च की गई है।

- प्रधानमंत्री ने पिछले वर्ष के स्वतंत्रता दिवस के अपने संबोधन में व्यक्त कुछ संकल्पों की भी याद दिलायी। उन्होंने कहा कि सभी स्कूलों में शौचालय बनाने का वायदा राज्यों के सहयोग से लगभग पूरा कर लिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जन-धन योजना में 17 करोड़ बैंक खाते खोले जाने से वित्तीय समावेशन को बढ़ा प्रोत्साहन मिला है। उन्होंने कहा कि जनधन खातों में जमा 20 हजार करोड़ रुपये गरीबों की अमीरी दिखाते हैं।
- प्रधानमंत्री ने अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना सहित सरकार द्वारा शुरू की गई कल्याणकारी योजनाओं की भी चर्चा की। प्रधानमंत्री ने बच्चों को स्वच्छ भारत अभियान का सबसे बड़ा ब्रांड एम्बेस्डर बताया और कहा कि इस अभियान से भारत के लोगों में गहरी रुचि पैदा हुई।

सरकार बनने के पहले दिन सुप्रीम कोर्ट मार्गदर्शन में एसआईटी बना दी। तीन साल से लटका हुआ काम हमने पहले ही सप्ताह में पूरा कर दिया, वो एसआईटी आज काम कर रही है। मैं जी-20 समिट में गया, दुनिया के वो देश वहां मौजूद थे, जिनकी मदद से काला धन वापस आ सकता है।

प्रधानमंत्री ने 'स्टार्ट-अप इंडिया' कार्यक्रम की घोषणा की। यह कार्यक्रम भारत के युवाओं में उद्यमिता को प्रोत्साहित करेगा। उन्होंने कहा कि 1.25 लाख बैंक शाखाओं में से प्रत्येक शाखा को एक दलित या एक आदिवासी उद्यमी या कम से कम एक महिला उद्यमी को प्रोत्साहन देना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा 'स्टार्ट-अप इंडिया', 'स्टैंड-अप इंडिया'। पूर्व सैनिकों की 'एक रैंक, एक पेंशन' की पुरानी मांग के बारे में प्रधानमंत्री ने दोहराया कि इस मांग को सरकार द्वारा सिद्धान्त रूप में

स्वीकार कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि हितधारकों के साथ तौर-तरीके तैयार किये जा रहे हैं। उन्होंने सकारात्मक परिणाम की आशा व्यक्त की।

- प्रधानमंत्री ने 2022 तक भारत को सभी के लिए मकान तथा बिजली जैसे बुनियादी सुविधायें देकर विकसित देश बनाने का सरकार के संकल्प को दोहराया। उन्होंने आने वाले एक हजार दिनों में बिजली से वंचित 18,500 गांवों को बिजली कनेक्शन से जोड़ने के सरकार के संकल्प को व्यक्त किया। उन्होंने पूर्वी भारत के विकास के विजन को भी व्यक्त किया।
- प्रधानमंत्री ने कनिष्ठ स्तर पर भर्तियों में साक्षात्कार के व्यवहार पर प्रश्न उठाते हुए संबद्ध विभागों से जल्द से जल्द इस व्यवहार को समाप्त करने तथा पारदर्शी ऑनलाइन प्रक्रियाओं के जरिये भर्ती करके मेधा को प्रोत्साहित करने को कहा। ■

एक सफल व्यक्ति को बहुत बड़ी निशानी होती है कि वो अपनी स्किल बढ़ाने का कोई भी मौका जाने ना दे। इतना ही नहीं, मौका ढूँढ़ता रहे। Skill के प्रति अगर आप में आकर्षण नहीं है, कुछ नया सीखने की ललक नहीं है तो जीवन ठहर जाता है। एक रुकावट सी महसूस होती है। एक प्रकार से वो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को, अपनी Personality को ही बोझ बना लेता है और खुद के लिए नहीं, अपने स्वजनों के लिए भी बोझ बन जाता है। वहीं skill के प्रति आकर्षण, जीने की ताकत देता है, जीने का उत्साह देता है। Skill सिर्फ रोजी-रोटी और पैसे कमाने का जरिया नहीं है। जिंदगी में उमंग चाहिए, उत्साह चाहिए, जीने की जिद चाहिए, तो skill हमारी driving force बनती है, हमारे लिए नई प्रेरणा लेकर आती है। ऊर्जा का काम करती है और उम्र कोई भी हो, चाहे युवावस्था हो या बुजुर्ग, अगर आप नई-नई skills सीख रहे हैं, तो जीवन के प्रति उत्साह कभी कम नहीं होगा।

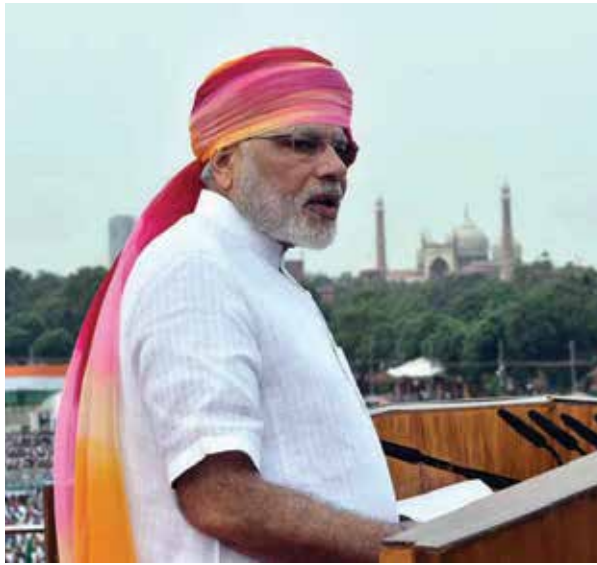
— श्री नरेन्द्र मोदी, विश्व युवा कौशल दिवस, 15 जुलाई 2020

‘सशक्त समाज बनता है सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर’

70वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2016 को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

मैं आज जब सुराज्य की बात करता हूँ तब सुराज का सीधा-सीधा मतलब है— हमारे देश के सामान्य से सामान्य मानव के जीवन में बदलाव लाना है। सुराज का मतलब है शासन सामान्य मानव के प्रति संवेदनशील हो, जिम्मेवार हो और जन सामान्य के प्रति समर्पित हो।

- शासन में सुराज के लिए पारदर्शिता को बल देना उतना ही महत्वपूर्ण है। आप जानते हैं! आज समाज में पहले से एक विश्वव्यापी संपर्क संबंध धीरे-धीरे सहज बनता जा रहा है। मध्यम वर्ग के व्यक्ति का अपना पासपोर्ट हो-पहला जमाना था साल में करीब 40 लाख 50 लाख पासपोर्ट के लिए अर्जियां आती थीं। आजकल दो-दो करोड़ लोग पासपोर्ट के लिए apply करते हैं। पहले पासपोर्ट पाने में अगर सिफारिश नहीं है, तो चार-छह महीने तो यूँ ही जांच-पड़ताल में चले जाते थे। हमने उस स्थिति को बदला और आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि करीब हफ्ते-दो हफ्ते में नागरिकों के हक में जो पासपोर्ट है, उसको पहुंचा दिया जाता है।
- सुराज के लिए सुशासन भी जरूरी है। Good governance भी जरूरी है और उस Good governance के लिए हमने जो कदम उठाए— मैंने पिछली बार यहां लाल किले से कहा था कि हम Group ‘C’ और Group ‘D’ सरकार के इन पदों को इंटरव्यू से बाहर कर देंगे। Merit के आधार पर उसको Job मिल जाएगा। हमने करीब-करीब 9,000 पद ऐसे खोज कर निकाले हैं और जिसमें हजारों-लाखों लोगों की भर्ती होनी है। अब इन 9,000 पदों पर कोई इंटरव्यू प्रक्रिया नहीं होगी। मेरे नौजवानों को इंटरव्यू देने के लिए खर्चा नहीं करना पड़ेगा, जाना नहीं पड़ेगा, सिफारिश की



जरूरत नहीं पड़ेगी। भ्रष्टाचार और दलालों के लिए रास्ते बंद हो जाएंगे और इस काम को लागू कर दिया गया है।

- हम चीजों को टुकड़ों में नहीं देखते हैं। हम चीजों को एक समग्रता में देखते हैं, integrated देखते हैं, और integrated चीजों के तहत, सिर्फ agriculture ले लीजिए, हमने किस प्रकार से ऐसी कार्य-संस्कृति को विकसित किया है, जिसकी एक पूरी chain कितना बड़ा परिणाम दे सकती है।
- हमने सबसे पहले ध्यान केन्द्रित किया इस धरती माता की तबीयत के लिए, जमीन की सेहत के लिए, Soil Health Card, macro-nutrition, micro-nutrition की चिन्ता और किसान को ये समझाया कि तुम्हारी जमीन में ये कमी है, ये अच्छाइयां हैं, तुम्हारी जमीन इस फसल के लिए योग्य है, इस फसल के लिए योग्य नहीं है। और किसानों ने धीरे-धीरे Soil Health Card के जरिए अपना plan करना शुरू किया और जिन-जिन लोगों ने plan किया है वो मुझे बताते हैं कि साहब हमारा खर्चा करीब-करीब 25 प्रतिशत कम हो रहा है। और हमारे उत्पादन में 30 प्रतिशत वृद्धि नजर आ रही है। अभी ये संख्या कम है लेकिन आने वाले दिनों में जैसे-जैसे बात पहुंचेगी, ये बात आगे बढ़ेगी। किसान को जमीन है, अगर उसको पानी मिल जाए, तो मेरे देश के किसान की ताकत है, वो मिट्टी में से सोना पैदा कर सकता है। ये ताकत मेरे देश के किसान में है और इसलिए हमने जल प्रबंधन पर बल दिया है, जल सिंचन पर बल दिया है, जल संरक्षण पर बल दिया है। एक-एक बूंद का उपयोग किसान के काम कैसे आए, पानी का माहात्म्य कैसे बढ़े, per drop-more crop, Micro-irrigation इसको हम बल दे रहे हैं।
- हम कितना ही काम करें, कितनी ही योजनाएं बनाएं। लेकिन



सरकार सुशासन के लिए man delivery, आखिरी इंसान को उसका लाभ कैसे मिलता है, उस पर ध्यान देना होता है। साफ नीति, स्पष्ट नीति, साफ नीयत, स्पष्ट नीयत होती है, तब निर्णय करने का जज्बा भी कुछ और होता है और इसलिए निर्णय बेझिझक हो सकते हैं। हमारी सरकार स्पष्ट नीतियों के कारण, साफ नीयत के कारण, बेझिझक निर्णय करके, बेझिझक निर्णय करके चीजों को आगे बढ़ाने में और last man delivery पर बल दे रही है।

- हमारे देश में जो भी PSU बनते हैं वो PSU या तो गड्डे में जाने के लिए बनते हैं, या तो लुढ़क जाने के लिए बनते हैं, या ताले लगने के लिए बनते हैं या फिर बेचने के लिए बनते हैं। ये उसका इतिहास रहा है। हमने एक नई कार्य संस्कृति लाने का प्रयास किया है।
- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' हम कोई काम टुकड़ों में नहीं करते हैं। हमारा एक integrated approach होता है और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' में हमने जो initiative लिए हैं, उसमें अभी भी मुझे समाज के सहयोग की आवश्यकता है। एक-एक मां-बाप को सजग होने की आवश्यकता है। हम बेटियों का सम्मान बढ़ाएं, बेटियों की सुरक्षा करें, सरकार की योजनाओं का लाभ लें। हमने सुकन्या समृद्धि योजना से करोड़ों परिवारों को जोड़ा है। जो बेटी बड़ी होगी तो उसकी गारंटी ले लेता है, हमने महिलाओं को लाभ हो, उस प्रकार की बीमा योजनाओं को सबसे ज्यादा बल दिया है। उसके कारण इनको फायदा होने वाला है। हमने इंद्रधनुष टीकाकरण की योजना, क्योंकि माताओं, बहनों को एक आर्थिक सशक्तिकरण, और एक health की भी सशक्तिकरण अगर यह दो काम कर लिए, शिक्षित कर लिया, आप मान कर चलिए घर में एक महिला भी अगर शिक्षित है, शारीरिक रूप से सशक्त है, आर्थिक रूप से स्वतंत्र है, एक महिला गरीब से गरीब परिवार को भी गरीबी से बाहर निकालने की ताकत रखती है। और इसलिए गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने में महिलाओं का सशक्तिकरण, महिलाओं का स्वास्थ्य, महिलाओं की आर्थिक सम्पन्नता, शारीरिक सम्पन्नता उस पर बल दे करके हम काम कर रहे हैं।

मुझे खुशी हुई मुद्रा योजना का लाभ साढ़े तीन करोड़ से ज्यादा परिवारों ने लिया और उसमें अधिकतम नये लोग थे, जो बैंक के दरवाजे पर पहुंचे। उसमें भी 80 प्रतिशत करीब-करीब SC, ST, OBC के थे और उसमें भी बैंक में, मुद्रा बैंक में लोन लेने वाली 80 प्रतिशत महिलाएं हैं। ये महिलाएं कैसे आर्थिक विकास में योगदान करेंगी। इसकी ओर आप ध्यान देते हैं।

- हम सबको सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ना होगा। हम सबने अपने व्यवहार से सामाजिक बुराइयों से ऊपर उठना होगा, हर नागरिक को उठना पड़ेगा और तभी जा करके हम सशक्त हिन्दुस्तान बना सकते हैं। सशक्त हिन्दुस्तान, सशक्त समाज के बिना नहीं बन सकता है। सिर्फ आर्थिक प्रगति सशक्त हिन्दुस्तान की गारंटी नहीं है, सशक्त समाज, सशक्त हिन्दुस्तान की गारंटी है और सशक्त समाज बनता है सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर। सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर ही सशक्त समाज निर्माण होता है और इसलिए हम सबका दायित्व है कि सामाजिक न्याय पर हम बल दें। दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, मेरे आदिवासी भाई हों, ग्रामवासी हों या शहरवासी हो, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़ हो, छोटा हो या बड़ा हो, सवा सौ करोड़ देशवासी हमारा परिवार है, हम सबने मिलकर के देश को आगे बढ़ाना है और उसी दिशा में हमें काम करना होगा।

सिर्फ आर्थिक प्रगति सशक्त हिन्दुस्तान की गारंटी नहीं है, सशक्त समाज, सशक्त हिन्दुस्तान की गारंटी है और सशक्त समाज बनता है सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर। सामाजिक न्याय के अधिष्ठान पर ही सशक्त समाज निर्माण होता है और इसलिए हम सबका दायित्व है कि सामाजिक न्याय पर हम बल दें।

- आज जब हम पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्मशती की ओर

आगे बढ़ रहे हैं तब, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कह रहे थे, जो महात्मा गांधी के भी विचार थे कि 'आखिरी मानव का कल्याण'। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय के विचार को ले करके चले। आखिरी छोर के इन्सान के कल्याण, ये पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की political philosophy का केंद्रवर्ती विचार था। आखिरी व्यक्ति के विचार में वो कहते थे, हर नौजवान को शिक्षा उपलब्ध होनी चाहिए, हर नौजवान के हाथ में हुनर होना चाहिए, हर नौजवान को अपने सपने साकार करने के लिए अवसर होना चाहिए। पंडित दीनदयाल जी के उन सपनों को पूरा करने के लिए, देश के hundred million युवाओं के आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए हमने अनेक initiatives लिए हैं। ■

‘न गाली से, न गोली से, परिवर्तन होगा गले लगाने से’

71वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2017 को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित किया। श्री मोदी ने कहा कि राष्ट्र ने वर्ष 1942 और 1947 के बीच सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन किया था, जिसकी परिणति भारत की स्वाधीनता के रूप में हुई। उन्होंने कहा कि हमें वर्ष 2022 तक एक नये भारत के सृजन के लिए समान सामूहिक दृढ़ निश्चय और संकल्प का प्रदर्शन करना चाहिए। उन्होंने विशेष बल देते हुए कहा कि हमारे देश में सभी एक समान हैं और हम आपस में मिलकर गुणात्मक बदलाव ला सकते हैं। प्रधानमंत्री ने सकारात्मक बदलाव सुनिश्चित करने के लिए ‘चलता है’ दृष्टिकोण को छोड़ ‘बदल सकता है’ नजरिया अपनाने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री ने जीएसटी पर अमल को सहकारी संघवाद का उत्कृष्ट उदाहरण बताया। उन्होंने कहा कि आज गरीब वित्तीय समावेश की पहल के जरिए मुख्यधारा से जुड़ रहे हैं। उन्होंने विशेष जोर देते हुए कहा कि सुशासन का वास्ता निश्चित तौर पर प्रक्रियाओं की तेज गति और सरलीकरण से है। जम्मू-कश्मीर का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने विशेष जोर देते हुए कहा, “न गाली से, न गोली से, परिवर्तन होगा गले लगाने से।”

श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भारत की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है तथा सर्जिकल स्ट्राइक ने इसे रेखांकित किया है। उन्होंने कहा कि विश्व स्तर पर भारत की हैसियत बढ़ रही है और कई देश आतंकवाद की समस्या से निपटने के लिए भारत के साथ सहयोग कर रहे हैं। विमुद्रीकरण का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने देश और गरीबों को लूटा है, वे चैन से सो नहीं पा रहे हैं और आज ईमानदारी का जश्न मनाया जा रहा है। उन्होंने विशेष बल देते हुए कहा कि कालेधन के खिलाफ लड़ाई जारी रहेगी और प्रौद्योगिकी

पारदर्शिता सुनिश्चित करने में मददगार साबित होगी। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे डिजिटल लेन-देन को और ज्यादा बढ़ावा दें।

प्रधानमंत्री ने नये भारत के अपने विजन का उल्लेख करते हुए कहा, ‘तंत्र से लोक नहीं, लोक से तंत्र चलेगा।’ प्रधानमंत्री ने इस वर्ष रिकॉर्ड फसल पैदावार के लिए किसानों और कृषि वैज्ञानिकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि सरकार ने इस वर्ष 16 लाख टन दालों की खरीदारी की है, जो विगत वर्षों में की गई खरीदारी की तुलना में बहुत अधिक है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि प्रौद्योगिकी के बदलते स्वरूप के परिणामस्वरूप आज रोजगार के लिए कुछ भिन्न कौशल की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि युवाओं को कुछ इस तरह से कौशल युक्त किया जा रहा है, जिससे कि वे रोजगार मांगने की बजाय रोजगार सृजित करें।

‘तीन तलाक’ से पीड़ित महिलाओं का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वह इस परम्परा के खिलाफ आवाज उठाने वाली महिलाओं के साहस की सराहना करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्र इस संघर्ष में उनके साथ खड़ा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत शांति, एकता और सौहार्द का हिमायती है। उन्होंने कहा कि जातिवाद और सम्प्रदायवाद से हमारा भला नहीं होगा। उन्होंने आस्था के नाम पर हिंसा करने वालों की कटु आलोचना की और कहा कि भारत इसे बर्दाश्त नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ‘भारत छोड़ो’ का आह्वान किया गया था, जबकि आज ‘भारत जोड़ो’ का आह्वान करने की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि पूर्वी भारत और पूर्वोत्तर भारत के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार विकास





- ◆ हम युवाओं को बढ़ावा दे रहे हैं और वे रोजगार मांगने वाले नहीं, बल्कि रोजगार देने वाले बन रहे हैं।
- ◆ विश्व का सबसे बड़ा युवा वर्ग हमारे देश में है—आईटी का जमाना है, आइए हम डिजिटल लेन की दिशा में आगे बढ़ें।
- ◆ शास्त्रों में कहा गया है— अनियत कालाः प्रवृत्तयो विप्लवन्ते – सही समय पर अगर कोई कार्य पूरा नहीं किया, तो मनचाहे नतीजे नहीं मिलते। इसलिए टीम इंडिया के लिए न्यू इंडिया के संकल्प का सही समय यही है।
- ◆ हम देश को विकास के नए मार्ग पर पूरी गति के साथ ले जा रहे हैं।
- ◆ राष्ट्र शांति, एकता और सद्भाव के साथ आगे बढ़ रहा है।
- ◆ हम पूर्वी भारत, बिहार, असम, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, पूर्वोत्तर पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। इन क्षेत्रों का तेजी से विकास करना होगा।
- ◆ हम सब मिलकर एक ऐसा भारत बनाएंगे, जहां गरीब के पास पक्का घर होगा, बिजली होगी, पानी होगा।
- ◆ हम सब मिलकर एक ऐसा देश बनाएंगे जहां देश का किसान चिंता में नहीं, चैन से सोएगा, आज वो जितना कमा रहा है, उससे दोगुना कमाएगा।
- ◆ हम सब मिलकर एक ऐसा भारत बनाएंगे, जहां युवाओं और महिलाओं को उनके सपने पूरे करने के लिए भरपूर अवसर मिलेंगे।
- ◆ हम सब मिलकर एक ऐसा भारत बनाएंगे जो आतंकवाद, संप्रदायवाद और जातिवाद से मुक्त होगा।
- ◆ हम सब मिलकर एक ऐसा भारत बनाएंगे, जहां भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद से कोई समझौता नहीं होगा।
- ◆ हम सब मिलकर एक ऐसा भारत बनाएंगे जो स्वच्छ होगा, स्वस्थ होगा और स्वराज के सपने को पूरा करेगा।
- ◆ हम एक दिव्य और भव्य भारत के निर्माण के लिए काम कर रहे हैं।

की गति को मंद किए बगैर ही देश को प्रगति के नये मार्ग पर ले जा रही है।

शास्त्रों का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, 'अनियत कालहा प्रभुतयो विप्लवन्ते', जिसका अर्थ यह है कि यदि हम सही समय पर सही कदम नहीं उठाएंगे तो हम अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं कर पाएंगे। उन्होंने कहा कि यह 'टीम इंडिया' के लिए 'नये भारत' का संकल्प लेने का बिल्कुल सही समय है।

श्री मोदी ने एक ऐसे नये भारत के सृजन का आह्वान किया, जिसमें गरीबों के पास अपना मकान होगा, पानी एवं बिजली की

सुविधाएं उन्हें सुलभ होंगी, किसान चिंता मुक्त होंगे एवं आज के मुकाबले उनकी आमदनी दोगुनी होगी। उन्होंने कहा कि यह ऐसा नया भारत होगा जिसमें युवाओं एवं महिलाओं के पास अपने सपनों को साकार करने के लिए पर्याप्त अवसर होंगे। उन्होंने कहा कि यह ऐसा नया भारत होगा, जो आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, जातिवाद, भ्रष्टाचार एवं भाई-भतीजावाद से मुक्त होगा और इसके साथ ही स्वच्छ एवं स्वस्थ भी होगा। प्रधानमंत्री ने शौर्य पुरस्कार विजेताओं के सम्मान में एक वेबसाइट लांच करने की घोषणा की। ■

‘देश आज आत्मविश्वास से भरा हुआ है’

72वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2018 को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

आज देश आत्मविश्वास से भरा हुआ है। सपनों के संकल्प के साथ परिश्रम की पराकाष्ठा से देश नई ऊंचाइयों को पार कर रहा है।

- दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, महिलाएं हो, उनके हकों की रक्षा करने के लिए हमारी संसद ने संवेदनशीलता और सजगता के साथ सामाजिक न्याय को और अधिक मजबूत बनाया।
- ओबीसी आयोग को सालों से संवैधानिक दर्जा देने की मांग उठ रही थी। इस बार संसद ने इसे संवैधानिक दर्जा दे कर पिछड़ों और अति पिछड़ों के हकों की रक्षा करने का प्रयास किया।

भारत विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था

- भारत ने विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपना नाम दर्ज करा दिया है।
- एक आत्मनिर्भर हिन्दुस्तान हो, एक सामर्थ्यवान हिन्दुस्तान हो, एक विकास की निरंतर गति को बनाए रखने वाला, लगातार नई ऊंचाइयों को पार करने वाला हिन्दुस्तान हो, दुनिया में हिन्दुस्तान की साख हो, और इतना ही नहीं, हम चाहते हैं कि दुनिया में हिन्दुस्तान की दमक भी हो। हम वैसा हिन्दुस्तान बनाना चाहते हैं।
- 2014 में इस देश के सवा सौ करोड़ नागरिक सिर्फ सरकार बना कर रुके नहीं थे। वे देश बनाने के लिए जुटे थे, जुटे हैं और जुटे रहेंगे। मैं समझता हूँ यही हमारे देश की ताकत है।
- पिछले 4 साल में जो काम हुए हैं, उन कामों का अगर लेखा-जोखा लें, तो आपको अचरज होगा कि देश की रफ्तार क्या है, गति क्या है, प्रगति कैसे आगे बढ़ रही है।
- शौचालय ही ले लें, अगर शौचालय बनाने में वर्ष 2013 की जो रफ्तार थी, उसी रफ्तार से चलते तो शायद कितने दशक बीत जाते



शौचालयों का निर्माण शत-प्रतिशत पूरा करने में।

- वर्ष 2013 की रफ्तार के आधार पर गांव में बिजली पहुंचाने के लिए शायद एक-दो दशक और लग जाते।
- गरीबों को एलपीजी गैस कनेक्शन, गरीब मां को धुंआ-मुक्त बनाने वाला चूल्हा, यदि 2013 की रफ्तार से चले होते तो उस काम को पूरा करने में शायद 100 साल भी कम पड़ जाते।
- वर्ष 2013 की रफ्तार से अगर ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क लगाने का काम करते तो शायद पीढ़ियां निकल जाती। ये रफ्तार, ये गति, ये प्रगति, ये लक्ष्य इस प्राप्ति के लिए हम आगे बढ़ेंगे।

- चार साल में देश बदलाव महसूस कर रहा है। देश एक नई चेतना, नई उमंग, नए संकल्प, नई सिद्धि और नये पुरुषार्थ के साथ आगे बढ़ा रहा है। आज देश दोगुना हाईवे बना रहा है, चार गुना, गांवों में नए घर बना रहा है।

रिकॉर्ड अनाज का उत्पादन

- देश आज रिकॉर्ड अनाज का उत्पादन कर रहा है, तो देश आज रिकॉर्ड मोबाइल फोन का उत्पादन भी कर रहा है। देश में आज रिकॉर्ड ट्रेक्टरों की बिक्री हो रही है।
- देश में आज आजादी के बाद सबसे ज्यादा हवाई जहाज खरीदने का काम हो रहा है।

- देश आज नए IIM, नए IIT, नए AIIMS की स्थापना कर रहा है। देश आज छोटे-छोटे स्थानों पर नए कौशल विकास के मिशन को आगे बढ़ाकर नए-नए सेंटर खोल रहा है।
- हमारे टियर 2, टियर 3 सिटीज में स्टार्टअप की बाढ़ आई हुई है।

किसानों को लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन मूल्य

- हिम्मत के साथ फैसला किया गया कि देश के किसानों को लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन मूल्य दिया जाएगा।
- देश के छोटे-छोटे व्यापारियों की मदद से, उनके खुलेपन से, नएपन



को स्वीकारने के उनके स्वभाव के कारण आज देश ने जीएसटी लागू कर दिया। व्यापारियों में एक नया विश्वास पैदा हुआ।

- बुलंद हौसले और देश के लिए कुछ करने के इरादे के कारण बेनामी संपत्ति का कानून लागू किया गया है।
- आज अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की साख बढ़ी है, दुनिया के मंचों पर हमने अपनी आवाज़ को बुलंद किया है।

आखिरी गांव में बिजली पहुंची

- पूर्वोत्तर के आखिरी गांव में बिजली पहुंच गई है।
- एक समय था जब पूर्वोत्तर को लगता था कि दिल्ली बहुत दूर है। हमने चार साल के भीतर-भीतर दिल्ली को पूर्वोत्तर के दरवाजे पर ला करके खड़ा कर दिया है।
- आज हमारे देश में 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल की उम्र की है। हमारे देश के नौजवानों ने nature of job को पूरी तरह बदल दिया है। स्टार्टअप हो, BPO हो, e-commerce हो, मोबिलिटी का क्षेत्र हो ऐसे नये क्षेत्रों को आज मेरे देश का नौजवान अपने सीने में बांध करके नई ऊंचाइयों पर देश को ले जाने के लिए लगा हुआ है।
- 13 करोड़ लोगों को मुद्रा लोन बहुत बड़ी बात है। उसमें 4 करोड़ नौजवान हैं, जिन्होंने जिंदगी में पहली बार कहीं से लोन लिया है, और अपने पैरों पर खड़े होकर स्वरोजगार पर आगे बढ़ रहे हैं। ये अपने आप में बदले हुए वातावरण का एक जीता जागता उदाहरण है।
- हिन्दुस्तान के तीन लाख गांवों में COMMON SERVICE CENTRE देश के युवा चला रहे हैं और हर गांव को, हर नागरिक को, पलक झपकते ही विश्व के साथ जोड़ने के लिए सूचना तकनीक का भरपूर उपयोग कर रहे हैं।
- वैज्ञानिकों के आधार, कल्पना और सोच के परिणामस्वरूप, 'नाविक' को हम लॉन्च करने जा रहे हैं। इससे देश के मछुआरों को, देश के सामान्य नागरिकों को नाविक के द्वारा दिशा दर्शन का लाभ मिलेगा।
- हमारे देश ने संकल्प किया है कि 2022 तक हम अंतरिक्ष में मानव सहित गगनयान लेकर के चलेंगे, जब ये गगनयान अंतरिक्ष में जाएगा, हम मानव को अंतरिक्ष में पहुंचाने वाले विश्व के चौथे देश बन जाएंगे।

- आज हमारा पूरा ध्यान कृषि क्षेत्र में आधुनिकता लाने के लिए, बदलाव लाने के लिए चल रहा है। आजादी के 75वें साल में हमने, किसानों की आय दोगुनी करने का सपना देखा है।
- मछली उत्पादन के मामलों में हमारा देश दुनिया में दूसरे स्थान पर है।
- आज शहद का निर्यात दोगुना हो गया है।
- गन्ना किसानों को खुशी होगी कि हमारे एथेनाल का उत्पादन तीन गुना हो गया है।
- खादी की बिक्री पहले से दोगुनी हो गई है।
- देश का किसान अब सोलर फार्मिंग पर भी बल देने लगा है। खेती के सिवाय वो सोलर फार्मिंग से बिजली बेच कर भी कमाई कर सकता है।

आज हमारे देश में 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल की उम्र की है। हमारे देश के नौजवानों ने nature of job को पूरी तरह बदल दिया है। स्टार्टअप हो, BPO हो, e-commerce हो, मोबिलिटी का क्षेत्र हो ऐसे नये क्षेत्रों को आज मेरे देश का नौजवान अपने सीने में बांध करके नई ऊंचाइयों पर देश को ले जाने के लिए लगा हुआ है।

50 करोड़ को स्वास्थ्य बीमा

- आयुष्मान भारत योजना के तहत, 10 करोड़ परिवारों को, यानी करीब-करीब 50 करोड़ नागरिक, हर परिवार को 5 लाख रुपया सालाना हेल्थ इश्योरेंस देने की योजना है। ये हम इस देश को देने वाले हैं।
- देश में भी मध्यमवर्गीय परिवारों के लिये, नौजवानों के लिये आरोग्य के क्षेत्र में नए अवसर खुलेंगे। टियर 2, टियर 3 टियर में नए अस्पताल बनेंगे। बहुत बड़ी मात्रा में मेडिकल कर्मी लगेंगे। बहुत बड़े रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

• गरीब को सशक्त बनाने के लिये हमने अनेक योजनाएं बनाई हैं। योजनाएं तो बनती हैं, लेकिन बिचौलिये उसमें से मलाई खा लेते हैं। गरीब को हक मिलता नहीं है।

- तीन तलाक की कुरीति ने हमारे देश की मुस्लिम बेटियों की जिंदगी को तबाह करके रखा हुआ है। और जिनको तलाक नहीं मिला है वो भी इस दबाव में गुजारा कर रही है। संसद के मॉनसून सत्र में कानून लाकर के हमारी इन महिलाओं को कुरीतियों से मुक्ति दिलाने का बीड़ा उठाया गया था, लेकिन अभी भी कुछ लोग हैं जो इसे पारित नहीं होने देते।
- हमें ठहराव मंजूर नहीं है, हमें रुकना मंजूर नहीं है और झुकना तो हमारे स्वभाव में नहीं है। ये देश न रुकेगा, न झुकेगा, ये देश न थकेगा, हमें नई ऊंचाइयों पर आगे चलना है, उत्तरोत्तर प्रगति करते चलना है। ■

‘हम समस्याओं को न टालते हैं, न पालते हैं’

73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2019 को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को ‘चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ’ (सीडीएस) का पद सृजित किए जाने की महत्वपूर्ण घोषणा की और साथ ही देश में ‘एक राष्ट्र, एक चुनाव’ की जरूरत पर जोर दिया। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 के कई प्रावधान हटाने और राज्य को दो केंद्रशासित प्रदेशों में बांटने के सरकार के कदम की पृष्ठभूमि में श्री मोदी ने कहा “हम समस्याओं को न टालते हैं, न पालते हैं। अब समस्याओं को टालने और पालने का समय नहीं है।” उन्होंने कहा, “देशवासियों ने जो काम दिया, हम उसे पूरा कर रहे हैं।”

- **अनुच्छेद 370:** दस हफ्ते के भीतर-भीतर ही अनुच्छेद 370 का हटना, 35A का हटना सरदार वल्लभ भाई पटेल के सपनों को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है। जो काम पिछले 70 साल में नहीं हुआ, नई सरकार बनने के बाद, 70 दिन के भीतर-भीतर अनुच्छेद 370 और 35A को हटाने का काम भारत के दोनों सदनों ने, राज्यसभा और लोकसभा ने दो-तिहाई बहुमत से पारित कर दिया। आज लाल किले से मैं जब देश को संबोधित कर रहा हूँ, मैं यह गर्व के साथ कहता हूँ कि आज हर हिन्दुस्तानी कह सकता है— One Nation, One Constitution.
- **तीन तलाक:** दस हफ्ते के भीतर-भीतर हमारे मुस्लिम माताओं और बहनों को उनका अधिकार दिलाने के लिए तीन तलाक के खिलाफ कानून बनाया। अगर इस देश में, हम सती प्रथा को खत्म कर सकते हैं, हम भ्रूण हत्या को खत्म करने के कानून बना सकते हैं, अगर हम बाल-विवाह के खिलाफ आवाज उठा सकते हैं, हम दहेज में लेन-देन की प्रथा के खिलाफ कठोर कदम उठा सकते



हैं, तो क्यों न हम तीन तलाक के खिलाफ भी आवाज उठाएं।

- **आतंक से जुड़े कानून:** आतंक से जुड़े कानूनों में आमूल-चूल परिवर्तन करके उसको एक नई ताकत देने का, आतंकवाद के खिलाफ लड़ने के संकल्प को और मजबूत करने का काम किया गया।
- **किसान सम्मान निधि:** हमारे किसान भाइयों-बहनों को प्रधानमंत्री सम्मान निधि के तहत 90 हजार करोड़ रुपया किसानों के खाते में transfer करने का एक महत्वपूर्ण काम आगे बढ़ा है।
- **किसानों और छोटे व्यापारियों के लिए पेंशन:** हमारे किसान भाई-बहन, हमारे छोटे व्यापारी भाई-बहन, उनको कभी कल्पना नहीं थी कि कभी उनके जीवन में भी पेंशन की व्यवस्था हो सकती है, वैसी पेंशन योजना को भी लागू करने का काम कर दिया है।
 - **जल-जीवन मिशन:** हम आने वाले दिनों में जल-जीवन मिशन को आगे ले करके बढ़ेंगे। इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारें साथ मिलकर काम करेंगे और आने वाले वर्षों में साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये से भी ज्यादा रकम इस मिशन के लिए खर्च करने का हमने संकल्प लिया है।
 - **चिकित्सा कानून:** हमारे देश में बहुत बड़ी तादाद में डॉक्टरों की जरूरत है, आरोग्य की सुविधाएं और व्यवस्थाओं की आवश्यकता है। Medical Education को पारदर्शी बनाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कानून हमने बनाए हैं, महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं।
- **जम्मू-कश्मीर के लोगों का योगदान:** जम्मू-कश्मीर और लद्दाख सुख-समृद्धि और शांति के लिए भारत के लिए प्रेरक बन सकता है। भारत की विकास यात्रा में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। अब, जम्मू-कश्मीर का सामान्य नागरिक भी दिल्ली सरकार को पूछ सकता है। उसको बीच में कोई रुकावटें नहीं आएंगी। यह



सीधी-सीधी व्यवस्था आज हम कर पाए हैं।

- **एक राष्ट्र, एक कर:** GST के माध्यम से हमने One Nation, One Tax के सपने को साकार किया है। पिछले दिनों ऊर्जा के क्षेत्र में One Nation, One Grid को भी हमने सफलतापूर्वक पार किया। One Nation, One Mobility Card— इस व्यवस्था को भी हमने विकसित किया है और आज चर्चा चल रही है, 'एक देश, एक साथ चुनाव।' यह चर्चा होनी चाहिए, लोकतांत्रिक तरीके से होनी चाहिए।
- **भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद:** भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद ने हमारे देश का कल्पना से परे नुकसान किया है और दीमक की तरह हमारे जीवन में घुस गया है। यह एक ऐसी बीमारी है, जिसको हमने निरंतर Technology का उपयोग करते हुए निरस्त करने की दिशा में कई कदम उठाए हैं।
- **ग्रामीण विकास और किसानों की आय:** आजादी के 75 साल में देश के किसान की आय दोगुनी होनी चाहिए, हर गरीब के पास पक्का घर होना चाहिए, हर परिवार के पास बिजली होनी चाहिए, हर गांव में Optical Fiber Network और Broadband की Connectivity हो, साथ ही साथ Long Distance Education की सुविधा हो।
- **महंगाई और विकास में संतुलन:** आज हमारे लिए गर्व का विषय है कि महंगाई को control करते हुए हम विकास दर को बढ़ाने वाले एक महत्वपूर्ण समीकरण को ले करके चले हैं।
- **अर्थव्यवस्था:** हमारी अर्थव्यवस्था के fundamentals बहुत मजबूत हैं। जीएसटी और IBC जैसे सुधार लाना अपने आप में एक नया विश्वास पैदा करते हैं। हमारे निवेशक ज्यादा कमाएं, ज्यादा निवेश करें और ज्यादा रोजगार पैदा करें। हम wealth creator को आशंका की नजरों से न देखें। उनका गौरव बढ़ना चाहिए और wealth create नहीं होगी तो wealth distribute भी नहीं होगी। अगर wealth distribute नहीं होगी तो देश के गरीब आदमी की भलाई नहीं होगी।
- **आतंकवाद:** भारत आतंक फैलाने वालों के खिलाफ मजबूती के साथ लड़ रहा है। आतंकवाद को पनाह, प्रोत्साहन और export करने वाली ताकतों को उजागर करने में दुनिया के देशों के साथ मिलकर भारत अपनी भूमिका अदा करें, हम यही चाहते हैं। आतंकवाद को

आजादी के 75 साल में देश के किसान की आय दोगुनी होनी चाहिए, हर गरीब के पास पक्का घर होना चाहिए, हर परिवार के पास बिजली होनी चाहिए, हर गांव में Optical Fiber Network और Broadband की Connectivity हो, साथ ही साथ Long Distance Education की सुविधा हो।

नेस्तनाबूद करने में हमारे सैनिकों, सुरक्षा बलों और सुरक्षा एजेंसियों ने बहुत प्रशंसनीय काम किया है। मैं उनको नमन करता हूं।

- **सैन्य सुधार:** हमारे देश में सैन्य व्यवस्था, सैन्य शक्ति, सैन्य संसाधन — उसके Reform पर लंबे अरसे से चर्चा चल रही है। अनेक सरकारों ने इसकी चर्चा की है। अनेक commission बैठे हैं, अनेक रिपोर्ट आई हैं और सारे रिपोर्ट करीब-करीब एक ही स्वर को उजागर करते रहे हैं। हमारी पूरी सैन्यशक्ति को एकमुश्त होकर एक साथ आगे बढ़ने की दिशा में काम करना होगा। जल, थल, नभ में तीनों सेनाएं एक साथ एक ही ऊंचाई पर आगे बढ़ें।
- **स्वच्छता अभियान:** मैंने इसी लाल किले से 2014 में स्वच्छता की बात कही थी। कुछ ही सप्ताह बाद बापू की 150वीं जयंती, 02 अक्टूबर को भारत अपने-आपको खुले में शौच मुक्त राष्ट्र घोषित कर जाएगा। राज्यों, गांवों, नगर पालिकाओं और मीडिया ने स्वच्छता अभियान को जन-आंदोलन बना दिया।

• **प्लास्टिक मुक्त भारत:** मैं एक छोटी-सी अपेक्षा आज आपके सामने रखना चाहता हूं। क्या हम इस 02 अक्टूबर को भारत को single use plastic से मुक्ति दिला सकते हैं। इसके लिए हर नागरिक, नगरपालिकाएं, महानगर-पालिकाएं और ग्राम पंचायतें सब मिलकर प्रयास करें।

• **मेक इन इंडिया:** Made in India Product, हमारी प्राथमिकता क्यों न होनी चाहिए? हमें lucky कल के लिये

local product पर बल देना है। देश की Economy में भी इसके कारण हम मदद कर सकते हैं।

- **Digital Payment:** हमारा digital platform बड़ी मजबूती के साथ उभर रहा है, लेकिन हमारे गांव में, छोटी-छोटी दुकानों में भी, हमारे शहर के छोटे-छोटे मॉल में भी हम क्यूं न Digital payment पर बल दें?
- **नए लक्ष्य:** आने वाले दिनों में गांवों में डेढ़ लाख wellness center बनाने होंगे, हर तीन लोकसभा के बीच एक medical college, दो करोड़ से अधिक गरीब लोगों के लिए घर, 15 करोड़ ग्रामीण घरों में पीने का पानी पहुंचाना है। सवा लाख किलोमीटर गांव की सड़कें बनानी हैं और हर गांव को Broadband connectivity, optical fiber network से जोड़ना है। 50 हजार से ज्यादा नये start up का जाल बिछाना है। ■

‘एक भारत-श्रेष्ठ भारत’ की परिकल्पना होगी साकार

74वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 2020 को
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन के मुख्य अंश

को रोना योद्धाओं को नमन : इस कोरोना के कालखंड में ‘सेवा परमो धर्मः’ के मंत्र के साथ, पूर्ण समर्पण भाव से मां भारती के लालों की सेवा करने वाले सभी कोरोना योद्धाओं को मैं नमन करता हूँ।

- **आजादी के 75 वर्ष के लिए संकल्प** : अगले वर्ष हम अपनी आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर जाएंगे। एक बहुत बड़ा पर्व हमारे सामने है। हम इसे संकल्पों की पूर्ति के रूप में मनाएंगे।
- **आत्मनिर्भर भारत और विश्व** : जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो दुनिया को उत्सुकता भी है, भारत से अपेक्षा भी है... और इसलिए हमें उस अपेक्षा को पूर्ण करने के लिए अपने-आप को योग्य बनाना बहुत आवश्यक है।
- **वोकल फॉर लोकल** : आजाद भारत की मानसिकता होनी चाहिए— Vocal For Local...हमारे जो स्थानीय उत्पाद हैं उनका हमें गौरवगान करना चाहिए। आइए, हम मिल करके संकल्प लें, आजादी के 75 साल के पर्व की ओर जब कदम रख रहे हैं, तब Vocal For Local जीवन मंत्र बन जाए, और हम मिल करके भारत की उस ताकत को बढ़ावा दें।
- **विभिन्न क्षेत्रों में सुधार** : भारत में परिवर्तन के इस कालखंड के Reforms के परिणामों को दुनिया बारीकी से देख रही है। उसी का कारण है बीते वर्ष भारत में FDI ने अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। भारत में FDI में 18% की वृद्धि हुई है...बढ़ोतरी हुई है। और इसलिए कोरोना काल में भी दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियां भारत की ओर रुख कर रही हैं।
- **दुनियाभर के अनेक Business भारत को supply chain के केंद्र के रूप में आज देख रहे हैं।** अब हमें Make in India के साथ-साथ Make for World इस मंत्र को लेकर भी हमें आगे बढ़ना है।



- **राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा परियोजना** : देशवासियों के जीवन को, देश की अर्थव्यवस्था को कोरोना के प्रभाव से जल्दी से जल्दी बाहर निकालना आज हमारी प्राथमिकता है। इसमें अहम भूमिका रहेगी National Infrastructure Pipeline Project की। इस पर 110 लाख करोड़ रुपये से भी ज्यादा खर्च किये जाएंगे। इसके लिए अलग-अलग सेक्टर में लगभग सात हजार projects की पहचान कर ली गई है। इससे देश के Overall Infrastructure Development को एक नई दिशा भी मिलेगी, एक नई गति भी मिलेगी।

- **गरीब कल्याण रोजगार अभियान** : कोरोना काल में अपने ही गांव में रोजगार के लिए गरीब कल्याण रोजगार अभियान शुरू किया गया है। श्रमिक साथी खुद को re-skill करें, up-skill करें इस पर विश्वास करते हुए, श्रम-शक्ति पर भरोसा करते हुए, गांव के संसाधनों पर भरोसा करते हुए, हम vocal for local पर बल देते हुए re-skill, up-skill के द्वारा अपने देश की श्रम-शक्ति को, हमारे गरीबों को empower करने की दिशा में हम काम कर रहे हैं।
- **संतुलित विकास** : आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए संतुलित विकास बहुत आवश्यक है और हमने 110 से

ज्यादा आकांक्षी जिले identify किए हैं, जो average से भी पीछे हैं, उनको सभी parameters में राज्य की और राष्ट्र की average तक ले आना है।

- **आत्मनिर्भर कृषि और आत्मनिर्भर किसान** : देश के किसानों को आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर देने के लिए हाल ही में भारत सरकार ने एक लाख करोड़ रुपए agriculture infrastructure के लिए आवंटित किए हैं।
- **मध्यम वर्ग को सुविधाएं** : मध्यम वर्ग का पहला सपना होता है



अपना घर होना चाहिए। देश में बहुत बड़ा काम हमने EMI के क्षेत्र में किया और उसके कारण Home Loan सस्ते हुए और जब एक घर के लिए कोई लोन लेता है तो लोन पूरी करते-करते करीब 6 लाख रुपये की उसको छूट मिल जाती है।

- **नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति** : देश को तीन दशक के बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति देने में हम आज यशस्वी हुए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे विद्यार्थियों को जड़ से जोड़ेगी, लेकिन साथ-साथ उनको एक Global Citizen बनाने का भी पूरा सामर्थ्य देगी।
- **ऑनलाइन ट्रांजैक्शन** : भारत जैसे देश में यूपीआई भीम के जरिए एक महीने में 3 लाख करोड़ रुपये का transaction हुआ है।
- **पंचायतों तक optical fibre network** : 2014 से पहले हमारे देश में 5 दर्जन पंचायतों में optical fibre था। गत 5 वर्ष में डेढ़ लाख ग्राम पंचायतों तक optical fibre network पहुंच गया जो आज इतना मदद कर रहा है। हमने तय किया है कि छह लाख से अधिक गांवों में हजारों-लाखों किलोमीटर optical fibre का काम चलाया जाएगा। 1000 दिन के अंदर-अंदर देश के छह लाख से अधिक गांवों में optical fibre network का काम पूरा कर दिया जाएगा।
- **महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण** : 40 करोड़ जन-धन खातों में 22 करोड़ खाते हमारी बहनों के हैं। 25 करोड़ के करीब मुद्रा लोन दिए गए हैं, उसमें 70 प्रतिशत मुद्रा लोन लेने वाली हमारी माताएं-बहनें हैं।
- **स्वास्थ्य क्षेत्र** : कोरोना काल खंड में Health Sector की तरफ ध्यान जाना बहुत स्वाभाविक है। कोरोना की शुरुआत के समय इसकी जांच के लिए हमारे देश में सिर्फ एक Lab थी, आज 1400 Labs का नेटवर्क हिन्दुस्तान के हर कोने में फैला हुआ है। जब कोरोना का संकट आया तो एक दिन में सिर्फ 300 टेस्ट हो पाते थे। आज हर दिन 7 लाख से ज्यादा टेस्ट हम कर पा रहे हैं।
- **नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन** : Health Sector में आज से National Digital Health Mission का भी आरंभ किया जा रहा है। प्रत्येक भारतीय को Health ID दी जाएगी। ये Health ID प्रत्येक भारतीय के स्वास्थ्य खाते की तरह काम करेगी।
- **लेह-लद्दाख, कारगिल, जम्मू-कश्मीर**— को एक वर्ष पूर्व

अनुच्छेद 370 से आजादी मिल चुकी है। एक साल पूरा हो चुका है। ये साल जम्मू-कश्मीर की एक नई विकास यात्रा का बड़ा महत्वपूर्ण पड़ाव है। ये साल वहां की महिलाओं को, दलितों को, मूलभूत अधिकारों को देने वाला कालखंड रहा है। ये हमारे शरणार्थियों को गरिमा पूर्ण जीवन जीने का भी एक साल रहा है।

- **सीमाओं की रक्षा** : इतनी आपदाओं के बीच सीमा पर भी देश के सामर्थ्य को चुनौती देने के दुष्प्रयास हुए हैं। लेकिन LOC से लेकर LAC तक देश की संप्रभुता पर जिस किसी ने आंख उठाई देश की सेना ने, हमारे वीर-जवानों ने उसका उसी की भाषा में जवाब दिया है।
- **आतंकवाद और विस्तारवाद का मुकाबला** : आतंकवाद और विस्तारवाद का भारत आज डटकर मुकाबला कर रहा है। आज दुनिया का भारत पर विश्वास और मजबूत हुआ है। पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्य के रूप में 192 में से 184 देशों का भारत को समर्थन मिलना, ये हर हिन्दुस्तानी के लिए गर्व की बात है।

10 दिन पूर्व अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर का निर्माण शुरू हुआ है। राम जन्मभूमि के सदियों पुराने विषय का शांतिपूर्ण समाधान हो चुका है। देश के लोगों ने जिस संयम के साथ और समझदारी के साथ आचरण किया है, व्यवहार किया है, यह अभूतपूर्व है और भविष्य के लिए हमारे लिए प्रेरणा कारक है।

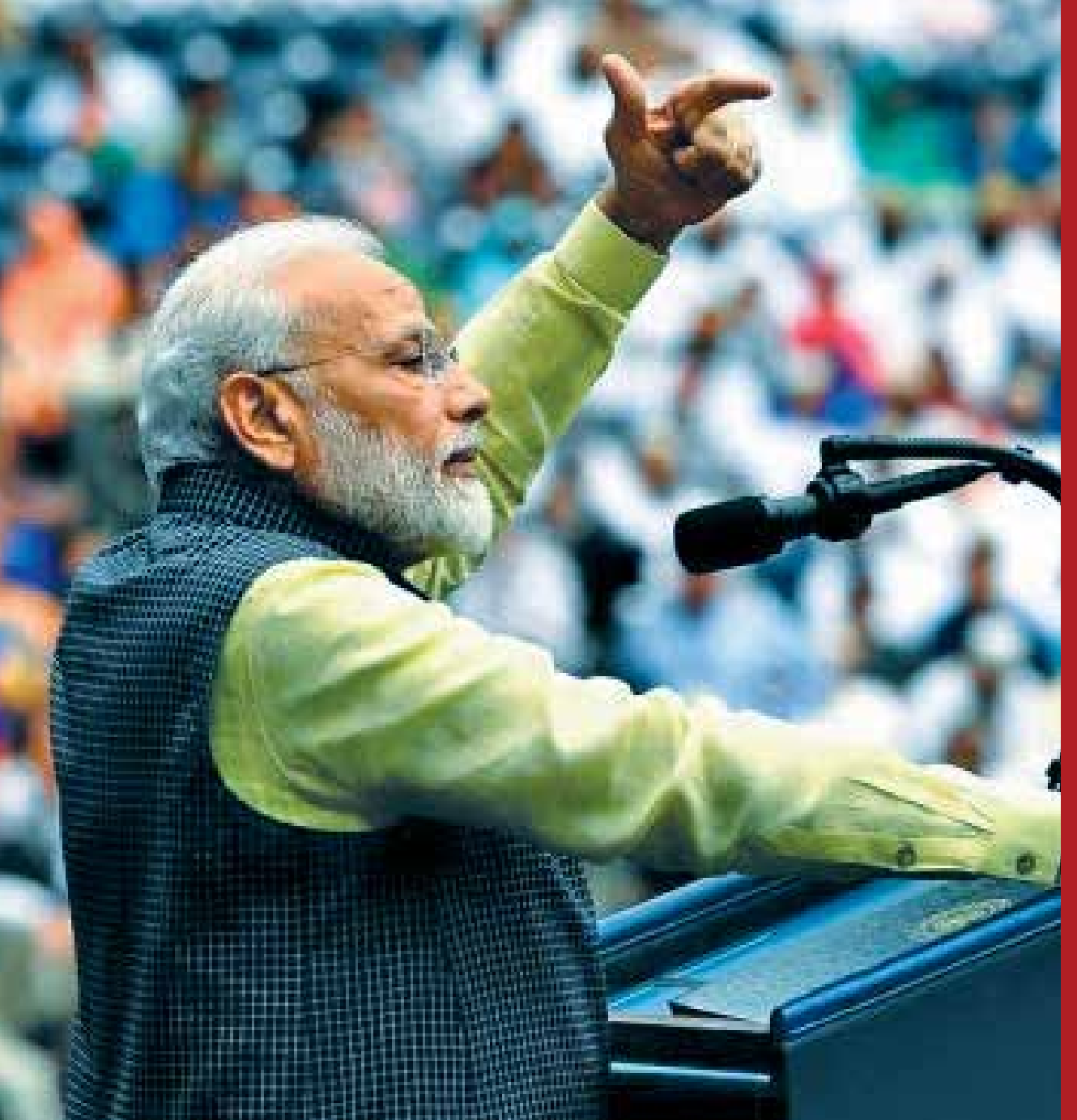
- **रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता** : रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भर भारत के लिए बड़े कदम उठाए गए हैं। हाल ही में 100 से ज्यादा सैन्य उपकरणों के आयात पर हमने रोक लगा दी है— मिसाइलों से लेकर के हल्के युद्धक हेलीकॉप्टरों तक, assault राइफल से लेकर ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट तक सभी 'मेक इन इंडिया' हो गए।

- **देश के द्वीपीय क्षेत्रों में कनेक्टिविटी**: पिछले सप्ताह अंडमान-निकोबार में submarine optical fiber cable project का लोकार्पण

हुआ। अंडमान-निकोबार को भी चेन्नई और दिल्ली जैसी internet सुविधा अब उपलब्ध होगी। अब हम आगे लक्षद्वीप को भी इसी तरह जोड़ने के लिए काम को आगे बढ़ाने वाले हैं।

- **राम मंदिर के लिए भूमि पूजन साम्प्रदायिक सौहार्द की मिसाल** : 10 दिन पूर्व अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर का निर्माण शुरू हुआ है। राम जन्मभूमि के सदियों पुराने विषय का शांतिपूर्ण समाधान हो चुका है। देश के लोगों ने जिस संयम के साथ और समझदारी के साथ आचरण किया है, व्यवहार किया है, यह अभूतपूर्व है और भविष्य के लिए हमारे लिए प्रेरणा कारक है।
- **एक भारत श्रेष्ठ भारत** : हमारी policy, हमारे process, हमारे products सब कुछ उत्तम से उत्तम हों, best हों, तभी 'एक भारत—श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना साकार होगी। ■

विचार नवनीत



अनुक्रम

- 52 श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में दिया गया व्याख्यान
- 54 2014 में भाजपा संसदीय दल के नेता चुने जाने पर दिया गया उद्बोधन
- 56 2019 में राजग संसदीय दल के नेता चुने जाने पर दिया गया उद्बोधन
- 58 अमेरिका में 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम में दिया गया भाषण
- 60 लेह में भारतीय सशस्त्र बलों को संबोधित भाषण
- 64 अयोध्या में श्रीराम मंदिर भूमि पूजन के अवसर पर संबोधन
- 68 आत्मनिर्भर भारत अभियान की घोषणा के अवसर पर संबोधन

युवाओं को 'न्यू एज वोटर' के तौर पर नहीं बल्कि 'न्यू एज पॉवर' के रूप में देखें: नरेन्द्र मोदी

6 फरवरी, 2013 को श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में दिए गए व्याख्यान का संपादित पाठ

गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की युवा पीढ़ी को विश्व में हिन्दुस्तान के सामर्थ्य का साक्षात्कार कराने का प्रेरक आह्वान 6 फरवरी, 2013 को नई दिल्ली में श्री राम मेमोरियल ओरेशन के माध्यम से किया। व्यापार प्रबंध के शिक्षा क्षेत्र में भारत के प्रख्यात श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स की ओर से आयोजित बिजनेस कॉन्क्लेव-2013 के समापन समारोह में 2000 से अधिक युवक-युवतियों ने पूरे जोश-खरोश के साथ श्री मोदी का स्वागत किया। हिन्दुस्तान की युवा पीढ़ी की शक्ति और सामर्थ्य पर संपूर्ण भरोसा व्यक्त करते हुए श्री मोदी ने कहा कि 21वीं सदी ज्ञानयुग है और भारत के पास ऐसी सक्षम युवाशक्ति है, जिससे वह एक बार फिर ज्ञान की इस सदी में विश्व की मनुष्य जाति को नेतृत्व प्रदान कर सकता है।

श्री मोदी ने कहा कि उन्हें पूरी श्रद्धा है कि सवा सौ वर्ष पूर्व स्वामी विवेकानंद ने अपने बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान कौशल से समग्र विश्व को चकित कर दिया था और उनकी 150वीं जन्म जयंती के अवसर पर भारत की युवाशक्ति ही भव्य एवं दिव्य भारत का निर्माण कर सकती है। श्री मोदी ने कहा कि, वे पूर्ण रूप से आशावादी हैं और देश की आजादी के बाद के छह दशक में भारत में व्याप्त निराशा और हताशा के माहौल को बदलने के लिए युवाशक्ति पर संपूर्ण भरोसा रखते हैं। उन्होंने कहा कि आज से डेढ़ दशक पूर्व हिन्दुस्तान की छवि गरीब, पीड़ित और पिछड़े देश की थी, जिसे बदलने में इस देश के युवाओं ने अपनी शक्ति का साक्षात्कार करवाया है।

उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान के लिए दुनिया का दृष्टिकोण बदलने में कोई राजनेता नहीं, बल्कि युवा ही सफल रहे हैं।

गुजरात ने यह भरोसा दिलाया है कि किसी भी व्यवस्था और स्थिति को बदला जा सकता है। गुजरात की धरती पर से ही आजादी के आंदोलन की दो अलग-अलग विचारधाराओं ने नेतृत्व किया था, परिणामस्वरूप सशस्त्र क्रांतिकारियों तथा महात्मा गांधी व सरदार पटेल के अहिंसक आंदोलन से देश को स्वराज्य मिला। लेकिन आजादी के 60 वर्षों पश्चात् आज भी हम सुराज्य की अनुभूति नहीं कर सके। बिना सुशासन सुराज्य नहीं आता और सुशासन (गुड गवर्नेंस) की दिशा में गुजरात ने देश और दुनिया को प्रतीति करवाई है। गुजरात का गुड गवर्नेंस मॉडल प्रो-पीपुल प्रोएक्टिव गुड गवर्नेंस (पी2जी2) फार्मुले पर आधारित है।

श्री मोदी ने कहा कि आज हिन्दुस्तान विश्व का सर्वाधिक युवा देश है और देश की आबादी का 65 फीसदी हिस्सा 35 वर्ष तक की आयुसीमा वाली युवाशक्ति का है। हिन्दुस्तान के सम्मुख आज सबसे बड़ी चुनौती देश में मौजूद विपुल

अवसरों को युवाओं को उपलब्ध करवाने की है। उन्होंने कहा कि वोट बैंक की राजनीति की वजह से ही यह देश बर्बाद हुआ है और अब समय की मांग है कि देश को विकास की राजनीति के मार्ग पर ले चलें। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट तौर पर कहा कि वर्तमान राजनीति में युवाओं को 'न्यू एज वोटर' समझा जाता है, लेकिन यही युवा देश का भविष्य है और मैं उन्हें 'न्यू एज ऑफ पॉवर' के रूप में मानता हूँ।

श्री मोदी ने कहा कि 21वीं सदी ज्ञान की सदी है और इस





ज्ञान सदी में भारत ही विश्व का नेतृत्व करेगा, लेकिन इसके लिए स्किल, स्पीड और स्केल की जरूरत है। इस सन्दर्भ में मुख्यमंत्री ने गुड गवर्नेंस के नये आयामों, नई मानसिकता, जन सहयोग और परिस्थिति में बदलाव की सफलता गाथा के अनेक दृष्टांत पेश किए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विश्व की प्रगति यात्रा में यदि भारत को अपनी सर्वोपरिता स्थापित करनी है तो सुराज्य की अनुभूति करवानी ही होगी। आज देश में व्याप्त निराशा के वातावरण को देखते हुए सभी ऐसा महसूस करते हैं कि स्थिति को बदला नहीं जा सकता। लेकिन मैं पूरी तरह से आशावादी हूं। कोई भी ग्लास पानी से आधा भरा हुआ है या आधा खाली है, इसे देखने की दो दृष्टि होती हैं और मेरी सोच कुछ अलग है। मैं मानता हूँ कि यह ग्लास आधा पानी से और आधा हवा से भरा हुआ है।

गुजरात में वही व्यवस्था, वही संविधान, वही सरकारी तंत्र, मानवशक्ति और संसाधन होने के बावजूद हमने सुराज्य की दिशा में स्थिति को बदलने में सफलता हासिल की है। इस सन्दर्भ में उन्होंने मिनिमम गवर्मेंट और मैक्सिमम गवर्नेंस की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत के विकास के लिए गुजरात का विकास कर गुजरात ने देश को विकास की राजनीति का मार्ग बतलाया है। उन्होंने कहा कि हम गरीब या पिछड़े नहीं हैं। हमारे पास बौद्धिक सामर्थ्य वाली विश्व की सबसे युवाशक्ति और प्राकृतिक संसाधन हैं।

जरूरत इस बात की है कि इस युवा और प्राकृतिक संसाधन का विकास के लिए विनियोग किया जाए। श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि विकास की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र के समान हिस्से पर होना चाहिए, जिसे गुजरात ने सफलतापूर्वक साबित कर बताया है। पानी की कमी से जूझता गुजरात आज कृषि क्षेत्र में 10 वर्ष के दौरान 10 फीसदी की सातत्यपूर्ण विकास दर वाला राज्य बना है। उन्होंने कहा कि गुजरात में हर दो वर्ष में वाइब्रेट गुजरात ग्लोबल समिट आयोजित होती है। वहीं, मेरी सरकार के करीबन एक लाख कर्मचारी भरी दुपहरी में गांव-गांव खेतों में जाकर किसानों को लैब टू लैण्ड की वैज्ञानिक खेती के लिए प्रेरित करते हैं।

श्री मोदी ने कहा कि किसानों को जमीन सुधार के लिए साइलेंट हैल्थ कार्ड दिये गए हैं। इन सबके चलते किसान और पशुपालक समृद्धि की ओर अग्रसर हैं। पशु स्वास्थ्य मेलों के चलते करीब 120

पशु रोगों का खात्मा हुआ है और दूध के उत्पादन में 80 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज हुई है। दस वर्ष पूर्व 23 लाख गांठ कपास गुजरात में उत्पादित होता था, जो आज बढ़कर एक करोड़ 23 लाख गांठ तक जा पहुंचा है। गुजरात के किसानों ने विश्व के बाजारों में छा जाने के लिए फाइव एफ फार्मुला अपनाया है। जिसके तहत 'फार्म टू फाइबर, फाइबर टू फैब्रिक, फैब्रिक टू फैशन, फैशन टू फॉरेन' जैसी दिशा अपनाई है। नतीजा यह कि, गांवों की क्रयशक्ति बढ़ी है और उससे राज्य की अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचा है। सेवा क्षेत्र में पर्यटन विकास से गुजरात विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अंकित हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में गुजरात ने अनोखी पहल की है। दस वर्ष पूर्व जहां राज्य में 11 यूनिवर्सिटियां कार्यरत थीं, जबकि आज इनकी संख्या बढ़कर 41 हो गई है। इसमें भी विश्व की सर्वप्रथम फोरेसिक साइंस यूनिवर्सिटी और देश की प्रथम रक्षाशक्ति यूनिवर्सिटी तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एजुकेशन जैसी शैक्षणिक संस्थाएं गुजरात में युवाओं को अनेक अवसर प्रदान कर रही हैं। इसी तरह कौशल विकास के अनेक नये पाठ्यक्रम का विशाल फलक खड़ा किया है।

श्री मोदी ने कहा कि हिन्दुस्तान के पास जो शक्ति और सामर्थ्य की महान विरासत और विशाल युवाशक्ति का मानव बल है, ऐसे में भारत की 'ब्रांड इमेज' खड़ी कर 'मेड इन इंडिया' द्वारा

विश्व के बाजारों में अपनी सर्वोपरिता स्थापित की जा सकती है।

श्री मोदी ने विश्व बाजार में छा जाने के लिए उत्पादनों में 'जीरो डिफेक्ट प्रोडक्ट' और 'पैकेजिंग स्ट्रेटेजी' अपनाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि आज दुनिया भारत को एक बड़े बाजार के तौर पर स्वीकार करती है। लेकिन हमारा संकल्प यह होना चाहिए कि हम अपने सामर्थ्य से विश्व के बाजारों पर छा जाएं। श्री मोदी ने स्वामी विवेकानंद के सपने और संकल्प को मूर्तिमंत करने का युवाशक्ति से अनुरोध करते हुए कहा कि देश के युवाओं का मिजाज ऐसा होना चाहिए कि भारत के दिव्य-भव्य निर्माण के लिए समूचा विश्व देश के युवाओं की ओर नजर दौड़ाए, यही हमारा दायित्व है।

उन्होंने हिन्दुस्तान के नौजवानों से दुनिया के समक्ष आंख से आंख मिलाकर अपने ज्ञान-कौशल की अनुभूति कराने का भी अनुरोध किया। ■

आज हिन्दुस्तान विश्व का सर्वाधिक युवा देश है और देश की आबादी का 65 फीसदी हिस्सा 35 वर्ष तक की आयुसीमा वाली युवाशक्ति का है। हिन्दुस्तान के सम्मुख आज सबसे बड़ी चुनौती देश में मौजूद विपुल अवसरों को युवाओं को उपलब्ध करवाने की है।

'जैसे भारत मेरी मां है, वैसे ही भाजपा भी मेरी मां है'

संसद के केन्द्रीय सभागार में 20 मई 2014 को भाजपा संसदीय दल के नेता चुने जाने के पश्चात् श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण के प्रमुख अंश

श्री नरेन्द्र मोदी भाजपा संसदीय दल के नेता चुने जाने के बाद अपने सम्बोधन में भावुक हो गए। पार्टी को भी मां बताते हुए उन्होंने कहा कि बेटा कभी मां पर कृपा नहीं कर सकता। वह सिर्फ सेवा कर सकता है। उन्होंने नवनिर्वाचित सांसदों को यह भी याद दिलाया कि अब जिम्मेदारी का युग है। जनता की आशा-आकांक्षा को पूरा करने के लिए स्वयं को समर्पित करने के लिए तैयार रहें।

मैं आप सबका बहुत-बहुत आभारी हूँ कि आपने सर्वसम्मति से मुझे एक नया दायित्व दिया है। विशेष रूप से आडवाणी जी और राजनाथ जी का आभारी हूँ। उन्होंने मुझे आशीर्वाद भी दिया। मैं सोच रहा था कि अटल जी का स्वास्थ्य अच्छा होता और आज वे यहां होते तो सोने में सुहागा होता।

यह लोकतंत्र का मंदिर है। हम सब इस मंदिर में पूरी पवित्रता के साथ पद के लिए नहीं, सवा सौ करोड़ देशवासियों की आशा-आकांक्षाओं को समेट कर बैठे हैं। इसलिए पदभार जीवन में बहुत बड़ी बात होती है, ऐसा मैंने कभी नहीं माना। लेकिन कार्यभार, जिम्मेवारी ये सबसे बड़ी बात होती है और हमें उसे परिपूर्ण करने के

लिए अपने आपको समर्पित करना होगा।

13 सितंबर को भारतीय जनता पार्टी की पार्लियामेंटरी बोर्ड ने, राजनाथ जी की अध्यक्षता में मेरे लिए जिम्मेवारी तय की। यह 13 तारीख को तय हुआ और 15 से मैंने अपना काम शुरू किया। 10 मई को जब चुनाव प्रचार समाप्त हुआ, मैंने अध्यक्ष जी को फोन किया। मैंने कहा मैं अहमदाबाद जाने से पहले दिल्ली आकर आपसे मिलना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि आप थके नहीं हो क्या अभी। मैंने कहा नहीं, मुझे रिपोर्ट करना है। उस वक्त मैं पूर्वी उत्तर प्रदेश में था, मैं दिल्ली पहुंचा, उनके पास गया और एक अनुशासित सिपाही की तरह मेरे अध्यक्ष को मैंने रिपोर्ट किया कि जो काम दिया था, वह भली-भांति करने की कोशिश की।

जैसे यहां बताया गया कि मैं पहली बार यहां आया हूँ। शायद मेरे जीवन में हर बार ऐसा ही हुआ है। मुख्यमंत्री बना उसके बाद मैंने मुख्यमंत्री का चैंबर देखा।

मुख्यमंत्री बनने के बाद मैंने विधानसभा गृह देखा। आज भी ऐसा ही एक अवसर आया है। लेकिन हम इस ऐतिहासिक स्थान पर बैठे हैं। यह लोकतंत्र का मंदिर है। सवा सौ करोड़ देशवासियों की आशा,





आकांक्षाएं इस पवित्र मंदिर पर टिकी हुई हैं और मैं आज देश को आजादी दिलाने वाले, आजादी के लिए मर मिटने वाले, आजादी के लिए जीने वाले, आजादी के लिए खपे हुए उन सभी महापुरुषों को प्रणाम करता हूँ। उनकी बदौलत आज देश स्वतंत्रता की अपनी यात्रा पर आगे बढ़ा है। मैं भारत के संविधान निर्माताओं को भी प्रणाम करता हूँ कि इस पवित्र संविधान के कारण लोकतंत्र की ताकत का परिचय दुनिया को हो रहा है। हमारे संविधान निर्माताओं ने देश को जो संविधान दिया उसकी ताकत देखिए कि एक गरीब परिवार का व्यक्ति आज यहां खड़ा है।

इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की जय, किसी की पराजय, ये मुद्दा अपनी जगह पर चर्चा का है। लेकिन इस चुनाव में भारत के सामान्य से सामान्य नागरिक के भीतर नए आत्मविश्वास का संचार हुआ है कि यही एक व्यवस्था है, जो हमारे सपनों को पूरा कर सकती है। लोकतंत्र के प्रति उसकी आस्था बढ़ी है। ये अपने आप में किसी भी राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी ताकत होती है।

आखिरकार सरकार किसके लिए? मैं स्पष्ट मानता हूँ कि सरकार वो हो, जो गरीबों के लिए सोचे। सरकार वो हो जो गरीबों को सुने। सरकार वो हो जो गरीबों के लिए जिए।

इसलिए नई सरकार देश के गरीबों को समर्पित है, देश के कोटि-कोटि युवकों को समर्पित है और मान सम्मान के लिए तरसती हमारी मां-बहनों को समर्पित है। गांव हो, गरीब हो, किसान हो, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, ये सरकार उनके लिए है।

हम सबकी प्राथमिकता उनकी आशा और उनकी आकांक्षा की पूर्ति करना है। यही हमारा प्रयास रहेगा और हम सबकी भी वही जिम्मेवारी है क्योंकि हमें गरीब से गरीब आदमी ने यहां भेजा है। मैंने चुनाव प्रचार अभियान में ऐसे लोग देखे हैं जिनके शरीर पर एक ही वस्त्र था, फिर भी कंधे पर भाजपा का झंडा दिख रहा था। ये तबका कितनी आशाओं और अपेक्षाओं के साथ हमारे पास आया है। इसलिए हमारे सपने हैं, उनके सपनों को सच करने के लिए।

आडवाणी जी ने एक शब्द प्रयोग किया, मैं आडवाणी जी से प्रार्थना करता हूँ कि वे इस शब्द का उपयोग न करें। उन्होंने कहा, नरेन्द्र भाई ने कृपा की। क्या मातृ सेवा कभी कृपा हो सकती है, कतई नहीं हो सकती। जैसे भारत मेरी मां है, वैसे ही भाजपा भी मेरी मां है।

बेटा कभी मां पर कृपा नहीं कर सकता, बेटा सिर्फ समर्पित भाव से मां की सेवा कर सकता है। कृपा तो पार्टी ने की है कि इस मां की सेवा करने का मुझे अवसर दिया।

मैं कभी ये सोच नहीं रखता हूँ कि पुरानी सरकारों ने कुछ नहीं किया होगा और न ही भाजपा का कोई कार्यकर्ता ऐसी सोच रखता है। देश आजाद हुआ तब से जितनी भी सरकारें आईं, उन्होंने अपने तरह से देश की सेवा करने का प्रयास किया है। अपनी तरह से देश को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। जो-जो अच्छा हुआ, उसके लिए वे सभी सरकारें और उनका नेतृत्व करने वाले बधाई के पात्र हैं। हमारा दायित्व है, अच्छाई को लेकर आगे बढ़ें और अधिक अच्छा करने का प्रयास करें। हम भी देश को कुछ देकर जाएं। सामान्य नागरिक की आशा, आकांक्षाओं के अनुरूप हम कुछ करके जाएं। अगर हमारे मन का ये भाव रहा तो देशवासियों को निराश होने की नौबत नहीं आएगी। अगर देश की जनता ने हंग पार्लियामेंट बनाई होती। फ्रैक्चर्ड मैडेड दिया होता, तो ये कह सकते थे कि सरकार के

प्रति सिर्फ गुस्से का कारण था या 'एंटी इस्टैबलिशमेंट' भाव था। वो तब होता जब सिर्फ फ्रैक्चर्ड मैडेड होता। लेकिन भारतीय जनता पार्टी को संपूर्ण बहुमत देने का मतलब होता है कि लोगों ने आशा और विश्वास के लिए मतदान किया है।

2013 में हमारी राष्ट्रीय परिषद मिली थी, तालकटोरा स्टेडियम में। गुजरात में हम एक बार फिर सरकार बनाकर आए थे। पार्टी ने हम लोगों का बड़ा सम्मान किया था। उस दिन मैंने कहा था कि हम चलें या न चलें, देश चल पड़ा है। आज इतनी बड़ी संख्या में सेंट्रल हॉल भाजपा के समर्पित सेनानियों से भरा पड़ा है। उसका कारण है, देश चल पड़ा है, हम चलें या न चलें।

ये उमंग, ये उत्साह चलता रहेगा लेकिन जिम्मेदारी का युग शुरू हो गया है। शायद इस सभागृह में मेरी तरह बहुत से लोग होंगे, जो आजाद हिंदुस्तान में पैदा हुए। शायद देश में भी पहली बार आजाद हिंदुस्तान में पैदा हुए किसी व्यक्ति के नेतृत्व में सरकार बनेगी। हमें आजादी के जंग लड़ने का सौभाग्य नहीं मिला है। हमें देश के लिए मर मिटने का सौभाग्य नहीं मिला है। हमें देश के लिए जेलों में जवानी खपाने का सौभाग्य नहीं मिला लेकिन कोटि-कोटि जनों ने हमें देश के लिए जीने का अवसर जरूर दिया है। देश के लिए हम

इसलिए नई सरकार देश के गरीबों को समर्पित है, देश के कोटि-कोटि युवकों को समर्पित है और मान सम्मान के लिए तरसती हमारी मां-बहनों को समर्पित है। गांव हो, गरीब हो, किसान हो, दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, ये सरकार उनके लिए है।



भले मर ना पाए, देश के लिए हम भले जूझ ना पाए, देश के लिए भले हमें अत्याचार झेलने का अवसर नहीं मिला लेकिन आजाद हिन्दुस्तान में पैदा हुए हर व्यक्ति के लिए जीवन का संकल्प होना चाहिए, देश के लिए जीएंगे। अगर हम ये सपना लेकर चलते हैं तो देश बहुत तेजी से संकट से बाहर निकल कर आगे बढ़ना शुरू कर देता है।

मैं स्वभाव से आशावादी व्यक्ति हूँ, मेरे जीवन में निराशा नहीं है। एक बार एक कॉलेज में भाषण हुआ था तो एक बात कही थी। आज मुझे वो बात एक बार फिर से कहने का मन कर रहा है। मैंने कहा कि कोई इस गिलास के सम्बन्ध में बताओ तो किसी ने कहा ये आधा भरा है, कोई कहता है ये आधा खाली है। मेरी सोच तीसरे प्रकार की है। मैं कहता हूँ ये गिलास आधा पानी से भरा है और आधा हवा से भरा है। आपको खाली नजर आता है, मुझे हवा से भरा नजर आता है और इसलिए मैं कहता हूँ मैं बहुत ही आशावादी व्यक्ति हूँ। सकारात्मक मार्ग के लिए आशावादी होना बहुत ही जरूरी है। आशावादी व्यक्ति ही देश में आशा का संचार कर सकते हैं। निराशावादी व्यक्ति कभी देश में आशा का संचार नहीं कर सकता है। संकट आते हैं, किस पर नहीं आए जीवन में? मुझे याद है 2001 में गुजरात का भयंकर भूकम्प। हम मौत की चादर ओढ़ कर सोए थे और पूरा विश्व मानता था कि अब गुजरात खत्म। देखते ही देखते वो खड़ा हो गया और दौड़ पड़ा। मैं देशवासियों को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हमें निराशा छोड़नी होगी। पुराने अनुभव कितने ही बुरे क्यों न हों? उसके आधार पर निराशा मन को लेकर चलने की आवश्यकता नहीं है।

सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम चलें, तो देश सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा। दुनिया में कौन सा ऐसा देश है जहां पर छह ऋतुएं हैं। हम ही तो हैं, ईश्वर की इतनी बड़ी कृपा है हम पर। प्राकृतिक संपदाओं से भरी हुई हमारी धरा उर्वरा है। यहां के लोग जब बाहर जाते हैं तो दुनिया में नाम कमाते हैं। बस, उन्हें अवसर देने की देर है, शक्ति तो उनके भीतर पड़ी हुई है। अगर ये अवसर देने के भाव से हम आगे बढ़ें। इस चुनाव में हमने दो बातों पर बहुत बल दिया, उन बातों को लेकर हमें आगे बढ़ना है और वो है, 'सबका साथ, सबका विकास'। हम सबका विकास चाहते हैं लेकिन सबका साथ उतना ही अनिवार्य है। उस मंत्र को लेकर हम आगे बढ़ना चाहते हैं। ये चुनाव एक नई आशा का चुनाव है, ऐसे सामर्थ्यवान साथी मुझे मिले हैं।

मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि जब 2019 में हम मिलेंगे तो मैं आपको और देशवासियों को फिर अपना रिपोर्ट कार्ड दूंगा। परिश्रम की पराकाष्ठा करूंगा। अपने लिए नहीं देश के लिए जिऊंगा।

2015-2016 पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का शताब्दी वर्ष है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने हमें जो रास्ता दिखाया था उसमें विचार से ज्यादा ताकत आचरण की थी। उसको हम कैसे निभाएं? पंडित दीनदयाल जी के शताब्दी पर्व के लिए पार्टी भी सोचे, सरकार भी। दरिद्र नारायण की सेवा, अंत्योदय। ये विचार पंडित जी ने हमें दिया है।

वैश्विक परिवेश में भारत के चुनाव नतीजे को बहुत सकारात्मक रूप से देखा जा रहा है। जो पहला संदेश जाता है वो विश्व में भारत का रूतबा पैदा करता है। देश के कोटि-कोटि जनों ने किसी दल की सरकार या किसी व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाया हो, ऐसा नहीं है। देश के कोटि-कोटि जनों ने यह जनादेश देकर विश्व के सामने भारत का सिर ऊंचा करने का अवसर पैदा किया। इस चुनाव को कौन जीता, कौन हारा, उस दायरे में देखने का समय चला गया। ये वो नतीजे हैं, जो विश्व को भारत की लोकतांत्रिक सामर्थ्य की तरफ आकर्षित करते हैं।

कभी हम ऐसी गलती न करें। देखिए मुझे टिकट दिया तो कैसे जीत गया, उसे मिलता तो नहीं जीतता। ऐसे भ्रम में ना रहें।

आज हमने जो कुछ भी पाया है वो पांच-पांच पीढ़ी खप गई हैं तब पाया है। मैं आज उन सभी पीढ़ियों को जिन्होंने राष्ट्रवादी विचार को लेकर के अपने-अपने तरीके से तपस्या की है, जीवन खपाए हैं, उनको नतमस्तक होकर नमन करता हूँ। हम आज अपने कारण यहां नहीं हैं। उनकी तपस्या के कारण हैं।

अगर इतना सा मन में हमेशा बना रहा तो मैं नहीं मानता हूँ कि हमें कभी भी समाज के लिए, दल के लिए, साथियों के लिए शिकायत का अवसर आएगा। हमारी ताकत संगठन है, हममें से कोई न संगठन से ऊपर है ना संगठन से परे है, वही हमारे लिए सर्वोपरि है, इसी भाव को लेकर के हम आगे की जिम्मेदारियों को निभाएंगे। आप सबने मुझे एक नई जिम्मेदारी दी है, मैं भली-भांति पूरी कोशिश करूंगा कि आपने मुझसे जो अपेक्षाएं की हैं उनमें कभी भी आपको नीचा देखने का अवसर नहीं आए। फिर एक बार आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद। ■

**सवा सौ करोड़ देशवासी एक कदम चलें,
तो देश सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़
जाएगा। दुनिया में कौन सा ऐसा देश है
जहां पर छह ऋतुएं हैं। हम ही तो हैं, ईश्वर
की इतनी बड़ी कृपा है हम पर। प्राकृतिक
संपदाओं से भरी हुई हमारी धरा उर्वरा
है। यहां के लोग जब बाहर जाते हैं तो
दुनिया में नाम कमाते हैं।**

‘2019 लोकसभा चुनाव ने दिलों को जोड़ने का काम किया’

2019 के लोकसभा चुनाव में ऐतिहासिक जीत के पश्चात् राजग संसदीय दल के नेता चुने जाने के अवसर पर श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण के प्रमुख अंश

हृदय से आप सबका आभार व्यक्त करता हूँ। भाजपा ने संसदीय दल के नेता के रूप में सर्वसम्मति से मुझे चुना। एनडीए के भी सांसदों और दलों ने इसका समर्थन किया। इसके लिए मैं आपका हृदय से बहुत-बहुत आभारी हूँ। आज नए भारत के संकल्प को एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाने के लिए यहां से एक नई यात्रा को आरंभ करने वाले हैं। विशेष रूप से जो पहली बार चुनकर आए हैं, वे विशेष अभिनंदन के अधिकारी हैं। इसलिए मैं उनको अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूँ।

जनता ने हमें सेवाभाव के कारण स्वीकार किया : भारत में तो चुनाव अपने आप में उत्सव था। मतदान भी अनेक रंगों से भरा हुआ था, लेकिन विजयोत्सव उससे भी शानदार था। प्रचंड जनादेश जिम्मेदारियों को भी बहुत बढ़ा देता है। जिम्मेदारियों को हम सहर्ष स्वीकार करने के लिए निकले हुए लोग हैं। उसके लिए नई ऊर्जा, नई उमंग के साथ हमें आगे बढ़ना है। भारत का लोकतंत्र, भारत का मतदाता, भारत का नागरिक उसका जो नीर-क्षीर विवेक है, शायद किसी मापदंड से उसे मापा नहीं जा सकता है। सत्ता का रुतबा भारत के मतदाता को कभी प्रभावित नहीं करता है।

सत्ता-भाव न भारत का मतदाता स्वीकार करता है न पचा पाता है। इस देश की विशेषता है कि बड़े से बड़े सत्ता सामर्थ्य के सामने भी सेवाभाव को वो सिर झुकाकर स्वीकार करता है। हम चाहे भाजपा या एनडीए के प्रतिनिधि बनकर आए हों, जनता ने हमें स्वीकार किया है सेवाभाव के कारण।

वरिष्ठ साथियों ने दिया आशीर्वाद : रामकृष्ण परमहंस का एक ही संदेश रहता था कि जीव में ही शिव है, ये सेवा भाव हमारे लिए और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए इससे बड़ा कोई मार्ग नहीं हो सकता। आज एनडीए के भी सभी वरिष्ठ साथियों ने आशीर्वाद दिया

है। आप सबने मुझे नेता के रूप में चुना है। मैं इसे एक व्यवस्था का हिस्सा मानता हूँ। मैं भी बिल्कुल आप में से एक हूँ, आपके बराबर हूँ। हमें कंधे से कंधा मिलाकर चलना है। एनडीए की यही तो ताकत है, विशेषता है।

सामाजिक एकता का आंदोलन बना यह चुनाव : आम तौर पर चुनाव बांट देता है, दूरियां पैदा करता है, दीवार बना देता है, खाई पैदा कर देता है, लेकिन 2019 के चुनाव ने दीवारों को तोड़ने का काम किया है। दिलों को जोड़ने का काम किया है। 2019 का चुनाव सामाजिक एकता का आंदोलन बन गया, समता भी, ममता भी, समभाव भी, ममभाव भी।



इस वातावरण ने इस चुनाव को एक नई ऊंचाई दी। भारत के लोकतांत्रिक जीवन में, चुनावी परंपरा में देश की जनता ने एक नए युग का प्रारंभ किया है। हम सब उसके साक्षी हैं। 2014 से 2019 तक देश हमारे साथ चला है, कभी-कभी हमसे दो कदम आगे चला है, इस दौरान देश ने हमारे साथ भागीदारी की है। सरकार को हमने जितना चलाया है, उससे ज्यादा सवा सौ करोड़ देशवासियों ने किया है। विश्वास की डोर जब मजबूत होती है, तो सत्ता समर्थक लहर पैदा होती है। यह लहर विश्वास की डोर से बंधी है। ये चुनाव पॉजिटिव वोट का चुनाव

है। फिर से सरकार को लाना है, काम देना है, जिम्मेवारी देनी है। इस सकारात्मक सोच ने इतना बड़ा जनादेश दिया है।

देश परिश्रम की पूजा करता है : हिंदुस्तान के मतदाता में जो नीर-क्षीर विवेक है, उसकी ताकत देखिए। परिश्रम की अगर पराकाष्ठा है और ईमानदारी पर रती भर भी संशय न हो तो देश उसके साथ चल पड़ता है। यह देश परिश्रम की पूजा करता है, यह देश ईमान को सिर पर बैठाता है। यही इस देश की पवित्रता है। जनता ने हमें इतना बड़ा जनादेश दिया है। स्वाभाविक है कि सीना चौड़ा हो जाता है, माथा ऊंचा हो जाता है। जनप्रतिनिधि के लिए ये दायित्व होता है, उसके लिए कोई भेदरेखा नहीं



हो सकती है। जो हमारे साथ थे, हम उनके लिए भी हैं और जो भविष्य में हमारे साथ चलने वाले हैं, हम उनके लिए भी हैं। जनप्रतिनिधियों से मेरा आग्रह रहेगा कि मानवीय संवेदनाओं के साथ अब हमारा कोई पराया नहीं रह सकता है। इसकी ताकत बड़ी होती है। दिलों को जीतने की कोशिश करेंगे।

ट्रंप को जितने वोट मिले थे, उतने हमारे बढ़े : 2014 में भाजपा को जितने वोट मिले और 2019 में जो वोट मिले, उनमें जो वृद्धि हुई, यह वृद्धि करीब-करीब 25 प्रतिशत है। हालांकि ग्लोबल परिदृश्य में देखें तो अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जितने वोट मिले थे, उतना हमारा इंक्रीमेंट है। मेरे जीवन के कई पड़ाव हैं, इसलिए मैं इन चीजों को भली-भांति समझता हूँ, मैंने इतने चुनाव देखे, हार-जीत सब देखे, लेकिन मैं कह सकता हूँ कि मेरे जीवन में 2019 का चुनाव एक प्रकार की तीर्थयात्रा थी। जो शब्दों में कहते हैं कि जनता-जनार्दन ईश्वर का रूप होती है, इसे मैंने चुनाव के दौरान अनुभव किया है।

माताओं-बहनों ने कमाल कर दिया :

आजादी के बाद पहली बार इतने प्रतिशत वोटिंग हुई। इस बार माताओं-बहनों ने कमाल कर दिया है। इस बार महिला सांसदों का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। आजादी के बाद संसद में इतनी महिला सांसदों के बैठने की पहली घटना होगी। भारत की आजादी के बाद संसद में सबसे ज्यादा महिला सांसद चुनकर आई हैं, ये अपने-आप में बहुत बड़ा काम हमारी मातृशक्ति के लिए हुआ है।

एनडीए के पास एनर्जी और सिनर्जी दोनों हैं : देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए गठबंधन की राजनीति को हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों का हिस्सा बनाना ही पड़ेगा। मैं भारत का जो भावी चित्र देख रहा हूँ। इन शक्तियों को जोड़ने के पीछे मेरी सीधी-सीधी समझ है। 'रीजनल एस्पिरेशन' और 'नेशनल एंबिशन' की दो पटरियों पर देश विकास की गति को पकड़ता है। नेशनल एंबिशन यानी 'एनए' प्लस रीजनल एस्पिरेशन यानी 'आरए' मिलकर 'नारा' बनता है और इसी को लेकर हमें आगे बढ़ना है। एनडीए के पास दो महत्वपूर्ण चीजें हैं। एक है एनर्जी और दूसरा है सिनर्जी। ये एनर्जी और सिनर्जी एक ऐसा केमिकल है, जिसको लेकर हम सशक्त और सामर्थ्यवान हुए हैं।

छपास और दिखास से बचना चाहिए : छपास और दिखास से बचना चाहिए। इससे अगर बचकर चलते हैं तो बहुत कुछ बचा सकते हैं। हमारा मोह हमें संकट में डालता है। इसलिए हमारे नए और पुराने साथी इन चीजों से बचें क्योंकि अब देश माफ नहीं करेगा। हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारियां

हैं। हमें इन्हें निभाना है। वाणी से, बर्ताव से, आचार से, विचार से हमें अपने आपको बदलना होगा। हम याद रखें कि लाखों कार्यकर्ताओं की वजह से हमें ये अवसर मिला है। इसलिए हमारे भीतर का कार्यकर्ता जिंदा रहना चाहिए। थोड़ा सा भी अहंकार अपने आसपास के लोगों को दूर कर देता है। अहंकार को जितना हम दूर कर सकते हैं, करना चाहिए।

ये सरकार गरीबों ने बनाई : वीआइपी कल्चर से देश को नफरत है, एयरपोर्ट पर चेकिंग होती है तो हमें बुरा नहीं लगना चाहिए। लालबत्ती को हटाने में कोई पैसा नहीं लगा, लेकिन इसे हटाने से देश में अच्छा मैसेज गया। महात्मा गांधी का सरल रास्ता है कि आप कोई भी निर्णय करें और आप उलझन में हों तो पल भर में आखिरी छोर पर खड़े व्यक्ति को याद कर सोचें कि आप जो कर रहे हैं, वह उसका भला करेगा या नहीं। 2014 में मैंने कहा था, मेरी सरकार इस देश के दलित, पीड़ित, शोषित, आदिवासी को समर्पित है। मैं आज फिर से कहना चाहता हूँ कि पांच साल तक उस मूलभूत बात से अपने आपको ओझल नहीं होने दिया।

2014 से 2019 सरकार हमने प्रमुख रूप से गरीबों के लिए चलाई है और आज मैं ये गर्व से कह सकता हूँ कि ये सरकार गरीबों ने बनाई। गरीबों के साथ जो छल चल रहा था, उस छल में हमने छेद किया है और सीधे गरीब के पास पहुंचे हैं। देश पर इस गरीबी को जो टैग लगा है। उससे देश को मुक्त करना है। गरीबों के हक के लिए हमें जीना-जूझना है, अपना जीवन खपाना है। संविधान को साक्षी मानकर हम संकल्प लें कि देश के सभी वर्गों को

नई ऊंचाइयों पर ले जाना है। पंथ-जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

हम बहुत कुछ करने के लिए आए हैं : हम सबको मिलकर के 21वीं सदी में हिंदुस्तान को ऊंचाइयों पर ले जाना है। 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास', ये हमारा मंत्र है। स्वच्छता अगर जन आंदोलन बन सकता है तो समृद्ध भारत भी जन आंदोलन बन सकता है। हम कुछ करने के लिए नहीं, बहुत कुछ करने के लिए आए हैं। 21वीं सदी भारत की सदी बने, ये हम लोगों का दायित्व है। जिस समाज में एस्पिरेशन नहीं होता है, वो समाज कुछ भी नहीं कर सकता है। विश्व एक ऐसे त्रिकोण पर खड़ा है, जहां विश्व को भारत से बहुत सारी अपेक्षाएं हैं। आप सबने मुझे दायित्व दिया है, लेकिन ये कोई कांट्रैक्ट नहीं है, ये हमारी संयुक्त जिम्मेदारी है। चोट झेलने की जिम्मेदारी मेरी है, सफलता का हक आपका है, भारत का संविधान हमारे लिए सर्वोपरि है। ■

‘आज भारत दृढ़ संकल्पित है’

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 22 सितंबर 2019 को अमेरिका में ‘हॉउडी मोदी’ कार्यक्रम में दिए गए भाषण के प्रमुख अंश

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 22 सितंबर को टेक्सास के ह्यूस्टन में एनआरजी स्टेडियम में आयोजित ‘हॉउडी मोदी’ कार्यक्रम में पचास हजार से अधिक लोगों को संबोधित किया। प्रधानमंत्री के साथ इस कार्यक्रम में संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड जे ट्रम्प भी शामिल हुए।

इस विशाल सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि ह्यूस्टन में एक नया इतिहास और एक नया समन्वय बनता जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा, “डोनाल्ड ट्रम्प और भारत की प्रगति के बारे में बात करने वाले सीनेटर्स की उपस्थिति 1.3 बिलियन भारतीयों की उपलब्धि का सम्मान है।” उन्होंने कहा कि स्टेडियम में उपस्थित जन-समूह की ऊर्जा भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बढ़ते तालमेल को दर्शा रहा है।

श्री मोदी ने कहा कि इस कार्यक्रम का नाम ‘हॉउडी मोदी’ है, लेकिन मोदी अकेले कुछ नहीं हैं। मैं भारत में 130 करोड़ लोगों की

इच्छाओं के लिए काम करने वाला व्यक्ति हूँ। इसलिए जब आप पूछते हैं- हॉउडी मोदी, मैं कहूंगा कि भारत में सब ठीक है। कई भारतीय भाषाओं में “सब कुछ ठीक है” कहते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि विविधता में एकता हमारे जीवंत लोकतंत्र की ताकत है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत दृढ़ संकल्पित है और एक नया भारत बनाने के लिए कड़ी मेहनत भी कर रहा है। उन्होंने कहा कि एक नए और बेहतर भारत के निर्माण के लिए कठिन प्रयास किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, ‘भारत चुनौतियों का सामना नहीं कर रहा है, बल्कि हम उन्हें आगे ले जा रहे हैं। भारत सिर्फ आगे बढ़ने के परिवर्तनों के लिए ही नहीं काम कर रहा है, हम उसके स्थायी समाधान और असंभव को संभव बनाने पर काम कर रहे हैं।’

पिछले पांच वर्षों में एनडीए सरकार की उपलब्धियों पर बात करते हुए श्री मोदी ने कहा कि पिछले पांच वर्षों में 130 करोड़ भारतीयों ने ऐसी चीजें हासिल की हैं जिनकी कल्पना कोई भी नहीं





कर सकता था। हमारा लक्ष्य ऊंचा है, हमारी उपलब्धि और भी ऊंची है।

उन्होंने अपनी सरकार द्वारा घरेलू गैस कनेक्शन प्रदान करने, ग्रामीण स्वच्छता में सुधार लाने, ग्रामीण सड़क हेतु बुनियादी ढांचे का निर्माण करने, बैंक खाते खोलने इत्यादि के बारे में की गई परिवर्तनकारी कार्रवाई का भी उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री ने 'ईज ऑफ लिविंग' और 'ईज ऑफ बिजनेस' के प्रति अपनी सरकार की प्रतिबद्धता को भी दोहराया। उन्होंने 'ईज ऑफ लिविंग' सुनिश्चित करने के लिए अपनी सरकार द्वारा किए गए विभिन्न पहलों जैसे अप्रचलित कानूनों को हटाना, सेवाओं में तेजी, सस्ते डेटा दर, भ्रष्टाचार के खिलाफ कड़ी कार्रवाई, जीएसटी आदि को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार का विकास प्रत्येक भारतीय तक पहुंचेगा।

अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के बारे में बोलते हुए प्रधानमंत्री ने उपस्थित लोगों से अपील करते हुए कहा कि इस तरह की निर्णायक कड़ी कार्रवाई करने के लिए सांसदों को खड़े होकर धन्यवाद ज्ञापन करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 ने

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोगों को विकास और प्रगति से दूर रखा था। प्रधानमंत्री ने कहा, "अब जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के लोगों के पास हर भारतीय के समान अधिकार हैं।"

श्री मोदी ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ कड़ी निर्णायक लड़ाई और जो आतंकवाद को समर्थन करते आए हैं उनके खिलाफ भी कठोर कार्रवाई करने का समय आ गया है। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में राष्ट्रपति ट्रम्प के संकल्प की प्रशंसा की।

प्रधानमंत्री ने राष्ट्रपति श्री ट्रम्प और उनके परिवार को भारत आने का निमंत्रण भी दिया। प्रधानमंत्री ने कहा, "हमारी दोस्ती भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के भविष्य को नई ऊंचाइयां प्रदान करेगी।"

हॉउडी मोदी कार्यक्रम में डोनाल्ड जे ट्रम्प का स्वागत करना मेरे लिए सम्मान और गौरव की बात है, प्रधानमंत्री ने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने हर जगह एक गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा है। उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति का नेतृत्व करने का अपार गुण है। उन्होंने कहा कि जितनी बार मैं इनसे मिला मिला, डोनाल्ड ट्रम्प में वही मित्रता, गर्मजोशी और ऊर्जा महसूस की। ■

**हम सबको मिलकर के 21वीं सदी में
हिंदुस्तान को ऊंचाइयों पर ले जाना है।
'सबका साथ, सबका विकास और सबका
विश्वास' ये हमारा मंत्र है। स्वच्छता अगर
जन आंदोलन बन सकता है तो समृद्ध भारत
भी जन आंदोलन बन सकता है।**

भारत में भी, जहां एक तरफ बड़े-बड़े संकट आते गए, वहीं, सभी बाधाओं को दूर करते हुए अनेक सृजन भी हुए। नए साहित्य रचे गए, नए अनुसंधान हुए, नए सिद्धांत गढ़े गए, यानी, संकट के दौरान भी हर क्षेत्र में सृजन की प्रक्रिया जारी रही और हमारी संस्कृति पुष्पित-पल्लवित होती रही, देश आगे बढ़ता ही रहा। भारत ने हमेशा संकटों को सफलता की सीढ़ियों में परिवर्तित किया है। इसी भावना के साथ, हमें आज भी इन सारे संकटों के बीच आगे बढ़ते ही रहना है। आप भी इसी विचार से आगे बढ़ेंगे, 130 करोड़ देशवासी आगे बढ़ेंगे, तो यही साल, देश के लिये नए कीर्तिमान बनाने वाला साल साबित होगा।

संकट चाहे जितना भी बड़ा हो, भारत के संस्कार, निःस्वार्थ भाव से सेवा की प्रेरणा देते हैं। भारत ने जिस तरह मुश्किल समय में दुनिया की मदद की, उसने आज, शांति और विकास में भारत की भूमिका को और मजबूत किया है।

दुनिया ने इस दौरान भारत की विश्वबंधुत्व की भावना को भी महसूस किया है, और इसके साथ ही, दुनिया ने अपनी संप्रभुता और सीमाओं की रक्षा करने के लिए भारत की ताकत और भारत के commitment को भी देखा है। लद्दाख में भारत की भूमि पर, आंख उठाकर देखने वालों को, करारा जवाब मिला है। भारत, मित्रता निभाता जानता है, तो, आंख-में-आंख डालकर देखना और उचित जवाब देना भी जानता है। हमारे वीर सैनिकों ने दिखा दिया है कि वो कभी भी मां भारती के गौरव पर आंच नहीं आने देंगे।

—श्री नरेन्द्र मोदी, मन की बात, 28 जून 2020

‘वीरता ही शांति की पूर्व शर्त होती है’

3 जुलाई 2020 को लेह में भारतीय सशस्त्र बलों को संबोधित प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण का मूल पाठ

भा रत माता की— जय भारत माता की— जय

साथियों, आपका ये हौसला, आपका शौर्य, और मां भारती के मान-सम्मान की रक्षा के लिए आपका समर्पण अतुलनीय है। आपकी जीवटता भी दुनिया में किसी से भी कम नहीं है। जिन कठिन परिस्थितियों में, जिस ऊंचाई पर आप मां भारती की ढाल बन करके उसकी रक्षा करते हैं, उसकी सेवा करते हैं, उसका मुकाबला पूरे विश्व में कोई नहीं कर सकता।

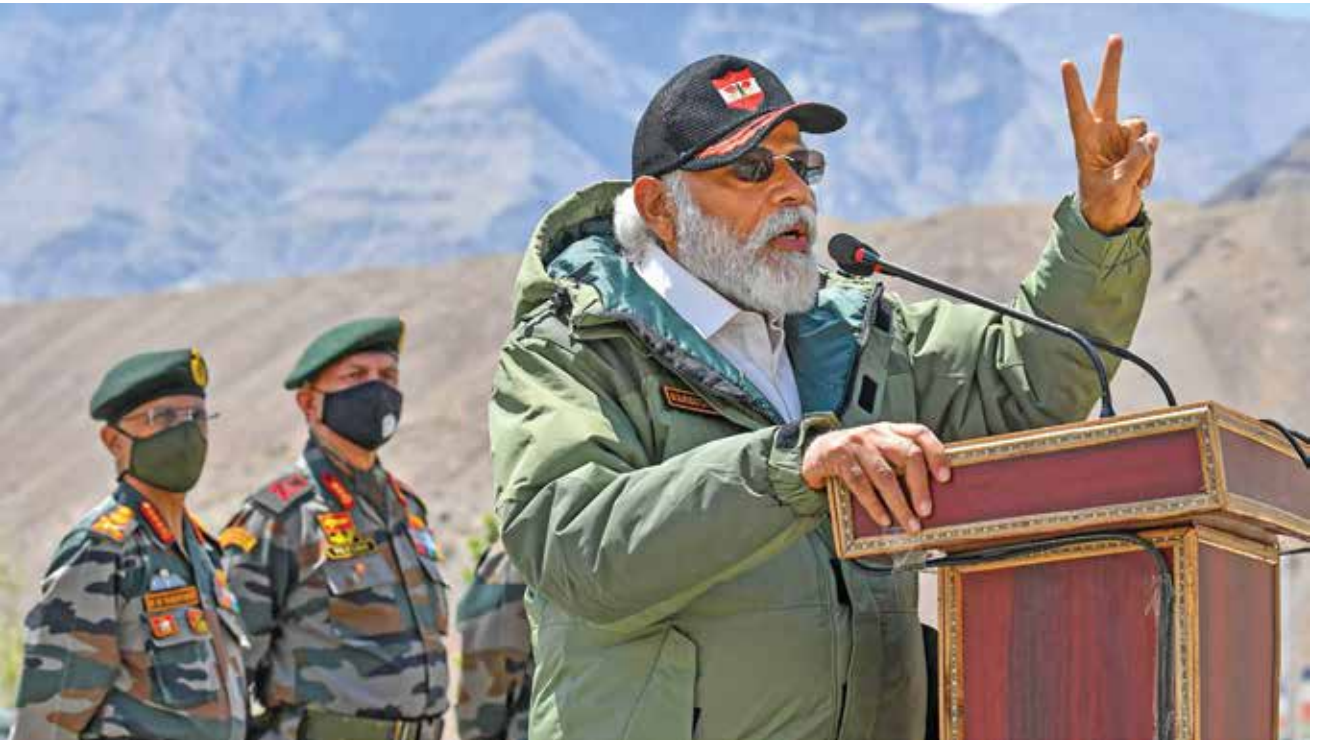
आपका साहस उस ऊंचाई से भी ऊंचा है जहां आप तैनात हैं। आपका निश्चय उस घाटी से भी सख्त है जिसको रोज आप अपने कदमों से नापते हैं। आपकी भुजाएं उन चट्टानों जैसी मजबूत हैं जो आपके इर्द-गिर्द खड़ी हैं। आपकी इच्छाशक्ति आसपास के पर्वतों जितनी अटल है। आज आपके बीच आकर मैं इसे महसूस कर रहा हूं। साक्षात् अपनी आंखों से इसे देख रहा हूं।

जब देश की रक्षा आपके हाथों में है, आपके मजबूत इरादों में है

तो एक अटूट विश्वास है। सिर्फ मुझे नहीं, पूरे देश को अटूट विश्वास है और देश निश्चिंत भी है। आप जब सरहद पर डटे हैं तो यही बात प्रत्येक देशवासी को देश के लिए दिन-रात काम करने के लिए प्रेरित करती है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प आप लोगों के कारण, आपके त्याग, बलिदान, पुरुषार्थ के कारण और मजबूत होता है और अभी जो आपने और आपके साथियों ने वीरता दिखाई है, उसने पूरी दुनिया में ये संदेश दिया है कि भारत की ताकत क्या है।

अभी मेरे सामने महिला फौजियों को भी देख रहा हूं। युद्ध के मैदान में, सीमा पर ये दृश्य अपने-आपको प्रेरणा देता है।

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी ने लिखा था—
जिनके सिंहनाद से सहमी। धरती रही अभी तक डोल।।
कलम, आज उनकी जय बोल। कलम आज उनकी जय बोल।।
तो मैं, आज अपनी वाणी से आपकी जय बोलता हूं, आपका अभिनंदन करता हूं। मैं गलवान घाटी में शहीद हुए अपने वीर जवानों को भी पुनः श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इनमें पूरब से, पश्चिम से,





उत्तर से, दक्षिण से, देश के हर कोने के वीर अपना शौर्य दिखाते थे। उनके पराक्रम, उनके सिंहनाद से धरती अब भी उनका जयकारा कर रही है। आज हर देशवासी का सिर आपके सामने, अपने देश के वीर सैनिकों के सामने आदरपूर्वक नतमस्तक हो करके नमन करता है। आज हर भारतीय की छाती आपकी वीरता और पराक्रम से फूली हुई है।

सिंधु के आशीर्वाद से ये धरती पुण्य हुई है। वीर सपूतों के शौर्य और पराक्रम की गाथाओं को ये धरती अपने-आप में समेटे हुए हैं। लेह-लद्दाख से लेकर करगिल और सियाचिन तक, रिजांगला की बर्फीली चोटियों से लेकर गलवान घाटी के ठंडे पानी की धारा तक, हर चोटी, हर पहाड़, हर जर्जर-जर्जर, हर कंकड़-पत्थर भारतीय सैनिकों के पराक्रम की गवाही देते हैं। 14 corps की जांबाजी के किस्से तो हर तरफ हैं। दुनिया ने आपका अदम्य साहस देखा है, जाना है। आपकी शौर्य गाथाएं घर-घर में गूंज रही हैं और भारत माता के दुश्मनों ने आपकी fire भी देखी है और आपकी fury भी।

लद्दाख का तो ये पूरा हिस्सा, ये भारत का मस्तक, 130 करोड़ भारतीयों के मान-सम्मान का प्रतीक है। ये भूमि भारत के लिए सर्वस्व त्याग करने के लिए हमेशा तैयार रहने वाले राष्ट्रभक्तों की धरती है। इस धरती ने कुशाकबकुला रिनपोछे जैसे महान राष्ट्रभक्त देश को दिए हैं। ये रिनपोछे जी ही, उन्हीं के कारण जिन्होंने दुश्मन के नापाक इरादों में स्थानीय लोगों को लामबंद किया। रिनपोछे की अगुवाई में यहां अलगाव पैदा करने की हर साजिश को लद्दाख की राष्ट्रभक्त जनता ने नाकाम किया है। ये उन्हीं के प्रेरक प्रयासों का परिणाम था कि देश को, भारतीय सेना को लद्दाख स्काउट नाम से Infantry regiment बनाने की प्रेरणा मिली। आज लद्दाख के लोग हर स्तर पर- चाहे वो सेना हो या सामान्य नागरिक के कर्तव्य हों, राष्ट्र को सशक्त करने के लिए अद्भुत योगदान दे रहे हैं। हमारे यहां कहा जाता है-

खड्गोन आक्रम्य वंदिता आक्रमणः पुणिया, वीर भोग्य वसुंधरा

यानी वीर अपने शस्त्र की ताकत से ही धरती की मातृभूमि की

रक्षा करते हैं। ये धरती वीर-भोग्या है, वीरों के लिए है। इसकी रक्षा-सुरक्षा को हमारा समर्थन और सामर्थ्य, हमारा संकल्प हिमालय जितना ही ऊंचा है। ये सामर्थ्य और ये संकल्प, इस समय आपकी आंखों में मैं देख सकता हूं। आपके चेहरों पर ये साफ-साफ नजर आता है। आप उसी धरती के वीर हैं जिसने हजारों वर्षों से अनेक आक्रांताओं के हमलों का, अत्याचारों का मुंहतोड़ जवाब दिया है। हम, और ये हमारी पहचान है, हम वो लोग हैं जो बांसुरीधारी कृष्ण की पूजा करते हैं। हम वही लोग हैं जो सुदर्शन चक्रधारी कृष्ण को भी आदर्श मान करके चलते हैं। इसी प्रेरणा से हर आक्रमण के बाद भारत और सशक्त होकर उभरा है।

राष्ट्र की, दुनिया की, मानवता की प्रगति के लिए शांति और मित्रता हर कोई स्वीकार करता है, हर कोई मानता है बहुत जरूरी है।

लेकिन हम ये भी जानते हैं कि शांति निर्बल कभी नहीं ला सकते। कमजोर शांति की पहल नहीं कर सकते। वीरता ही शांति की पूर्व शर्त होती है। भारत आज जल, थल, नभ और अंतरिक्ष तक अगर अपनी ताकत बढ़ा रहा है तो उसके पीछे का लक्ष्य मानव कल्याण ही है। भारत आज आधुनिक अस्त्र-शस्त्र का निर्माण कर रहा है। दुनिया की आधुनिक से आधुनिक तकनीक भारत की सेना के लिए ला रहे हैं तो उसके पीछे की भावना भी यही है। भारत अगर आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण तेजी से कर रहा है तो उसके पीछे का संदेश भी यही है।

विश्वयुद्ध को अगर हम याद करें,

विश्व युद्ध हो या फिर शांति की बात-

जब भी जरूरत पड़ी है विश्व ने हमारे वीरों का पराक्रम भी देखा है और विश्व शांति के उनके प्रयासों को महसूस भी किया है। हमने हमेशा मानवता की, इंसानियत की, humanity की रक्षा और सुरक्षा के लिए काम किया है, जीवन खपाया है। आप सभी भारत के इसी लक्ष्य को, भारत की इसी परंपरा को, भारत की इस महान संस्कृति को स्थापित करने वाले अगुवा लीडर हैं। साथियो, महान संत तिरुवल्लुवर जी ने सैंकड़ों वर्ष पूर्व कहा था-

मरमानम मांड वडिचेलव् तेट्रम

येना नानो येमम पडईक्कु

यानी शौर्य, सम्मान, मर्यादापूर्ण व्यवहार की परम्परा और विश्वसनीयता, ये चार गुण किसी भी देश की सेना का प्रतिबिम्ब होते



हैं। भारतीय सेनाएं हमेशा से इसी मार्ग पर चली हैं।

विस्तारवाद का युग समाप्त हो चुका है, ये युग विकासवाद का है। तेजी से बदलते हुए समय में विकासवाद ही प्रासंगिक है। विकासवाद के लिए ही अवसर हैं और विकासवाद ही भविष्य का आधार भी है। बीती शताब्दियों में विस्तारवाद ने ही मानवता का सबसे ज्यादा अहित किया, मानवता को विनाश करने का प्रयास किया। विस्तारवाद की जिद जब किसी पर सवार हुई है, उसने हमेशा विश्व शांति के सामने खतरा पैदा किया है।

और ये न भूलें, इतिहास गवाह है कि ऐसी ताकतें मिट गई हैं या मुड़ने के लिए मजबूर हो गई हैं। विश्व का हमेशा यही अनुभव रहा है और इसी अनुभव के आधार पर अब इस बार फिर से पूरे विश्व ने विस्तारवाद के खिलाफ मन बना लिया है। आज विश्व विकासवाद को समर्पित है और विकास की खुली स्पर्धा का स्वागत कर रहा है।

जब-जब मैं राष्ट्र रक्षा से जुड़े किसी निर्णय के बारे में सोचता हूं तो मैं सबसे पहले दो माताओं का स्मरण करता हूँ— पहली हम सभी की भारतमाता, और दूसरी वे वीर माताएं जिन्होंने आप जैसे पराक्रमी योद्धाओं को जन्म दिया है, मैं उन दो माताओं को स्मरण करता हूँ। मेरे निर्णय की कसौटी यही है। इसी कसौटी पर चलते हुए आपके सम्मान, आपके परिवार के सम्मान और भारत माता की सुरक्षा को देश सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

सेनाओं के लिए आधुनिक हथियार हों या आपके लिए जरूरी साजो-सामान, इन सभी पर हम बहुत ध्यान देते रहे हैं। अब देश में बॉर्डर इन्फ्रास्ट्रक्चर पर खर्च करीब-करीब तीन गुना कर दिया गया है। इससे बॉर्डर एरिया डेवलपमेंट और सीमा पर सड़कें, पुल बनाने का काम भी बहुत तेजी से हुआ है। इसका एक बहुत बड़ा लाभ ये ही हुआ है कि अब आप तक सामान भी कम समय में पहुंचता है।

सेनाओं में बेहतर समन्वय के लिए लंबे समय से जिसकी आशा थी— वो Chief of Defence पद का गठन करने की बात हो या फिर National War Memorial का निर्माण; 'One Rank One Pension' का फैसला हो या फिर आपके परिवार की देखरेख

से लेकर शिक्षा तक की सही व्यवस्था के लिए लगातार काम, देश आज हर स्तर पर अपनी सेनाओं और सैनिकों को मजबूत कर रहा है।

भगवान गौतम बुद्ध ने कहा है—

साहस का संबंध प्रतिबद्धता से है, conviction से है। साहस करुणा है, साहस compassion है। साहस वो है जो हमें निर्भीक और अडिग होकर सत्य के पक्ष में खड़े होना सिखाए। साहस वो है जो हमें सही को सही कहने और करने की ऊर्जा देता है।

देश के वीर सपूतों ने गलवान घाटी में जो अदम्य साहस दिखाया, वो पराक्रम की पराकाष्ठा है। देश को आप पर गर्व है, आप पर नाज है। आपके साथ ही हमारे आईटीबीपी के जवान हों, बीएसएफ के

साथी हों, हमारे बीआरओ और दूसरे संगठनों के जवान हों, मुश्किल हालात में काम कर रहे इंजीनियर हों, श्रमिक हों; आप सभी अद्भुत काम कर रहे हैं। हर कोई कंधे से कंधा मिलाकर मां भारती की रक्षा के लिए, मां भारती की सेवा में समर्पित है।

आज आप सभी की मेहनत से देश अनेक आपदाओं से एक साथ और पूरी दृढ़ता से लड़ रहा है। आप सभी से प्रेरणा लेते हुए हम मिलकर हर चुनौती पर, मुश्किल से मुश्किल चुनौती पर विजय प्राप्त करते रहें हैं, विजय प्राप्त करते रहेंगे। जिस भारत के सामने और हम सबने जिस भारत के सपने को लेकर और विशेष रूप से आप सब सरहद पर देश की रक्षा कर रहे हैं, हम उस सपने का भारत बनाएंगे। आपके सपनों का भारत बनाएंगे। 130 करोड़

देशवासी भी पीछे नहीं रहेंगे, ये मैं आज आपको विश्वास दिलाने आया हूँ। हम एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत बनाएंगे, बना करके ही रहेंगे और आपसे प्रेरणा जब मिलती है तो आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी और ताकतवर हो जाता है।

मैं फिर एक बार आप सभी का हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए—

भारत माता की — जय

भारत माता की — जय

वंदे मातरम — वंदे मातरम — वंदे मातरम ■

‘श्रीराम के आदर्शों के साथ भारत आज आगे बढ़ रहा है’

अयोध्या में 5 अगस्त 2020 को श्रीराम मंदिर भूमि पूजन के अवसर पर
प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का मूल पाठ

सियावर रामचंद्र की जय।

जय सियाराम।

जय सियाराम।

आज ये जयघोष सिर्फ सियाराम की नगरी में ही नहीं सुनाई दे रहा, बल्कि इसकी गूंज पूरे विश्व भर में है। सभी देशवासियों को और विश्व भर में फैले करोड़ों भारत भक्तों को, राम भक्तों को, आज के इस पवित्र अवसर की कोटि-कोटि बधाई।

राम काजू कीन्हे बिनु
मोहि कहां विश्राम॥

भारत आज भगवान भास्कर के सान्निध्य में सरयू के किनारे एक स्वर्णिम अध्याय रच रहा है। कन्याकुमारी से क्षीरभवानी तक, कोटेश्वर से कामाख्या तक, जगन्नाथ से केदारनाथ तक, सोमनाथ से काशी विश्वनाथ तक, सम्मेद शिखर से श्रवणबेलगोला तक, बोधगया से सारनाथ तक, अमृतसर से पटना साहिब तक, अंडमान से अजमेर तक, लक्ष्यद्वीप से लेह तक, आज पूरा भारत, राममय है। पूरा देश

रोमांचित है, हर मन दीपमय है। आज पूरा भारत भावुक भी है। सदियों का इंतजार आज समाप्त हो रहा है। करोड़ों लोगों को आज ये विश्वास ही नहीं हो रहा कि वो अपने जीते-जी इस पावन दिन को देख पा रहे हैं।

बरसों से टाट और टेंट के नीचे रह रहे हमारे रामलला के लिए अब एक भव्य मंदिर का निर्माण होगा। टूटना और फिर उठ खड़ा होना, सदियों से चल रहे इस व्यतिक्रम से रामजन्मभूमि आज

मुक्त हो गई है। मेरे साथ फिर एक बार बोलिए, जय सियाराम, जय सियाराम।।।

हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के समय कई-कई पीढ़ियों ने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया था। गुलामी के कालखंड में कोई ऐसा समय नहीं था जब आजादी के लिए आंदोलन न चला हो, देश का कोई भूभाग ऐसा नहीं था जहां आजादी के लिए बलिदान न दिया गया हो। 15 अगस्त का दिन उस अथाह तप का, लाखों बलिदानों का प्रतीक है, स्वतंत्रता की उस उत्कंठ इच्छा, उस भावना का

प्रतीक है। ठीक उसी तरह, राम मंदिर के लिए कई-कई सदियों तक, कई-कई पीढ़ियों ने अखंड अविरत एकनिष्ठ प्रयास किया है। आज का ये दिन उसी तप, त्याग और संकल्प का प्रतीक है।

राम मंदिर के लिए चले आंदोलन में अर्पण भी था तर्पण भी था, संघर्ष भी था, संकल्प भी था। जिनके त्याग, बलिदान और संघर्ष से आज ये स्वप्न साकार हो रहा है, जिनकी तपस्या राममंदिर में

नींव की तरह जुड़ी हुई है, मैं उन सब लोगों को आज नमन करता हूं, उनका वंदन करता हूं। संपूर्ण सृष्टि की शक्तियां, राम जन्मभूमि के पवित्र आंदोलन से जुड़ा हर व्यक्तित्व, जो जहां है, इस आयोजन को देख रहा है, वो भाव-विभोर है, सभी को आशीर्वाद दे रहा है।

राम हमारे मन में गढ़े हुए हैं, हमारे भीतर घुल-मिल गए हैं। कोई काम करना हो, तो प्रेरणा के लिए हम भगवान राम की ओर





ही देखते हैं। आप भगवान राम की अद्भुत शक्ति देखिए। इमारतें नष्ट कर दी गईं, अस्तित्व मिटाने का प्रयास भी बहुत हुआ, लेकिन राम आज भी हमारे मन में बसे हैं, हमारी संस्कृति का आधार हैं। श्रीराम भारत की मर्यादा हैं, श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।

इसी आलोक में अयोध्या में राम जन्मभूमि पर श्री राम के इस भव्य-दिव्य मंदिर के लिए भूमिपूजन हुआ है। यहां आने से पहले मैंने हनुमानगढ़ी का दर्शन किया। राम के सब काम हनुमान ही तो करते हैं। राम के आदर्शों की कलियुग में रक्षा करने की जिम्मेदारी भी हनुमान जी की ही है। हनुमान जी के आशीर्वाद से श्री राममंदिर भूमिपूजन का ये आयोजन शुरू हुआ है।

श्रीराम का मंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा, हमारी शाश्वत आस्था का प्रतीक बनेगा, हमारी राष्ट्रीय भावना का प्रतीक बनेगा और ये मंदिर करोड़ों-करोड़ लोगों की सामूहिक संकल्प शक्ति का भी प्रतीक बनेगा। ये मंदिर आने वाली पीढ़ियों को आस्था, श्रद्धा, और संकल्प की प्रेरणा देता रहेगा। इस मंदिर के बनने के बाद अयोध्या की सिर्फ भव्यता ही नहीं बढ़ेगी, इस क्षेत्र का पूरा अर्थतंत्र भी बदल जाएगा। यहां हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे, हर क्षेत्र में अवसर बढ़ेंगे। सोचिए, पूरी दुनिया से लोग यहां आएंगे, पूरी दुनिया प्रभु राम और माता जानकी का दर्शन करने आएगी। कितना कुछ बदल जाएगा यहां।

राममंदिर के निर्माण की ये प्रक्रिया, राष्ट्र को जोड़ने का उपक्रम है। ये महोत्सव है- विश्वास को विद्यमान से जोड़ने का। नर को नारायण से, जोड़ने का। लोक को आस्था से जोड़ने का। वर्तमान को अतीत से जोड़ने का। और स्व को संस्कार से जोड़ने का। आज के ये ऐतिहासिक पल युगों-युगों तक, दिग-दिगन्त तक भारत की कीर्ति पताका फहराते रहेंगे। आज का ये दिन करोड़ों रामभक्तों के संकल्प की सत्यता का प्रमाण है।

आज का ये दिन सत्य, अहिंसा, आस्था और बलिदान को न्यायप्रिय भारत की एक अनुपम भेंट है। कोरोना से बनी स्थितियों के कारण भूमिपूजन का ये कार्यक्रम अनेक मर्यादाओं के बीच हो रहा है। श्रीराम के काम में मर्यादा का जैसा उदाहरण प्रस्तुत किया जाना चाहिए, देश ने वैसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसी

मर्यादा का अनुभव हमने तब भी किया था जब माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपना ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। हमने तब भी देखा था कि कैसे सभी देशवासियों ने शांति के साथ, सभी की भावनाओं का ध्यान रखते हुए व्यवहार किया था। आज भी हम हर तरफ वही मर्यादा देख रहे हैं।

इस मंदिर के साथ सिर्फ नया इतिहास ही नहीं रचा जा रहा, बल्कि इतिहास खुद को दोहरा भी रहा है। जिस तरह गिलहरी से लेकर वानर और केवट से लेकर वनवासी बंधुओं को भगवान राम की विजय का माध्यम बनने का सौभाग्य मिला, जिस तरह छोटे-छोटे ग्वालों ने भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाने में बड़ी भूमिका निभाई, जिस तरह मावले, छत्रपति वीर शिवाजी की स्वराज स्थापना के निमित्त बने, जिस तरह गरीब-पिछड़े, विदेशी आक्रांताओं के साथ लड़ाई में महाराजा सुहेलदेव के संबल बने, जिस तरह दलितों-पिछड़ों-आदिवासियों, समाज के हर वर्ग ने आजादी की लड़ाई में गांधी जी को सहयोग दिया, उसी तरह आज देशभर के लोगों के सहयोग से राम मंदिर निर्माण का ये पुण्य-कार्य प्रारंभ हुआ है।

जैसे पत्थरों पर श्रीराम लिखकर रामसेतु बनाया गया, वैसे ही घर-घर से, गांव-गांव से श्रद्धापूर्वक पूजा शिलाएं, यहां ऊर्जा का स्रोत बन गई हैं। देश भर के धामों और मंदिरों से लाई गई मिट्टी और नदियों का जल, वहां के लोगों, वहां की संस्कृति और वहां की भावनाएं, आज यहां की शक्ति बन गई हैं। वाकई, ये न भूतो न भविष्यति है। भारत की आस्था, भारत के लोगों की सामूहिकता की ये अमोघ शक्ति, पूरी दुनिया के लिए अध्ययन का विषय है, शोध का विषय है।

श्रीरामचंद्र को तेज में सूर्य के समान, क्षमा में पृथ्वी के तुल्य, बुद्धि में बृहस्पति के सदृश्य और यश में इंद्र के समान माना गया है। श्रीराम का चरित्र सबसे अधिक जिस केंद्र-बिंदु पर घूमता है, वो है सत्य पर अडिग रहना। इसीलिए ही श्रीराम संपूर्ण हैं। इसलिए ही वो हजारों वर्षों से भारत के लिए प्रकाश स्तंभ बने हुए हैं। श्रीराम ने सामाजिक समरसता को अपने शासन की आधारशिला बनाया था। उन्होंने गुरु वशिष्ठ से ज्ञान, केवट से प्रेम, शबरी से मातृत्व, हनुमानजी एवं वनवासी बंधुओं से सहयोग और प्रजा से विश्वास

राम हमारे मन में गढ़े हुए हैं, हमारे भीतर घुल-मिल गए हैं। कोई काम करना हो, तो प्रेरणा के लिए हम भगवान राम की ओर ही देखते हैं। आप भगवान राम की अद्भुत शक्ति देखिए। इमारतें नष्ट कर दी गईं, अस्तित्व मिटाने का प्रयास भी बहुत हुआ, लेकिन राम आज भी हमारे मन में बसे हैं, हमारी संस्कृति का आधार हैं। श्रीराम भारत की मर्यादा हैं, श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं।



प्राप्त किया।

यहां तक कि एक गिलहरी की महत्ता को भी उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। उनका अद्भुत व्यक्तित्व, उनकी वीरता, उनकी उदारता उनकी सत्यनिष्ठा, उनकी निर्भीकता, उनका धैर्य, उनकी दृढ़ता, उनकी दार्शनिक दृष्टि युगों-युगों तक प्रेरित करते रहेंगे। राम प्रजा से एक समान प्रेम करते हैं, लेकिन गरीबों और दीन-दुखियों पर उनकी विशेष कृपा रहती है। इसलिए तो माता सीता, राम जी के लिए कहती हैं-

‘दीन दयाल बिरिदु संभारी’।

यानी जो दीन है, जो दुखी है, उनकी बिगड़ी बनाने वाले श्रीराम हैं।

जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं है, जहां हमारे राम प्रेरणा न देते हों। भारत की ऐसी कोई भावना नहीं है जिसमें प्रभु राम झलकते न हों। भारत की आस्था में राम हैं, भारत के आदर्शों में राम हैं। भारत की दिव्यता में राम हैं, भारत के दर्शन में राम हैं। हजारों साल पहले वाल्मीकि की रामायण में जो राम प्राचीन भारत का पथ प्रदर्शन कर रहे थे, जो राम मध्ययुग में तुलसी, कबीर और नानक के जरिए भारत को बल दे रहे थे, वही राम आजादी की लड़ाई के समय बापू के भजनों में अहिंसा और सत्याग्रह की शक्ति बनकर मौजूद थे। तुलसी के राम सगुण राम हैं, तो नानक और कबीर के राम निर्गुण राम हैं।

भगवान बुद्ध भी राम से जुड़े हैं तो सदियों से ये अयोध्या नगरी जैन धर्म की आस्था का केंद्र भी रही है। राम की यही सर्वव्यापकता भारत की विविधता में एकता का जीवन चरित्र है। तमिल में कंब रामायण तो तेलगू में रघुनाथ और रंगनाथ रामायण हैं। उड़िया में रूइपाद-कातेडपदी रामायण तो कन्नड़ा में कुमुदेन्दु रामायण है। आप कश्मीर जाएंगे तो आपको रामावतार चरित मिलेगा, मलयालम में रामचरितम् मिलेगी। बांग्ला में कृत्तिवास रामायण है तो गुरु गोबिन्द सिंह ने तो खुद गोबिन्द रामायण लिखी है। अलग अलग रामायणों में, अलग अलग जगहों पर राम भिन्न-भिन्न रूपों में मिलेंगे, लेकिन राम सब जगह हैं, राम सबके हैं। इसीलिए, राम भारत की ‘अनेकता में एकता’ के सूत्र हैं।

दुनिया में कितने ही देश राम के नाम का वंदन करते हैं, वहां के नागरिक, खुद को श्रीराम से जुड़ा हुआ मानते हैं। विश्व की सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या जिस देश में है, वो है इंडोनेशिया। वहां हमारे देश की ही तरह ‘काकाविन’ रामायण, स्वर्णद्वीप रामायण, योगेश्वर रामायण जैसी कई अनूठी रामायणें हैं। राम आज भी वहां पूजनीय हैं। कंबोडिया में ‘रमकेर’ रामायण है, लाओ में ‘फ्रा लाक फ्रा लाम’ रामायण है, मलेशिया में ‘हिकायत सेरी राम’ तो थाईलैंड में ‘रामाकेन’ है। आपको ईरान और चीन में भी राम के प्रसंग तथा राम कथाओं का विवरण मिलेगा।

श्रीलंका में रामायण की कथा जानकी हरण के नाम सुनाई जाती है, और नेपाल का तो राम से आत्मीय संबंध, माता जानकी से जुड़ा है। ऐसे ही दुनिया के और न जाने कितने देश हैं, कितने छोर हैं, जहां की आस्था में या अतीत में, राम किसी न किसी रूप में रचे बसे हैं। आज भी भारत के बाहर दर्जनों ऐसे देश हैं जहां, वहां की भाषा में रामकथा, आज भी प्रचलित है। मुझे विश्वास है कि आज इन देशों में भी करोड़ों लोगों को राम मंदिर के निर्माण का काम शुरू होने से बहुत सुखद अनुभूति हो रही होगी। आखिर राम सबके हैं, सब में हैं।

मुझे विश्वास है कि श्रीराम के नाम की तरह ही अयोध्या में बनने वाला ये भव्य राममंदिर भारतीय संस्कृति की

समृद्ध विरासत का द्योतक होगा। मुझे विश्वास है कि यहां निर्मित होने वाला राममंदिर अनंतकाल तक पूरी मानवता को प्रेरणा देगा। इसलिए हमें ये भी सुनिश्चित करना है कि भगवान श्रीराम का संदेश, राममंदिर का संदेश, हमारी हजारों सालों की परंपरा का संदेश, कैसे पूरे विश्व तक निरंतर पहुंचे। कैसे हमारे ज्ञान, हमारी जीवन-दृष्टि से विश्व परिचित हो, ये हमारी, हमारी वर्तमान और भावी पीढ़ियों की ज़िम्मेदारी है। इसी को समझते हुए, आज देश में भगवान राम के चरण जहां जहां पड़े, वहां राम सर्किट का निर्माण किया जा रहा है।

अयोध्या तो भगवान राम की अपनी नगरी है। अयोध्या की महिमा तो खुद प्रभु श्रीराम ने कही है-

“जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि ॥”



यहां राम कह रहे हैं- मेरी जन्मभूमि अयोध्या अलौकिक शोभा की नगरी है। मुझे खुशी है कि आज प्रभु राम की जन्मभूमि की भव्यता, दिव्यता बढ़ाने के लिए कई ऐतिहासिक काम हो रहे हैं।

हमारे यहां शास्त्रों में कहा गया है-“**त्राम सदृशो राजा, प्रथिव्याम् नीतिवान् अभूत् ॥**” यानी कि, पूरी पृथ्वी पर श्रीराम के जैसा नीतिवान शासक कभी हुआ ही नहीं। श्रीराम की शिक्षा है-“**नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना ॥**” कोई भी दुखी न हो, गरीब न हो। श्रीराम का सामाजिक संदेश है- “**प्रहृष्ट नर नारीकः, समाज उत्सव शोभितः ॥**” नर-नारी सभी समान रूप से सुखी हों। श्रीराम का निर्देश है- “**कच्चित् ते दयितः सर्वे, कृषि गोरक्ष जीविनः ॥**” किसान, पशुपालक सभी हमेशा खुश रहें। श्रीराम का आदेश है-

“**कश्चिद्बुद्धान्चबालान्च, वैद्यान् मुख्यान् राघव। त्रिभिः एतैः बुभूषसे ॥**” बुजुर्गों की, बच्चों की, चिकित्सकों की सदैव रक्षा होनी चाहिए। श्रीराम का आह्वान है- “**जौं सभित आवा सरनाई। रखिहंड ताहि प्रान की नाई ॥**” जो शरण में आए, उसकी रक्षा करना सभी का कर्तव्य है। श्रीराम का सूत्र है- “**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥**” अपनी मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। ये भी श्रीराम की ही नीति है- “**भय बिनु होइ न प्रीति ॥**”

इसलिए हमारा देश जितना ताकतवर होगा, उतनी ही प्रीति और शांति भी बनी रहेगी।

राम की यही नीति और रीति सदियों से भारत का मार्गदर्शन करती रही है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने, इन्हीं सूत्रों, इन्हीं मंत्रों के आलोक में, रामराज्य का सपना देखा था। राम का जीवन, उनका चरित्र ही गांधीजी के रामराज्य का रास्ता है।

स्वयं प्रभु श्रीराम ने कहा है-

देशकाल अवसर अनुहारी। बोले बचन बिनीत बिचारी ॥

अर्थात्, राम समय, स्थान और परिस्थितियों के हिसाब से बोलते हैं, सोचते हैं, करते हैं।

राम हमें समय के साथ बढ़ना सिखाते हैं, चलना सिखाते हैं। राम परिवर्तन के पक्षधर हैं, राम आधुनिकता के पक्षधर हैं। उनकी इन्हीं प्रेरणाओं के साथ, श्रीराम के आदर्शों के साथ भारत आज आगे बढ़ रहा है।

प्रभु श्रीराम ने हमें कर्तव्यपालन की सीख दी है, अपने कर्तव्यों को कैसे निभाएं इसकी सीख दी है। उन्होंने हमें विरोध से निकलकर, बोध और शोध का मार्ग दिखाया है। हमें आपसी प्रेम और भाईचारे के जोड़ से राममंदिर की इन शिलाओं को जोड़ना है। हमें ध्यान रखना है, जब जब मानवता ने राम को माना है विकास हुआ है, जब जब हम भटके हैं विनाश के रास्ते खुले हैं। हमें सभी की भावनाओं का ध्यान रखना है। हमें सबके साथ से,



सबके विश्वास से, सबका विकास करना है। अपने परिश्रम, अपनी संकल्पशक्ति से एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है। तमिल रामायण में श्रीराम कहते हैं-

“कालम् ताय, ईण्ड इनुम इरुत्ति पोलाम् ॥”

भाव ये कि, अब देरी नहीं करनी है, अब हमें आगे बढ़ना है।

आज भारत के लिए भी, हम सबके लिए भी, भगवान राम का यही संदेश है। मुझे विश्वास है, हम सब आगे बढ़ेंगे, देश आगे बढ़ेगा। भगवान राम का ये मंदिर

युगों-युगों तक मानवता को प्रेरणा देता रहेगा, मार्गदर्शन करता रहेगा। वैसे कोरोना की वजह से जिस तरह के हालात हैं, प्रभु राम का मर्यादा का मार्ग आज और अधिक आवश्यक है।

वर्तमान की मर्यादा है, दो गज की दूरी- मास्क है जरूरी। मर्यादाओं का पालन करते हुए सभी देशवासियों को प्रभु राम स्वस्थ रखें, सुखी रखें, यही प्रार्थना है। सभी देशवासियों पर माता सीता और श्रीराम का आशीर्वाद बना रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, सभी देशवासियों को एक बार फिर बधाई।

बोलो सियापति रामचंद्र की...जय ॥ ॥ ॥

‘यह हमारे लोकल उत्पादों का गर्व से प्रचार करने और उन्हें वैश्विक बनाने का समय है’

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मई 2020 को ‘20 लाख करोड़ रुपये’ के विशेष आर्थिक पैकेज’ की घोषणा करते हुए ‘आत्मनिर्भर भारत’ बनाने का आह्वान किया

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र को संबोधित करते हुए कोविड काल से पहले और बाद की दुनिया का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि 21वीं सदी को भारत की सदी बनाने के सपने को पूरा करने के लिए यह सुनिश्चित करते हुए आगे बढ़ना है कि देश आत्मनिर्भर हो जाए। संकट को एक अवसर में बदलने की बात कहते हुए उन्होंने पीपीई किट और एन-95 मास्क का उदाहरण दिया, जिनका भारत में उत्पादन लगभग नगण्य से बढ़कर 2-2 लाख पीस प्रतिदिन के उच्च स्तर पर पहुंच गया है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भूमंडलीकृत दुनिया में आत्मनिर्भरता के मायने बदल गए हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब भारत आत्मनिर्भरता की बात करता है, तो वह आत्मकेंद्रित व्यवस्था की वकालत नहीं करता है। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति दुनिया को एक परिवार के रूप में मानती है और भारत की प्रगति में हमेशा विश्व की प्रगति समाहित रही है। उन्होंने कहा कि दुनिया को भरोसा है कि संपूर्ण मानवता के विकास में भारत का काफी योगदान है।

आत्मनिर्भर भारत के पांच स्तंभ

भूकंप के बाद कच्छ में मची तबाही को स्मरण करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि दृढ़ संकल्प की बदौलत यह क्षेत्र फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ठीक इसी तरह के दृढ़ संकल्प की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत इन पांच स्तंभों पर खड़ा होगा:

अर्थव्यवस्था, जो वृद्धिशील परिवर्तन नहीं, बल्कि लंबी छलांग सुनिश्चित करती है;

बुनियादी ढांचा, जिसे भारत की पहचान बन जाना चाहिए;
प्रणाली (सिस्टम), जो 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्थाओं पर आधारित हो;

उत्साहशील आबादी, जो आत्मनिर्भर भारत के लिए हमारी ऊर्जा का स्रोत है;

और **मांग**, जिसके तहत हमारी मांग एवं आपूर्ति शृंखला (सप्लाई चेन) की ताकत का उपयोग पूरी क्षमता से किया जाना





चाहिए।

उन्होंने मांग बढ़ाने के साथ-साथ इसे पूरा करने के लिए भी आपूर्ति शृंखला के सभी हितधारकों को मजबूत करने के महत्व को रेखांकित किया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान

प्रधानमंत्री ने एक विशेष आर्थिक पैकेज की घोषणा की और आत्मनिर्भर भारत बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कोविड संकट के दौरान सरकार द्वारा इससे पहले की गई घोषणाओं और आरबीआई द्वारा लिए गए निर्णयों से जुड़ी राशि को मिला देने पर यह पैकेज 20 लाख करोड़ रुपये का है, जो भारत की जीडीपी के लगभग 10% के बराबर है। उन्होंने कहा कि यह पैकेज 'आत्मनिर्भर भारत' बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काफी सहायक साबित होगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पैकेज भूमि, श्रम, तरलता और कानूनों पर भी फोकस करेगा। यह कुटीर उद्योग, एमएसएमई, मजदूरों, मध्यम वर्ग, उद्योगों सहित विभिन्न वर्गों की जरूरतों को पूरा करेगा। उन्होंने बताया कि पैकेज का विवरण वित्त मंत्री द्वारा कल से ही आने वाले कुछ दिनों तक पेश किया जाएगा।

पिछले छह वर्षों में लागू किए गए जैम ट्रिनिटी जैसे सुधारों के सकारात्मक प्रभाव के बारे में बात करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा

आत्मनिर्भरता देश को वैश्विक आपूर्ति शृंखला में कड़ी प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगी, और यह आवश्यक है कि देश इस प्रतिस्पर्धा में अवश्य ही जीत हासिल करे। पैकेज तैयार करते समय इसे भी ध्यान में रखा गया है। यह न केवल विभिन्न सेक्टरों में दक्षता बढ़ाएगा, बल्कि गुणवत्ता भी सुनिश्चित करेगा।

कि देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई साहसिक सुधारों की आवश्यकता है, ताकि भविष्य में कोविड जैसे संकट को कोई भी प्रभाव पड़ने से बचा जा सके। इन सुधारों में कृषि के लिए आपूर्ति शृंखला संबंधी सुधार, तर्कसंगत कर प्रणाली, सरल एवं स्पष्ट कानून, सक्षम मानव संसाधन और एक मजबूत वित्तीय प्रणाली शामिल हैं। ये सुधार कारोबार को बढ़ावा देंगे, निवेश को आकर्षित करेंगे एवं 'मेक इन इंडिया' को और भी अधिक मजबूत करेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भरता देश को वैश्विक आपूर्ति शृंखला में कड़ी

प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगी और यह आवश्यक है कि देश इस प्रतिस्पर्धा में अवश्य ही जीत हासिल करे। पैकेज तैयार करते समय इसे भी ध्यान में रखा गया है। यह न केवल विभिन्न सेक्टरों में दक्षता बढ़ाएगा, बल्कि गुणवत्ता भी सुनिश्चित करेगा।

देश में इनके योगदान पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पैकेज संगठित और असंगठित दोनों ही क्षेत्रों के गरीबों, मजदूरों, प्रवासियों इत्यादि को सशक्त बनाने पर भी फोकस करेगा।

उन्होंने कहा कि संकट ने हमें लोकल (स्थानीय या स्वदेशी) विनिर्माण, लोकल बाजार और लोकल आपूर्ति शृंखलाओं के विशेष महत्व को सिखा दिया है। संकट के दौरान हमारी सभी जरूरतें 'स्थानीय स्तर पर' यानी देश में ही पूरी हुईं। उन्होंने कहा कि अब लोकल उत्पादों का गर्व से प्रचार करने और इन लोकल उत्पादों को वैश्विक बनाने में मदद करने का समय आ गया है। ■

देश को कमजोर बनाने वाली बुराइयां भारत छोड़ें, इससे अच्छा और क्या होगा। इसी सोच के साथ बीते 6 साल से देश में एक व्यापक भारत छोड़ो अभियान चल रहा है।

गरीबी - भारत छोड़ो!

खुले में शौच की मजबूरी - भारत छोड़ो!

पानी के दर-दर भटकने की मजबूरी - भारत छोड़ो !

सिंगल यूज प्लास्टिक - भारत छोड़ो।

भेदभाव की प्रवृत्ति - भारत छोड़ो !

भ्रष्टाचार की कुरीति - भारत छोड़ो !

आतंक और हिंसा - भारत छोड़ो !

—श्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय स्वच्छता केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर, 8 अगस्त 2020

70 ऐतिहासिक निर्णय



प्र धानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में अनेक ऐतिहासिक कार्य किए, जिसने देश की छवि बदलकर रख दी। स्वच्छ भारत से लेकर आयुष्मान भारत तक, अनुच्छेद 370 की समाप्ति से लेकर तीन तलाक हटाने तक और श्री राम मंदिर का मार्ग प्रशस्त करने से लेकर इसकी आधारशिला रखने तक मोदी सरकार ने कई युगांतकारी निर्णय लिए। यहां प्रस्तुत है मोदी सरकार के 70 प्रमुख ऐतिहासिक निर्णय:

व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन

1 अनुच्छेद 370 हटा: दो नये केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर और लद्दाख बने : जम्मू-कश्मीर से धारा 370 का कलंक हटा और राज्य में तीव्र विकास के रास्ते खुले। जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन बिल 2019 को राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 9 अगस्त 2019 को मंजूरी दी। दो नये केंद्रशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर और लद्दाख 31 अक्टूबर को अस्तित्व में आए। जम्मू-कश्मीर एवं लद्दाख के दो केंद्रशासित प्रदेश के निर्माण से जनता के लिए अनगिनत सम्भावनाओं के द्वार खुल गए हैं।

MAP OF UT OF JAMMU & KASHMIR AND UT OF LADAKH



2



रा म मंदिर निर्माण के लिए रखी गई आधारशिला: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या में 5 अगस्त 2020 को राम मंदिर निर्माण के लिए पूर्ण विधि-विधान के साथ भूमि पूजन किया तथा मंदिर की आधारशिला रखी। श्री मोदी ने मंदिर की नींव की मिट्टी से अपने माथे पर तिलक लगाया। पिछले साल उच्चतम न्यायालय ने इस विवाद का निपटारा कर श्री राम जन्मभूमि पर मंदिर बनाने का मार्ग प्रशस्त किया था। तत्पश्चात् श्री राम मंदिर निर्माण के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संसद में 'श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट' की घोषणा की। बरसों से टाट और टेंट के नीचे रह रहे 'रामलला' के लिए अब एक भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू हो चुका है।



नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019

3 नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 में अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान से धार्मिक प्रताड़ना के कारण भारत आए हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई समुदायों के लोगों को भारतीय नागरिकता देने का प्रावधान है। यह अधिनियम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों से लिखा जायेगा।



बोडो समझौता

4 ऐतिहासिक बोडो समझौता (27 जनवरी 2020) बोडो लोगों के लिए परिवर्तनकारी परिणाम वाला रहा। इस समझौते के परिणामस्वरूप 1500 से अधिक हथियारधारी सदस्यों ने हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा से जुड़ने का निर्णय लिया। समझौते के तहत केंद्र और राज्य सरकार ने बोडो क्षेत्रों के विकास के लिए 1,500 करोड़ रुपए के एक विशेष पैकेज को मंजूरी दी।

ब्रू-रियांग समझौता

त्रिपुरा में ब्रू-रियांग समुदाय को बसाने पर ऐतिहासिक निर्णय में भारत सरकार, त्रिपुरा एवं मिज़ोरम सरकार और ब्रू-रियांग प्रतिनिधियों के बीच 16 जनवरी 2020 को एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस नए समझौते से करीब 23 वर्षों से चल रही इस बड़ी मानव समस्या का स्थायी समाधान होगा तथा करीब 34 हजार व्यक्तियों को त्रिपुरा में बसाया जाएगा।

तीन तलाक गैरकानूनी

5 प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की दृढ़ इच्छाशक्ति और संविधान के प्रति पूरी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता ही है कि मोदी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को करोड़ों मुस्लिम महिलाओं के हक में अपनी राय दी। सर्वोच्च न्यायालय के तीन तलाक पर निर्णय से आज करोड़ों मुस्लिम महिलाएं इस कुप्रथा के कलंक से मुक्त हो खुली हवा में सांस ले रही हैं। इस संबंध में मोदी सरकार ने तीन तलाक की कुप्रथा पर कड़े कानून 'मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) विधेयक, 2019' बनाकर मुस्लिम महिलाओं का सशक्तिकरण किया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान

6 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मई, 2020 को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए भारत की जीडीपी के 10% के बराबर 20 लाख करोड़ रुपये के विशेष आर्थिक और व्यापक पैकेज की घोषणा की। इस पैकेज में कोविड-19 से लड़ने वाले प्रत्येक स्वास्थ्यकर्मी को 50 लाख रुपये का बीमा कवर, 80 करोड़ गरीबों को नवंबर, 2020 तक हर माह मुफ्त 5 किलो गेहूं या चावल और पसंद की 1 किलो दालें, एमएसएमई सहित व्यवसायों के लिए 3 लाख करोड़ रुपये की आपातकालीन कार्यशील पूंजी सुविधा, डिस्कॉम के लिए 90,000 करोड़ रुपये की तरलता आदि शामिल हैं।





7 **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:** प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 29 जुलाई को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी दे दी, जिससे स्कूली और उच्च शिक्षा दोनों क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर रूपांतरकारी सुधार के रास्ते खुल गए हैं। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और यह 34 साल पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 की जगह लेगी। इसमें 2030 तक स्कूली शिक्षा में 100% सकल नामांकन अनुपात के साथ पूर्व-विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य गया है।

8 **स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी:** गुजरात के नर्मदा जिले के केवड़िया में 182 मीटर ऊंची सरदार पटेल की स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी दुनिया में अपनी तरह की सबसे ऊंची प्रतिमा है। भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री तथा प्रथम गृहमंत्री श्री वल्लभभाई पटेल के सम्मान में इसका निर्माण किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 31 अक्टूबर 2018 को इसका उद्घाटन किया था।

9 **खुले में शौच से मुक्त हुआ भारत:** प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अहमदाबाद में 2 अक्टूबर 2019 को देश को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया। उन्होंने कहा कि केवल शौचालयों का निर्माण ही काफी नहीं है, बल्कि इनके इस्तेमाल को आदत का हिस्सा बनाना भी जरूरी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि स्वच्छता के अभियान के चलते देश की उत्पादकता भी बढ़ी है।



10 **जन केंद्रित आर्थिक कार्यक्रमों की बुनियाद:** 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' मोदी सरकार के जन केंद्रित आर्थिक कार्यक्रमों की बुनियाद रही है। चाहे प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण हो अथवा कोविड-19 संबंधी वित्तीय सहायता, पीएम-किसान, मनरेगा के तहत मजदूरी में वृद्धि, जीवन एवं स्वास्थ्य बीमा कवर, प्रत्येक वयस्क को बैंक खाता प्रदान करने के लिए उठाया गया पहला कदम था जिसे पीएमजेडीवाई ने लगभग पूरा कर लिया है।

पीएमजेडीवाई के तहत 28 अगस्त 2020 तक 40.35 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को बैंकिंग से जोड़ा गया है। इनमें 63.6 प्रतिशत ग्रामीण पीएमजेडीवाई खाते हैं और 55.2 प्रतिशत महिला पीएमजेडीवाई खाते हैं। पीएम गरीब कल्याण योजना के तहत अप्रैल से जून 2020 के दौरान महिला पीएमजेडीवाई खाताधारकों के खातों में कुल 30,705 करोड़ रुपये जमा किए गए हैं। साथ ही, लगभग 8 करोड़ पीएमजेडीवाई खाताधारक सरकार से विभिन्न योजनाओं के तहत प्रत्यक्ष लाभ अंतरण प्राप्त करते हैं।

11 **'मिशन कर्मयोगी':** केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 2 सितंबर 2020 को 'मिशन कर्मयोगी' की मंजूरी दे दी। यह सरकार में मानव संसाधन प्रबंधन कार्य प्रणाली में मौलिक सुधार करेगा। यह सरकारी कर्मचारियों की क्षमता बढ़ाने के लिए आधुनिक बुनियादी ढांचे का उपयोग करेगा। 'मिशन कर्मयोगी' का उद्देश्य पारदर्शिता और प्रौद्योगिकी के माध्यम से भविष्य के लिए सरकारी कर्मचारियों को अधिक सृजनात्मक, रचनात्मक और नवोन्मेषी बनाना है।

12 **करतारपुर गलियारा राष्ट्र को समर्पित:** करतारपुर गलियारे की चैक पोस्ट के शुरू हो जाने से पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा करतारपुर साहेब जाने के लिए भारतीय श्रद्धालुओं को सुविधा प्राप्त हुई। डेरा बाबा नानक के निकट अंतरराष्ट्रीय सीमा पर स्थित जीरो-प्वाइंट पर करतारपुर साहेब गलियारा तैयार करने के लिए भारत ने 24 अक्टूबर, 2019 को पाकिस्तान के साथ समझौता किया था।

13 **हर गांव तक पहुंची बिजली:** हर गांव तक बिजली का उजाला पहुंच चुका है। यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त, 2015 को लाल किले की प्राचीर से 1,000 दिनों के अंदर देश के अंधेरे में डूबे 18,452 गांवों में बिजली पहुंचाने का संकल्प लिया था। इसके लिए 'दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना' शुरू की गई। 28 अप्रैल, 2018 को यह संकल्प पूरा हुआ यानी तय समय सीमा से 12 दिनों पहले।



14 **राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (NCBC) को संवैधानिक दर्जा:** पिछड़ा वर्ग के लोगों के सशक्तिकरण के लिए संविधान का संशोधन करके राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया गया है। यह आयोग अब सलाहकार नहीं, बल्कि भागीदार की भूमिका में है।

15 **आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग के गरीबों को आरक्षण:** एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए और दशकों से चली आ रही मांग को पूरा करते हुए संविधान में संशोधन करके सामान्य वर्ग के गरीब युवाओं को सरकारी नौकरी तथा शैक्षणिक संस्थानों में 10 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान किया गया।

16 **पंचतीर्थ योजना:** संविधान निर्माता डॉ. अम्बेडकर के प्रति अनूठी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मोदी सरकार ने डॉ. अम्बेडकर से जुड़े पांच स्थानों को पंचतीर्थ मानकर नया निर्माण करवाया है।

17 **ऐतिहासिक 'रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016':** बहुप्रतीक्षित रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 एक मई, 2016 से प्रभावी हुआ। इस अधिनियम से घरेलू खरीदारों के हितों की रक्षा के साथ-साथ अचल संपत्ति उद्योग में निवेश को बढ़ावा मिला है। इसके अलावा रियल एस्टेट सेक्टर में पारदर्शिता बढ़ी।

18 **स्टैंड अप योजना:** अनुसूचित जाति, जनजाति के युवाओं को उद्योग लगाने के लिए स्टैंड अप योजना बनाई गई है ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इस योजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लोगों को स्वरोजगार प्रदान करने के लिए 10 लाख रुपए से एक करोड़ रुपए का ऋण दिया जाता है। देश के हर बैंक की हर शाखा को यह निर्देश दिया गया है कि उसके द्वारा कम-से-कम एक अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति को यह ऋण अनिवार्य रूप से दिया जाए।

19 **जल जीवन मिशन:** प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2019 को 'जल जीवन मिशन' का घोषणा की। जल जीवन मिशन का लक्ष्य देश के प्रत्येक ग्रामीण परिवार को वर्ष 2024

तक चालू घरेलू नल कनेक्शन प्रदान करना है। पिछले एक साल में 2 करोड़ परिवारों तक शुद्ध पेय जल पहुंच चुका है।

20 **नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन:** 15 अगस्त 2020 से नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन का शुभारंभ हुआ। भारत के स्वास्थ्य क्षेत्र में यह एक नई क्रांति ले आएगा। प्रत्येक भारतीय को हेल्थ आईडी जाएगी। ये हेल्थ आईडी प्रत्येक भारतीय के स्वास्थ्य खाते की तरह काम करेगी।

अर्थव्यवस्था को मिली मजबूती: कारोबार हुआ आसान

21 **भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था:** श्री नरेन्द्र मोदी के निर्णायक और दूरदर्शी नेतृत्व में भारत 2.94 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी के साथ दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। जब साल 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी ने देश का शासन संभाला था, तब विश्व अर्थव्यवस्था में भारत 9वें स्थान पर था। अक्टूबर में आईएमएफ के वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार भारत अब फ्रांस, ब्रिटेन से आगे निकल गया और दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। देश की जीडीपी वृद्धि दर पिछले एक दशक में दुनिया में सबसे अधिक रही है- जो नियमित रूप से 6-7% की वार्षिक दर से बढ़ी है। गत बजट

में जिन नए सुधारों की घोषणा की गई है, उससे अर्थव्यवस्था की बुनियाद मजबूत होगी और अगले पांच साल में यह 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य में सहयोगी होगा।

22 **एक देश, एक कर (जीएसटी सुधार):** 'जीएसटी' भारतीय कराधान का सबसे बुनियादी ऐतिहासिक सुधार है। इस सुधार को एक जुलाई, 2017 को लागू किया गया था। इसमें 17 स्थानीय शुल्क समाहित हुए हैं।

23 **इन्सॉल्वेंसी और बैंकरप्सी कोड:** केंद्र सरकार ने बैंकों के फंसे ऋण की वृहत समस्या को हल करने के लिए इन्सॉल्वेंसी और बैंकरप्सी कोड बनाया। यह एक महत्वपूर्ण सुधार है। इस कोड से बैंकों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।





24 'ईज ऑफ बिजनेस रिपोर्ट', 142वें पायदान से छलांग लगाकर 63वें पायदान पर: भाजपानीत केंद्र की राजग सरकार के निरंतर ठोस उपायों के परिणामस्वरूप विश्व बैंक की 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस रिपोर्ट' में भारत अपनी रैंकिंग को बेहतर कर वर्ष 2014 के निचले 142वें पायदान से छलांग लगाकर वर्ष 2019 में 63वें पायदान पर पहुंच गया है।

25 घरेलू कंपनियों के लिए कॉर्पोरेट कर घटकर 22% और नई घरेलू विनिर्माण कंपनियों के लिए 15% हुआ, कर की प्रभावी दरें करीब 10 प्रतिशत नीचे: आर्थिक वृद्धि तेज करने तथा निवेश एवं रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिये 20 सितंबर 2019 को कारपोरेट कर में भारी कटौती की घोषणा की गई। सरकार के इस ताजा प्रोत्साहन से कारपोरेट कर की प्रभावी दरें करीब 10 प्रतिशत नीचे आ गयी हैं।

26 खुली और पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया: केंद्र सरकार ने अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों जैसे स्पेक्ट्रम, कोयला आदि में खुली और पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया अपनाकर भ्रष्टाचार का खात्मा किया। कोयला क्षेत्र में ऐतिहासिक सुधार: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की आर्थिक मामलों की समिति ने 20 फरवरी, 2018 को कोयले की बिक्री के लिए खानों/ब्लॉकों की नीलामी पद्धति को मंजूरी दे दी। व्यावसायिक कोयले के खनन को निजी क्षेत्र के लिए खोला जाना 1973 में इस क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण के बाद कोयला क्षेत्र का सबसे महत्वाकांक्षी सुधार है।



27 14 साल बाद एमएसएमई की परिभाषा में संशोधन: 1 जून 2020 को 14 साल बाद एमएसएमई की परिभाषा को पहली बार संशोधित किया गया। मध्यम इकाइयों का दायरा और बढ़ाकर 50 करोड़ रुपये के निवेश और 250 करोड़ रुपये के कारोबार तक किया गया।

28 101 रक्षा उपकरणों के आयात पर रोक: केंद्र सरकार ने 9 अगस्त 2020 को घोषणा की कि 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के तहत देश में रक्षा वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने

के लिए 101 उपकरणों के आयात पर रोक लगाई जाएगी। इससे भारतीय रक्षा उद्योग को बड़े अवसर मिलेंगे। आयात प्रतिबंधों के लिए चिह्नित की गई 101 रक्षा वस्तुओं की सूची में तोप, असॉल्ट राइफल, परिवहन विमान शामिल हैं। 101 रक्षा वस्तुओं के आयात पर रोक लगाने की योजना 2020 से 2024 के बीच चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वित होगी।

29 10 बैंकों के विलय से बने चार बड़े बैंक: देश में विश्वस्तरीय बैंक बनाने की दिशा में बड़ी पहल करते हुये सार्वजनिक क्षेत्र के 10 बैंकों का विलय कर चार बड़े बैंक बनाने की घोषणा की गई। इस पहल से न केवल आर्थिक वृद्धि को गति मिलेगी, बल्कि देश को 5,000 अरब डालर की अर्थव्यवस्था बनाने में भी मदद मिलेगी।

30 व्यापारियों और स्वरोजगार व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय पेंशन योजना की शुरुआत: यह पेंशन योजना उन व्यापारियों (दुकानदारों/खुदरा व्यापारियों और स्वरोजगार में लगे व्यक्तियों) के लिए है जिनका वार्षिक कारोबार 1.5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं है।

31 भारत बॉन्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड शुरू करने की मंजूरी देश में पहला कारपोरेट बॉन्ड होगा भारत बॉन्ड ईटीएफ: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने भारत बॉन्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) बनाने और इसकी शुरुआत करने को मंजूरी दी।

महिलाओं का हुआ बेहतर जीवन

32 महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण : मोदी सरकार महिलाओं को रोजगार और स्व-रोजगार के समान अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है। 40 करोड़ जन-धन खातों में 22 करोड़ खाते महिलाओं के हैं। 25 करोड़ के करीब मुद्रा लोन दिए गए हैं, उसमें 70 प्रतिशत मुद्रा लोन लेने वाली महिलायें हैं। यही नहीं आज भारत दुनिया के उन देशों में है जहां नौसेना और वायुसेना में महिलाओं को combat role में शामिल किया जा रहा है।



33 **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान:** कन्या भ्रूण हत्या हमारे लिए एक अभिशाप है। गर्भ में बेटी का पता लगते ही गर्भपात करा देने से सामाजिक संतुलन बिगड़ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस असंतुलन को समाप्त करने के लिए 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान' चलाया।

सुकन्या समृद्धि योजना: इस योजना में बेटियों की शिक्षा से लेकर विवाह तक की व्यवस्था की गई है।

34 **महिला कामगारों के लिए मातृत्व अवकाश की अवधि में वृद्धि:** महिला कामगारों के लिए मातृत्व अवकाश की अवधि बढ़ाकर 26 सप्ताह (6 महीने) कर दी गई है ताकि वे अपने नवजात शिशु की अच्छी तरह देखभाल कर सकें।

35 **प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई):**

पीएमएसबीवाई के तहत 41.50% नामांकन महिला सदस्यों के हैं और 61.29% लाभार्थी महिलाएं हैं। (31 जनवरी 2020 को) कुल दर्ज किए गए 15,12,54,678 नामों में से 6,27,76,282 नाम महिलाओं ने दर्ज कराए। कुल 38,988 दावों में से महिला लाभार्थियों को 23,894 दावों का भुगतान किया गया है।

36 **अटल पेंशन योजना (एपीवाई):** यह योजना

बैंक और डाकघरों के माध्यम से सदस्यता के लिए खुली है। 22 फरवरी 2020 तक, एपीवाई के अंतर्गत लगभग 2.15 करोड़ कुल ग्राहकों में से 93 लाख से अधिक ग्राहक (43%) महिलाएं हैं।

जन कल्याण सर्वोपरि

37 **स्वनिधि योजना की शुरुआत:** देश में ग्रामीण और शहरी सड़कों के किनारे फल, सब्जियां बेचने और रेहड़ी पर छोटी-मोटी दुकान लगाने वालों के लिए केंद्र सरकार ने 1 जून 2020 को स्वनिधि योजना की शुरुआत की। इसके तहत सरकार द्वारा 10000 रुपये का लोन दिया जाता है। ये लोन साल

भर में किस्तों में लौटाया जा सकता है। इस लोन को समय पर चुकाने वाले स्ट्रीट वेंडर्स को 7 फीसदी ब्याज सब्सिडी के तौर पर उनके अकाउंट में सरकार की ओर से ट्रांसफर किया जाएगा।

38 **'आयुष्मान भारत' के तहत एक करोड़ से ज्यादा लाभार्थी:** भारत ने 'आयुष्मान भारत योजना' के तहत एक करोड़ से ज्यादा लोगों को लाभ प्रदान कर इस दिशा में एक बड़ा मुकाम हासिल किया है।

39 **'वन नेशन, वन राशन कार्ड' योजना:** इस समय कुल 26 राज्य/केंद्रशासित प्रदेश अब एक-दूसरे के साथ निर्बाध रूप से 'वन नेशन, वन राशन कार्ड' योजना से जुड़ चुके हैं और अब इन 26 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के पीडीएस लाभार्थी 1 सितंबर, 2020 से अपनी पसंद के किसी भी उचित

मूल्य की दुकान (एफपीएस) से एक ही पैमाने और केंद्रीय निर्गम मूल्य पर सब्सिडी वाले खाद्यान प्राप्त कर सकते हैं।

40 **नई पेंशन योजना से 3 करोड़ खुदरा व्यापारी और दुकानदार लाभान्वित:** इस योजना के तहत सभी दुकानदारों, खुदरा व्यापारियों और स्व-रोजगार करने वाले लोगों को 60 वर्ष की आयु हो जाने के बाद 3000 रुपये की न्यूनतम मासिक पेंशन देना सुनिश्चित किया गया है।

41 **सरकार ने ईएसआई अंशदान की दर 6.5 प्रतिशत से घटाकर 4**

प्रतिशत की, इससे 3.6 करोड़ कर्मचारी और 12.85 लाख नियोजता लाभान्वित होंगे।

उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या 30 से बढ़कर 33 हुई

42 **उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने के विधेयक को राष्ट्रपति की मंजूरी:** राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने प्रधान न्यायाधीश के अलावा उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीशों की संख्या 30 से बढ़ाकर 33 किए जाने

43 **संबंधी एक विधेयक पर दस्तखत कर दिया। संसद ने आरटीआई संशोधन विधेयक को दी मंजूरी:**



संसद ने सूचना का अधिकार (आरटीआई) कानून में संशोधन संबंधी एक विधेयक को मंजूरी प्रदान कर दी। मोदी सरकार पारदर्शिता, जन भागीदारी और सरलीकरण के लिए प्रतिबद्ध है।

44 **भारत रत्न:** श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री मदनमोहन मालवीय, पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी, प्रसिद्ध समाजसेवी नानाजी देशमुख और गायक श्री भूपेन हजारिका को देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया।

शक्तिशाली हुई सेनाएं

45 **भारतीय वायुसेना के बेड़े में शामिल हुए पांच राफेल विमान:** पांच राफेल लड़ाकू विमानों को 10 सितंबर 2020 को अंबाला हवाई ठिकाने पर हुए शानदार समारोह में भारतीय वायु सेना में औपचारिक रूप से शामिल किया गया। बहु भूमिका वाले राफेल विमानों को हवाई श्रेष्ठता और सटीक निशानों के लिए जाना जाता है।

पांच राफेल विमानों का पहला जत्था 29 जुलाई 2020 को भारत पहुंचा था। इससे करीब चार साल पहले भारत ने फ्रांस के साथ 59,000 करोड़ रुपये की लागत से ऐसे 36 विमानों की खरीद के लिए अंतर सरकारी समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।

46 **वायुसेना में शामिल हुए 22 अपाचे लड़ाकू हेलीकॉप्टर:** अपाचे

हेलीकॉप्टर भारतीय वायु सेना की मारक क्षमता बढ़ायेगा। 'अपाचे एच-64ई' दुनिया का सबसे उन्नत बहु-भूमिका वाला लड़ाकू हेलीकॉप्टर है।

47 **सतह से हवा में मार करने वाली त्वरित प्रतिक्रिया मिसाइल का सफल परीक्षण:** रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 4 अगस्त 2019 को चंदीपुर के इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज (आईटीआर) से सीधा हवाई लक्ष्य के विरुद्ध अत्याधुनिक त्वरित प्रतिक्रिया सतह-से-वायु मिसाइल का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।

48 **रडार को मात देने वाला युद्धपोत 'आईएनएस नीलगिरि' का जलावतरण:** रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने रडार को मात देने वाला युद्धपोत 'आईएनएस नीलगिरि'

का जलावतरण किया। श्री सिंह ने कहा कि सरकार भारत के समुद्री हितों के लिए किसी भी पारंपरिक और अपारंपरिक खतरों से निपटने के लिए नौसेना के आधुनिकीकरण और बेहतरीन प्लेटफार्मों, हथियारों और सेंसर से लैस करने के लिए ठोस प्रयास कर रही है।

49 **साल्वो रूप में दो पिनाक मिसाइलों का सफल उड़ान परीक्षण:** पिनाक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली की उड़ान परीक्षणों की श्रृंखला के हिस्से के रूप में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा दो परीक्षण फायरिंग की गईं। इस परीक्षण का मिशन उद्देश्य कम रेंज का परीक्षण करना, निकटता पयूज के साथ लाइव वॉरहेड कार्य प्रणाली का परीक्षण करना और साल्वो लॉन्च करना था।

50 **प्रथम चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ की नियुक्ति:** रक्षा मंत्रालय में सैन्य मामलों का एक नया विभाग बनाया गया।

नवनियुक्त चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत इसके प्रमुख बने। नए विभाग के पास तीनों सेनाओं- थल सेना, नौसेना और वायु सेना से संबंधित कार्य होंगे।

सैनिकों को मिला सम्मान

51 **वन रैंक-वन पेंशन की मांग पूरी:** दशकों पुरानी वन रैंक - वन पेंशन की मांग को पूरा करके सैनिकों को सम्मान दिया गया है।

कृतज्ञ राष्ट्र का शहीदों को नमन:

52 **शहीदों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए देश में 'राष्ट्रीय समर स्मारक' की स्थापना की गई है।** इसके अलावा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पुलिस स्मारक दिवस 2018 के मौके पर आजादी के बाद से पुलिसकर्मियों द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदान की याद में 'राष्ट्रीय पुलिस स्मारक' देश को समर्पित किया।

53 **अब शहीदों के परिजन को चार गुना आर्थिक मदद, 2 से 8 लाख रुपये हुई राशि:** युद्ध में जान गंवाने वालों के परिजन या दिव्यांग सैनिकों को दी जाने वाली आर्थिक मदद में चार गुना वृद्धि कर दी गई है। सरकार ने मौजूदा 2 लाख रुपये की मदद राशि को बढ़ाकर 8 लाख करने वाले प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। यह राशि सेना युद्ध हताहत कल्याण कोष





(एबीसीडब्ल्यूएफ) के तहत दी जाएगी।

किसानों को आमदनी में भारी इजाफा

54 लागत का डेढ़ गुना समर्थन मूल्य: पहली बार किसानों को उनकी रबी और खरीफ की फसलों का समर्थन मूल्य उत्पादन लागत का डेढ़ गुना घोषित किया गया, जिसके कारण उन्हें अपनी फसल की अच्छी कीमत प्राप्त हो रही है।

55 पीएम-किसान योजना: 10 करोड़ से अधिक किसानों के हाथों में 90,000 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ अगस्त 2020 को लगभग 8.5 करोड़ किसानों को 17,000 करोड़ रुपये की पीएम-किसान योजना के तहत छठी किस्त भी जारी की। इसके साथ ही 1 दिसम्बर, 2018 को शुरू हुई इस योजना के तहत अभी तक 10 करोड़ से अधिक किसानों के हाथों में 90,000 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि उपलब्ध कराई गयी है।

56 एक लाख करोड़ रुपये के 'कृषि अवसंरचना कोष'

का शुभारंभ: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ अगस्त 2020 को 'कृषि अवसंरचना कोष' के तहत एक लाख करोड़ रुपये की वित्तपोषण सुविधा का शुभारंभ किया। कृषि अवसंरचना कोष 'कटाई बाद फसल प्रबंधन अवसंरचना' और 'सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों' जैसे कि शीत भंडार गृह, संग्रह केंद्रों, प्रसंस्करण इकाइयां आदि बनाने में मददगार होगा।

57 बांस को काटने की अनुमति: भारतीय वन अधिनियम, 2017 में संशोधन करके बांस को अब वृक्ष की श्रेणी से निकालकर घास की श्रेणी में डाल दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप अब बांस को काटने एवं एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए किसानों को अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। इसके कारण पूर्वोक्त के किसानों की किस्मत ही बदल गई है और अन्य राज्यों के किसानों को भी अतिरिक्त आमदनी का जरिया मिल गया है।

58 31 मई 2019 को हुए कैबिनेट की बैठक में देश भर के छोटे और सीमांत किसानों (एसएमएफ) के लिए स्वैच्छिक और अंशदायी पेंशन योजना का ऐतिहासिक निर्णय।

59 राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण और राष्ट्रीय कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रम का शुभारंभ: पूर्णतः केन्द्र सरकार द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम की व्यय राशि 12652 करोड़ रुपये है। बीमारियों में कमी लाने के प्रयास के तहत देशभर में 60 करोड़ से अधिक पशुओं का टीकाकरण किया जाएगा।

60 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' योजना के पांच वर्ष पूरे: फरवरी 2020 को महत्वपूर्ण 'मृदा स्वास्थ्य कार्ड' योजना के पांच वर्ष पूरे हो गए। इस योजना के तहत वर्ष 2015-17 (चक्र-1) के दौरान 10.74 करोड़ और वर्ष 2017-19 (चक्र-2) के दौरान 11.74 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को वितरित किए गए।



61 10,000 नए एफपीओ के गठन और प्रोत्साहन हेतु 'कृषक उत्पादक संगठनों की स्थापना और संवर्द्धन' को मंजूरी। 19 फरवरी को किसानों के लिए अर्थव्यवस्था के व्यापक लाभ को सुनिश्चित करने हेतु 2019-2022 से 2023-24 की पांच वर्ष की अवधि के दौरान 10,000 नए एफपीओ के गठन को अपनी

स्वीकृति दे दी। प्रत्येक एफपीओ के शुभारंभ वर्ष से पांच वर्षों तक के लिए सहायता जारी रखी जाएगी।

62 ई-ग्राम स्वराज एप: 'ई-ग्राम स्वराज' ग्राम पंचायत विकास योजनाओं को तैयार करने और उनके कार्यान्वयन में मदद करता है। यह पोर्टल वास्तविक समय पर निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित करेगा। यह पोर्टल ग्राम पंचायत स्तर तक डिजिटलीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम है।

63 'फिट इंडिया' मुहिम का शुभारंभ: वीरता और फिटनेस को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'फिट इंडिया आंदोलन' का शुभारंभ किया।



64 साल 2022 तक देश को सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त करने का लक्ष्य: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि साल 2022 तक देश को सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्त करने का लक्ष्य हमें हासिल करना है।

65 दिल्ली की 1797 अनधिकृत कालोनियों के निवासियों को मिला मालिकाना हक, 40 लाख लाभान्वित: केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने दिल्ली की अनधिकृत कालोनियों को नियमित करने की मंजूरी प्रदान करते हुये 1797 कालोनियों में रह रहे लाखों संपत्ति मालिकों को उनकी संपत्ति का मालिकाना हक देने का रास्ता साफ कर दिया।

66 बीएसएनएल, एमटीएनएल का विलय: 68,751 करोड़ रुपये के पुनरुद्धार पैकेज को मंजूरी। केन्द्रीय सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र की दूरसंचार कंपनियों बीएसएनएल और एमटीएनएल के लिए 68,751 करोड़ रुपये के पुनरुद्धार पैकेज को मंजूरी दी। इसमें एमटीएनएल का बीएसएनएल में विलय, कर्मचारियों के लिये स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति योजना (वीआरएस) और 4 जी स्पेक्ट्रम आवंटन शामिल हैं।

67 'प्रधानमंत्री वय वंदना योजना' के विस्तार को स्वीकृति: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 20 मई 2020 को वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण और वृद्धावस्था आय सुरक्षा को समर्थ बनाने के लिए अपनी स्वीकृति दी।

68 राष्ट्रहित में किया आरसेप से किनारा: भारत ने रीजनल कांफ्रिहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप यानी आरसेप को खारिज कर दिया। आज का भारत अंतरराष्ट्रीय दबाव में झुकने वाला नहीं, बल्कि अपने हितों की रक्षा करने वाला भारत है।

69 पीएम केयर्स फंड: कोविड-19 महामारी जैसी किसी भी तरह की आपातकालीन स्थिति या संकट से प्रभावित लोगों को राहत प्रदान करने के लिए 'आपात स्थितियों में प्रधानमंत्री नागरिक सहायता और राहत कोष (पीएम केयर्स फंड)' के नाम से एक सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट बनाया गया है। 27 मार्च 2020 को बने इस फंड में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी निजी बचत से 2.25 लाख रुपये दान किए। 14 मई, 2020 तक कोरोना वायरस से लड़ाई के लिए पीएम केयर्स फंड से 3,100 करोड़ रुपये आवंटित किए गए। इनमें से 2000 करोड़ रुपये कोरोना मरीजों के लिए जरूरी वेंटिलेटर खरीदने के लिए इस्तेमाल किए जाएंगे। इसके बाद बचे 1000 करोड़ रुपये का इस्तेमाल प्रवासी मजदूरों की देखभाल के लिए किया जाएगा।

70 भारत ने किया 'चंद्र मिशन-2' का सफल प्रक्षेपण: भारत ने 'अनगिनत सपनों को चांद पर ले जाने' के उद्देश्य से अपने दूसरे चंद्र मिशन 'चंद्रयान-2' का 22 जुलाई 2019 को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एसडीएससी) से सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया। ■

जन संवाद

मन की बात: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से हर माह विभिन्न विषयों पर जन संवाद करते हैं। 'मन की बात' का पहला संस्करण 3 अक्टूबर, 2014 को ऑल इंडिया रेडियो पर शुरू हुआ था। यह बहुत ही लोकप्रिय कार्यक्रम है। हाल ही में 30 अगस्त, 2020 को 'मन की बात' का 68वां संस्करण पूरा हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति श्री बराक ओबामा अपनी भारत यात्रा के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी के साथ 27 जनवरी, 2015 को प्रसारित 'मन की बात' कार्यक्रम में शामिल हुए थे।

सोशल मीडिया पर प्रभावी उपस्थिति: प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सोशल मीडिया पर अत्यंत प्रभावी उपस्थिति दर्ज की है। इनके जरिये वे लाखों नहीं बल्कि करोड़ों लोगों से सीधा जन संवाद स्थापित करते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी सोशल मीडिया पर विश्व के सबसे लोकप्रिय व प्रभावी नेताओं में एक हैं। श्री मोदी के ट्विटर फॉलोअर्स की संख्या 17 सितंबर, 2020 को 6.23 करोड़ और प्रधानमंत्री कार्यालय के ट्विटर अकाउंट @PMOIndia के ट्विटर पर 3.88 करोड़ फॉलोअर्स हैं। 19 जुलाई, 2020 तक फेसबुक पर प्रधानमंत्री के पेज यानी नरेन्द्र मोदी पेज को 4 करोड़ 57 लाख से ज्यादा लोगों ने लाइक किया हुआ है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के इंस्टाग्राम पेज पर 4.5 करोड़ से ज्यादा फॉलोअर्स हैं। लिंकडइन जैसे प्रोफेशनल प्लेटफॉर्म पर भी प्रधानमंत्री के फॉलोअर्स की संख्या खासी है। यूट्यूब पर श्री नरेन्द्र मोदी के चैनल को 70 लाख से ज्यादा लोगों ने सब्सक्राइब किया हुआ है। नरेन्द्र मोदी एप को एक करोड़ से भी ज्यादा लोगों ने डाउनलोड किया हुआ है। ■

70 वर्षों की चित्रमय यात्रा



श्री नरेन्द्र मोदी के बचपन के चित्र



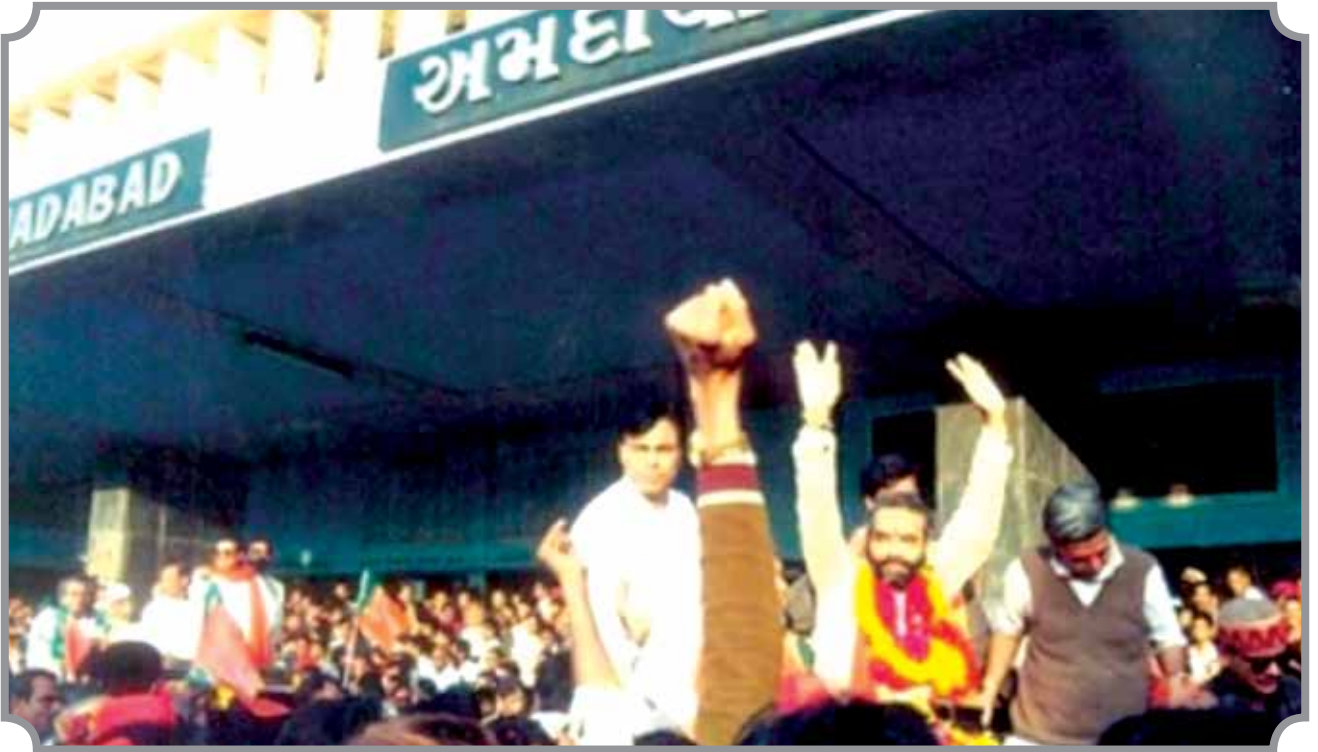
हिमालय में आध्यात्मिक पथ पर



घर छोड़ने के पश्चात् भारत भ्रमण करने के दौरान ऋषिकेश में श्री नरेन्द्र मोदी



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में लोगों से बातचीत करते हुए



संगठन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए विभिन्न नगर निकाय चुनाव में कार्य किया, भाजपा अहमदाबाद नगर निगम चुनाव, 03 जून, 1987 में विजयी हुईं



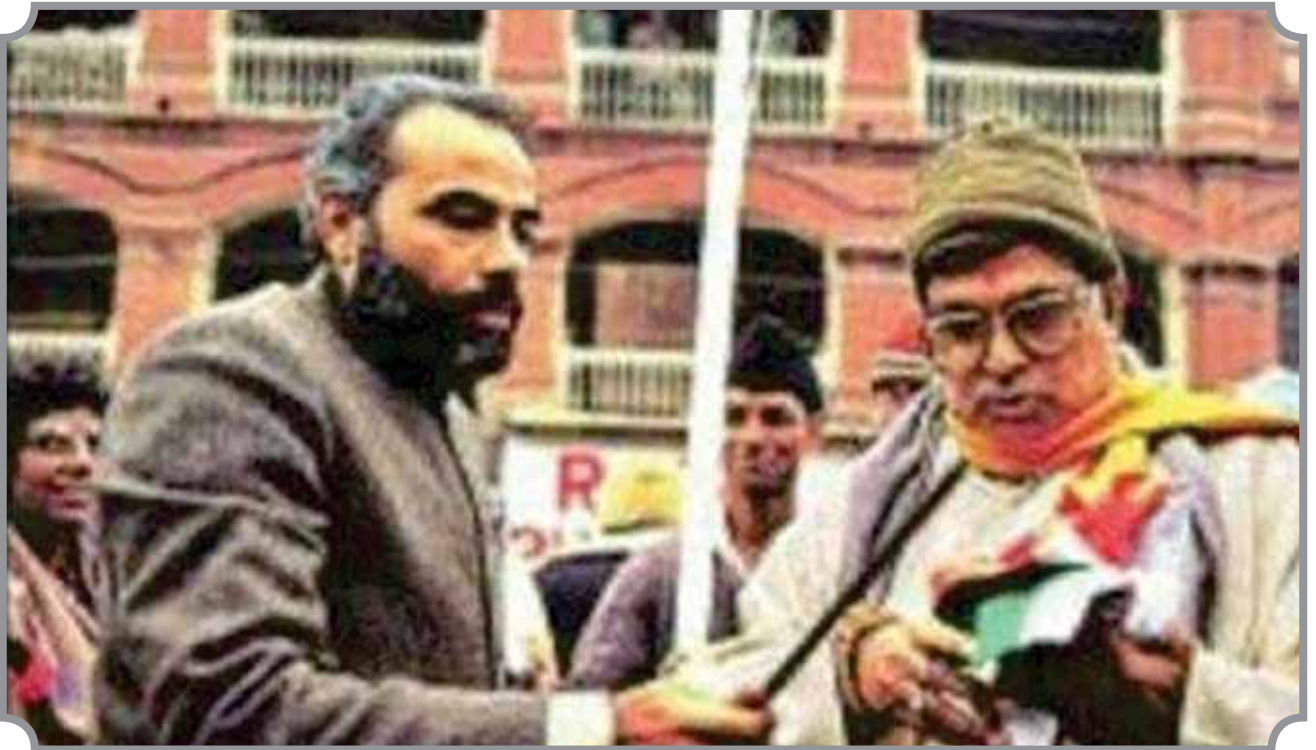
गुजरात विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 67 सीटें जीतीं और 03 मार्च, 1990 को चिमनभाई पटेल की सरकार में शामिल हुईं



सोमनाथ-अयोध्या यात्रा १५ सितंबर, १९९० को प्रारंभ हुई, इसमें श्री नरेन्द्र मोदी ने सशक्त भूमिका का निर्वाह किया



स्वर्ण जयंती यात्रा के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी



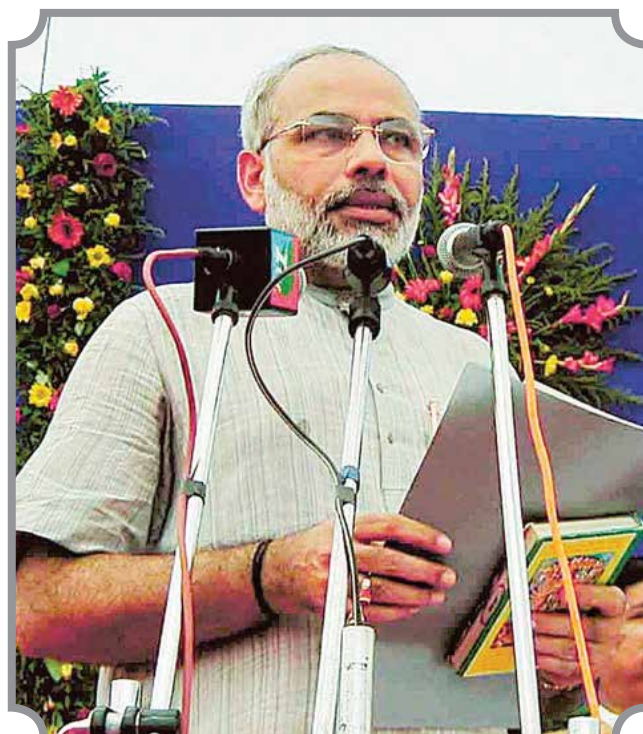
डॉ. मुरली मनोहर जोशी के नेतृत्व में 11 सितंबर, 1991 को राष्ट्रीय एकीकरण के उद्देश्य से निकली 'एकता यात्रा' में महत्वपूर्ण योगदान किया



05 जनवरी, 1998 को भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) का दायित्व मिला



भाजपा ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में लोकसभा चुनाव में विजय पताका लहराई, 03 जून, 1999



श्री नरेन्द्र मोदी ने 7 अक्टूबर, 2001 को गांधीनगर में गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली



भाजपा ने 2002 के गुजरात विधानसभा में शानदार जीत दर्ज की, 01 दिसंबर, 2002



राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने 11 नवंबर, 2006 को गुजरात के लोगों को 'ज्योतिग्राम योजना' समर्पित की



भाजपा ने 2007 का गुजरात विधानसभा चुनाव जीता, श्री नरेन्द्र मोदी ने 23 दिसंबर, 2007 को तीसरी बार मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली



2012 का गुजरात विधानसभा चुनाव भाजपा ने पुनः जीता, श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 दिसंबर, 2012 को चौथी बार मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली



03 जून, 2006 को वार्षिक कृषि महोत्सव का शुभारंभ हुआ। इन महोत्सवों ने पूरे गुजरात में कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किया



अप्रैल 29, 2007 को 'वनबंधु कल्याण योजना' का शुभारंभ। यह आदिवासी समुदायों के कल्याण के लिए समर्पित योजना है



26 जुलाई 2008 को अहमदाबाद बम विस्फोट में हुए घायलों का हालचाल लेते हुए



03 जून, 2009 को गरीब कल्याण मेला की शुरुआत। यह एक ऐतिहासिक योजना है जो गरीबों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ती है



09 जून, 2013 को लोकसभा चुनाव (2014) के लिए भाजपा अभियान समिति के प्रमुख के तौर पर श्री नरेन्द्र मोदी का नाम घोषित किया गया



भाजपा ने श्री नरेन्द्र मोदी को 2014 के लोकसभा चुनावों के लिए 13 सितंबर, 2013 को पार्टी का प्रधानमंत्री उम्मीदवार घोषित किया



१७ अक्टूबर, २०१३ को पटना में ऐतिहासिक हुंकार रैली को संबोधित करते हुए



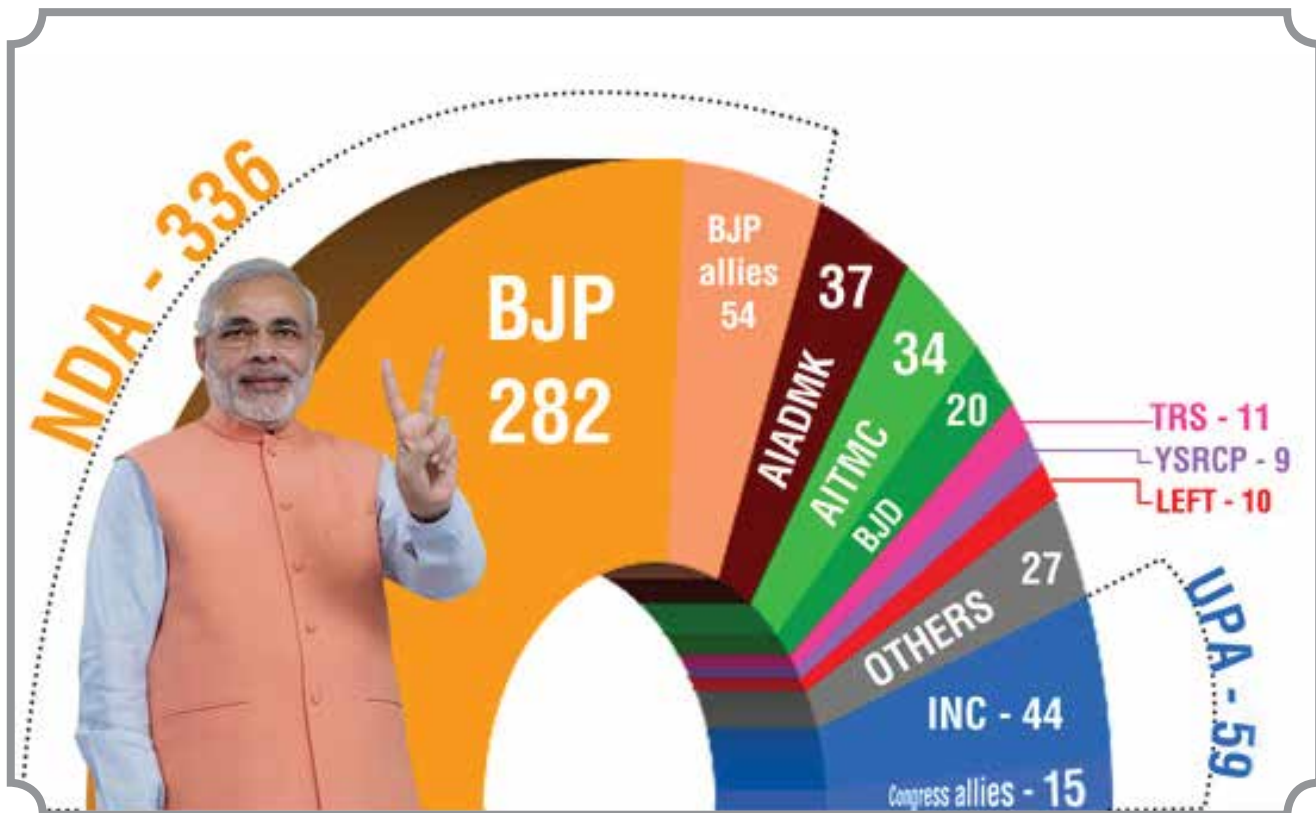
भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के एक समर्थक ने मेरठ में एक रैली के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का मुखौटा पहनकर खुशी का इजहार किया



१४ अप्रैल २०१४ को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में नामांकन पत्र दाखिल करने के दौरान समर्थकों का अभिवादन स्वीकार करते हुए



‘नमो रथ’ वॉकिंग मशीन प्रधानमंत्री की रैलियों में आकर्षण का केन्द्र बनी



लोकसभा चुनाव २०१४ में भाजपा ने स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया



२०१४ के चुनावों में राजग ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की। श्री नरेन्द्र मोदी ने १६ मई २०१४ को द्वाँट कर कल, 'भारत जीत गया! भारत की वलजय!'



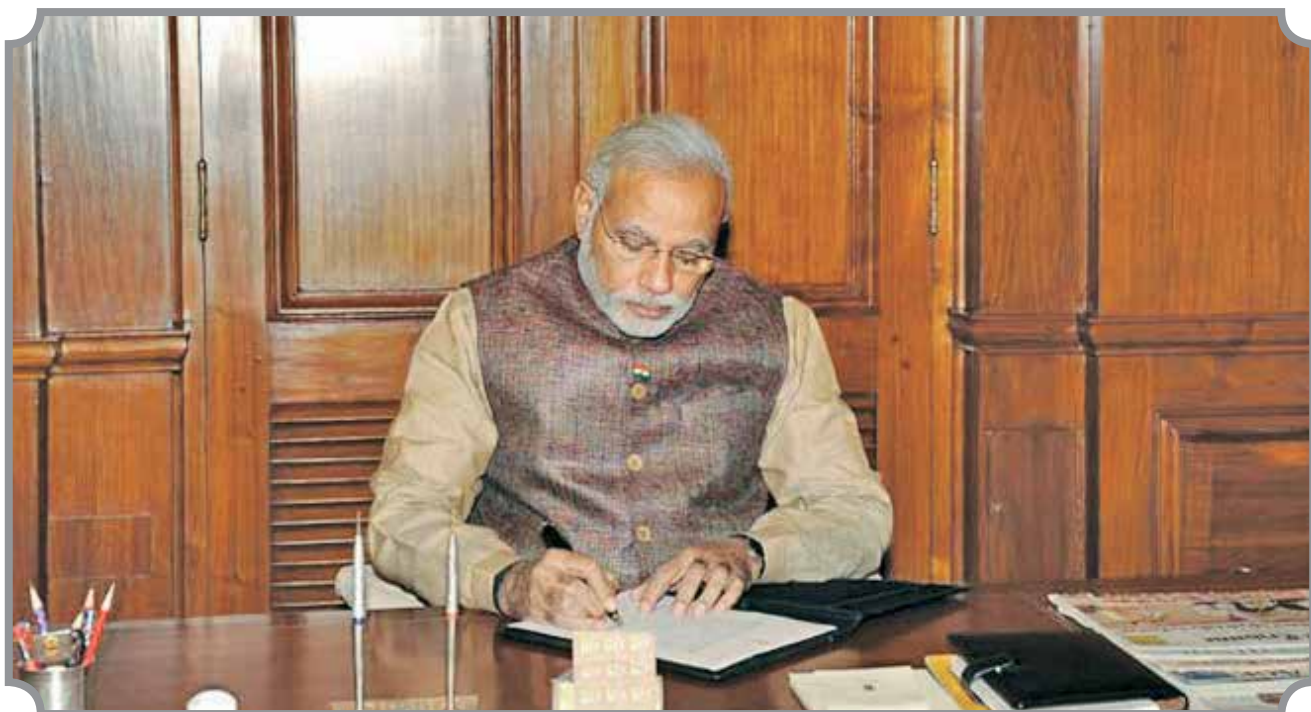
श्री नरेन्द्र मोदी २०१४ के आम चुनाव में स्पष्ट बहुमत प्राप्त करने के बाद राजग के नेता चुने गए



२० मई २०१४ को सर्वसम्मति से भाजपा संसदीय दल के नेता चुने जाने के बाद का एक भावुक क्षण



२०१४ के लोकसभा चुनावों में भारी जीत के बाद श्री नरेन्द्र मोदी का पल्ला शपथ ग्रहण समारोह



२०१४ में प्रधानमंत्री का कार्यभार ग्रहण करते हुए



पहले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के दौरान (इंडिया गेट) नई दिल्ली पर श्री नरेन्द्र मोदी



स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



गरीब महिलाओं के लिए उज्ज्वला योजना का शुभारंभ 01 मई 2016 को करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



प्रधानमंत्री ने 28 अगस्त 2014 को पीएम जन-धन योजना का शुभारंभ किया



सियाचीन में सेना के जवानों के साथ 23 अक्टूबर 2014 को दिवाली मनाते हुए



सुरतगढ़ में 8 अप्रैल 2015 को 'स्वॉयल हेल्थ कार्ड' योजना का शुभारंभ करते हुए



8 अप्रैल 2015 को प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



स्किल इंडिया का 15 जुलाई 2015 को शुभारंभ करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



भारत सरकार और नेशनलिस्ट सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड के बीच 3 अगस्त 2015 को हुए शांति समझौते के बाद एक ग्रुप फोटो में



मुंबई में 11 अक्टूबर 2015 को डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर स्मारक की आधारशिला रखते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



डॉ. बीआर अंबेडकर स्मारक में 06 दिसम्बर 2015 को सिक्का जारी करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



मुंबई में 13 फरवरी 2016 को 'मेक इन इंडिया' सप्ताह का शुभारंभ करते श्री नरेन्द्र मोदी



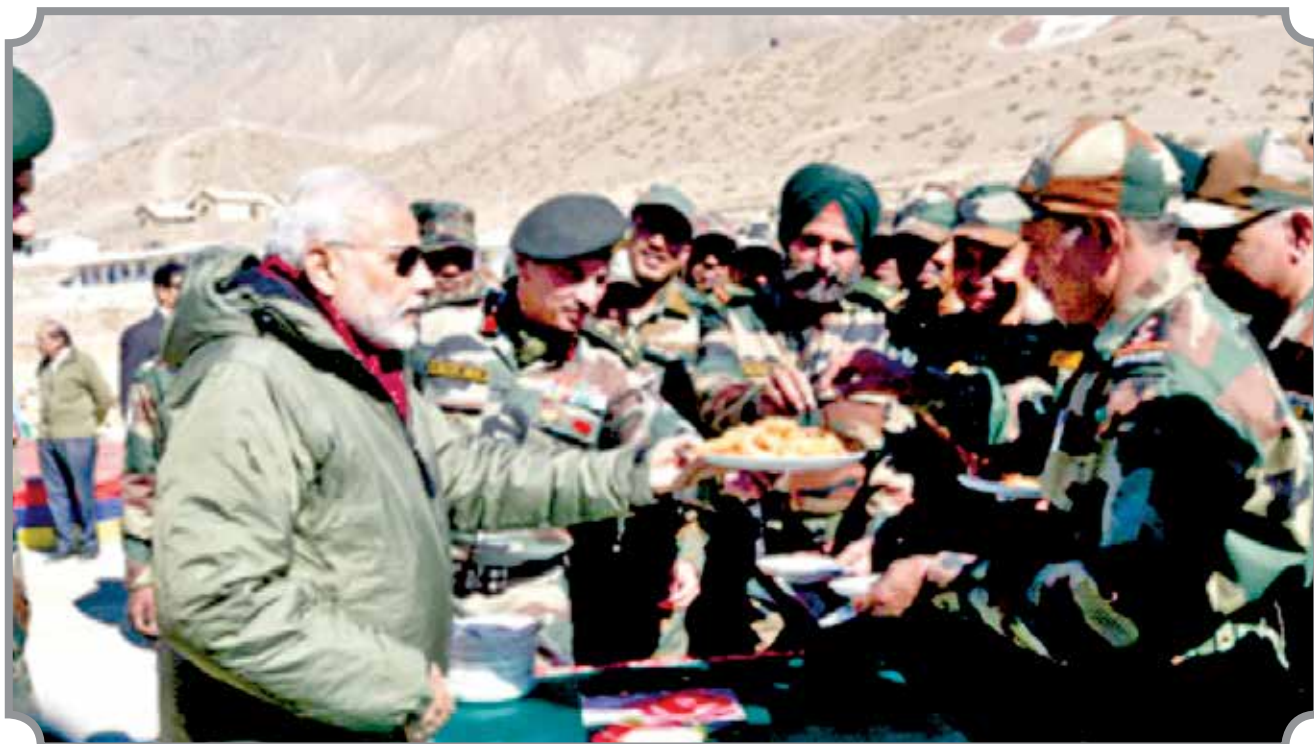
२१ फरवरी २०१६ को 'नेशनल रूर्वन मिशन' का शुभारंभ करते श्री नरेन्द्र मोदी



05 अप्रैल 2016 को 'स्टैंडअप इंडिया' योजना का शुभारंभ करते



महू (मध्य प्रदेश) में 14 अप्रैल 2016 को डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर के जन्मस्थान की यात्रा पर



सेना के जवानों के साथ 30 अक्टूबर 2016 को दिवाली मनाते श्री नरेन्द्र मोदी



संसद के ऐतिहासिक अर्द्धरात्रि सत्र में 01 जुलाई 2017 को जीएसटी का शुभारंभ करते



रांची (झारखंड) में आयुष्मान भारत योजना का शुभारंभ करते श्री नरेन्द्र मोदी, 23 सितंबर 2018



गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) में 24 फरवरी 2019 को पीएम-किसान योजना का शुभारंभ करते श्री नरेन्द्र मोदी



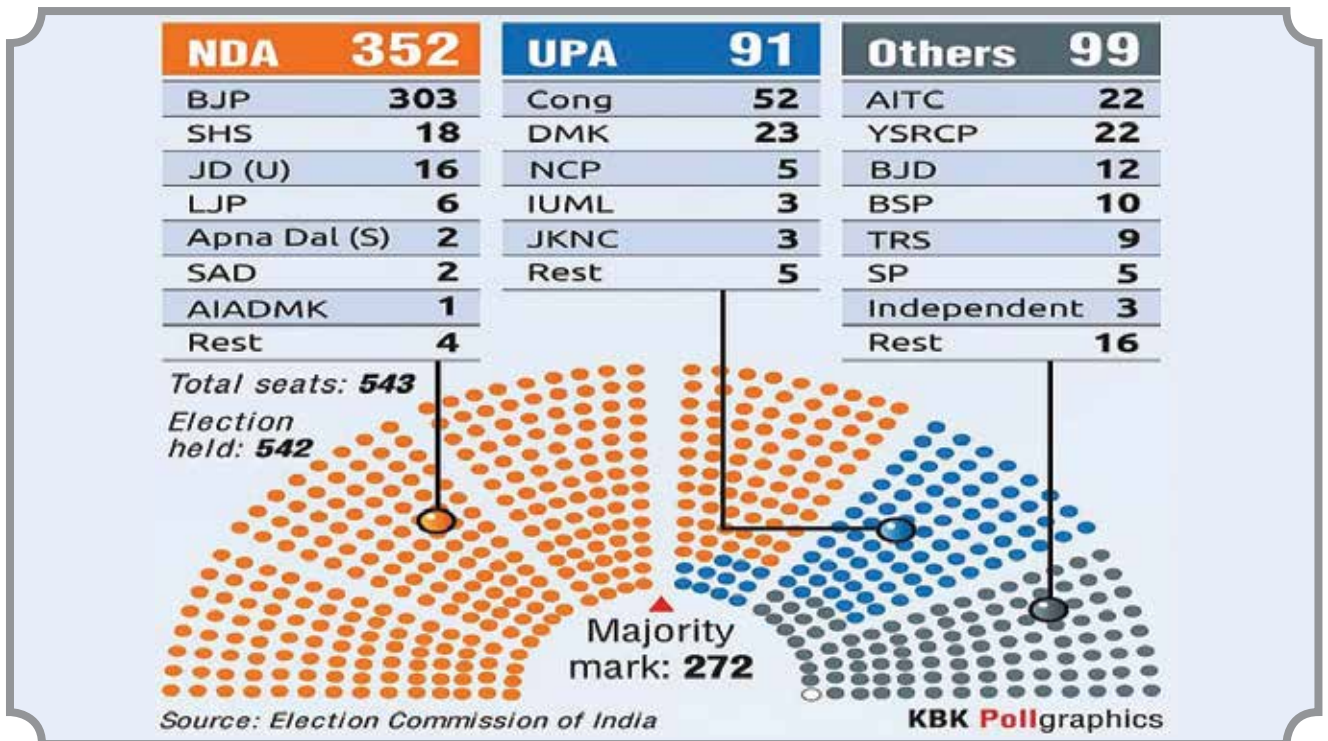
प्रधानमंत्री 'श्रम योगी मानधन योजना' का 05 मार्च 2019 को शुभारंभ करते श्री नरेन्द्र मोदी



सफाईकर्मियों का पदाक्षालन करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



२०१९ लोकसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने से पहले वाराणसी में रोड शो के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



२०१९ लोकसभा चुनाव परिणाम



भाजपा ने रचा इतिहास, राजग की प्रचंड जीत, भाजपा मुख्यालय में कार्यकर्ताओं का अभिवादन स्वीकार करते हुए



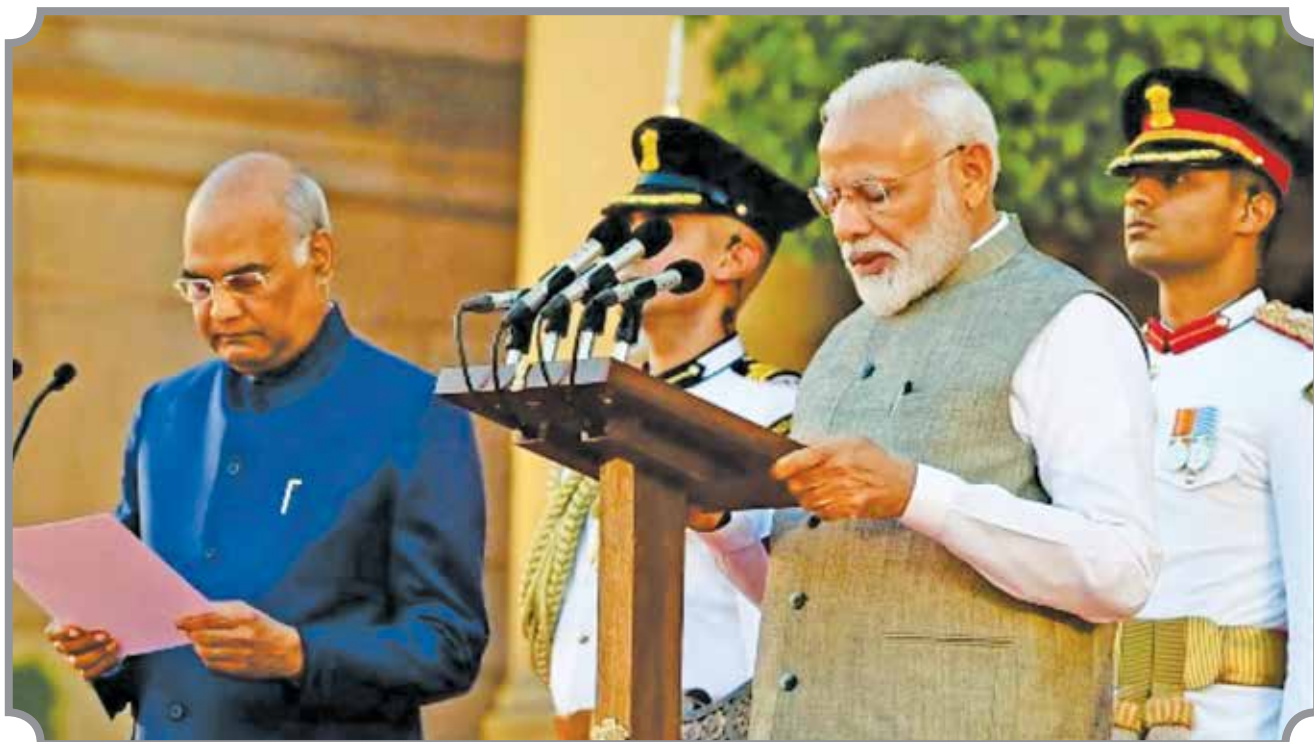
लोकसभा चुनाव, २०१९ में भाजपा की जीत के बाद खुशियां मनाते भाजपा कार्यकर्तागण



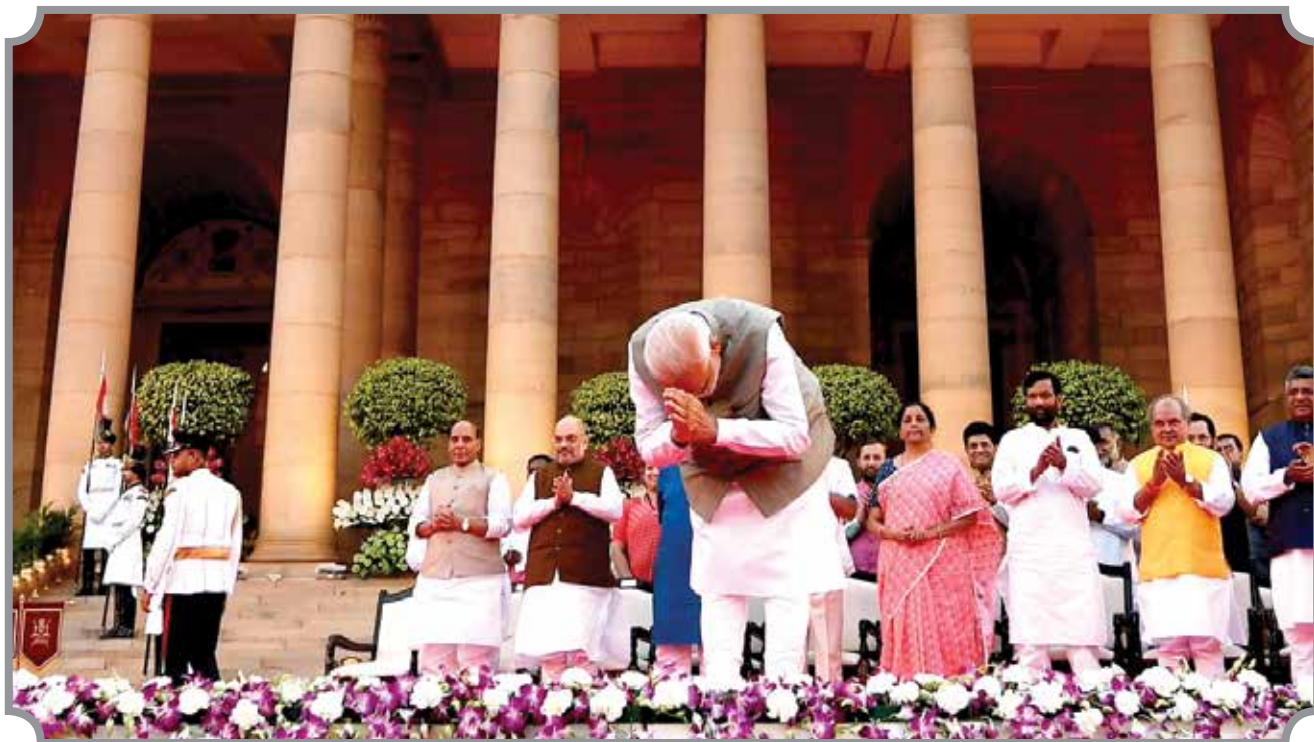
संसद के केंद्रीय कक्ष में १५ मई १०१९ को राजग के नेता चुने गए



सर्वसम्मति से राजग के नेता चुने जाने के दौरान संसद के केंद्रीय कक्ष का विरल दृश्य

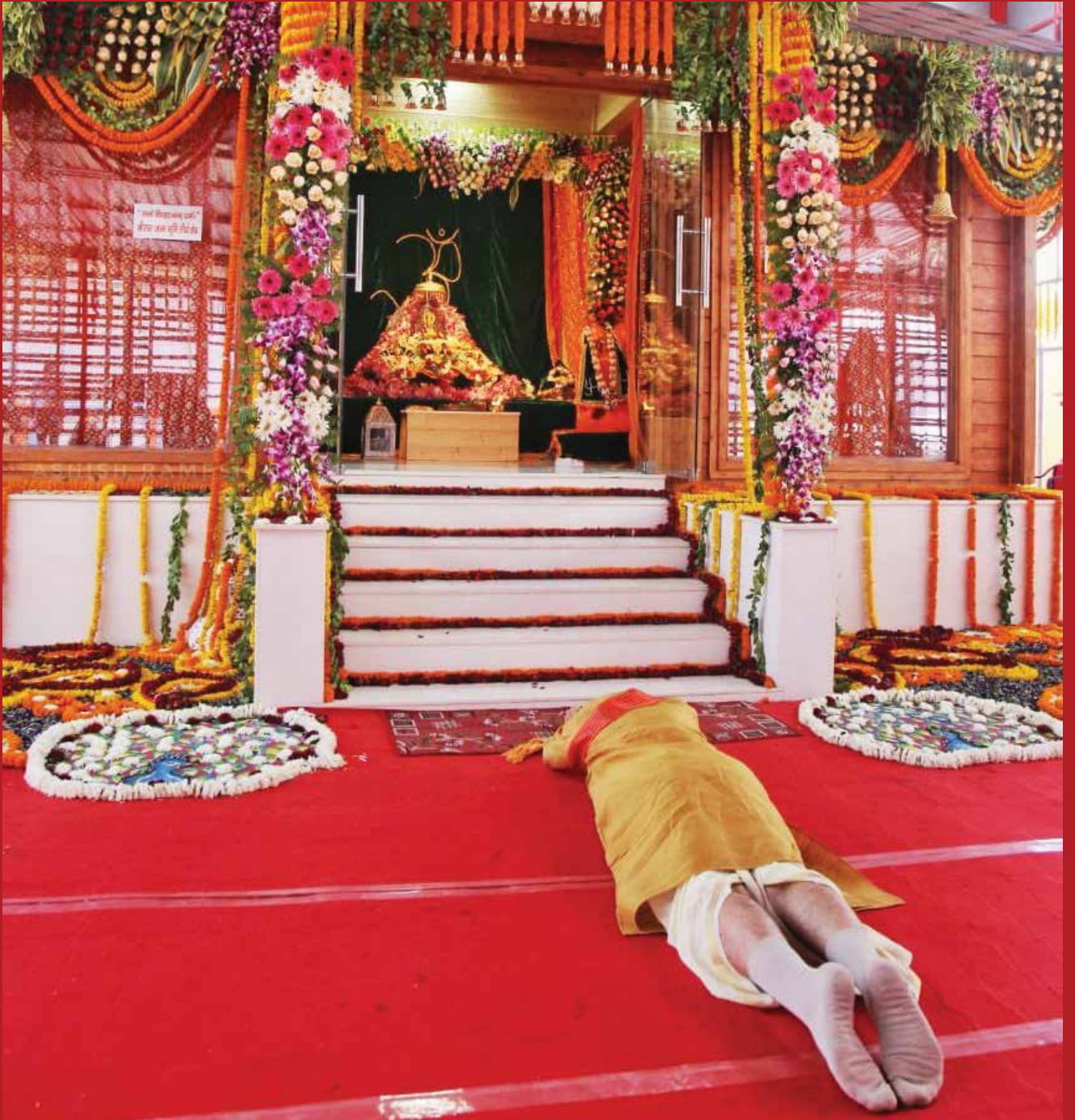


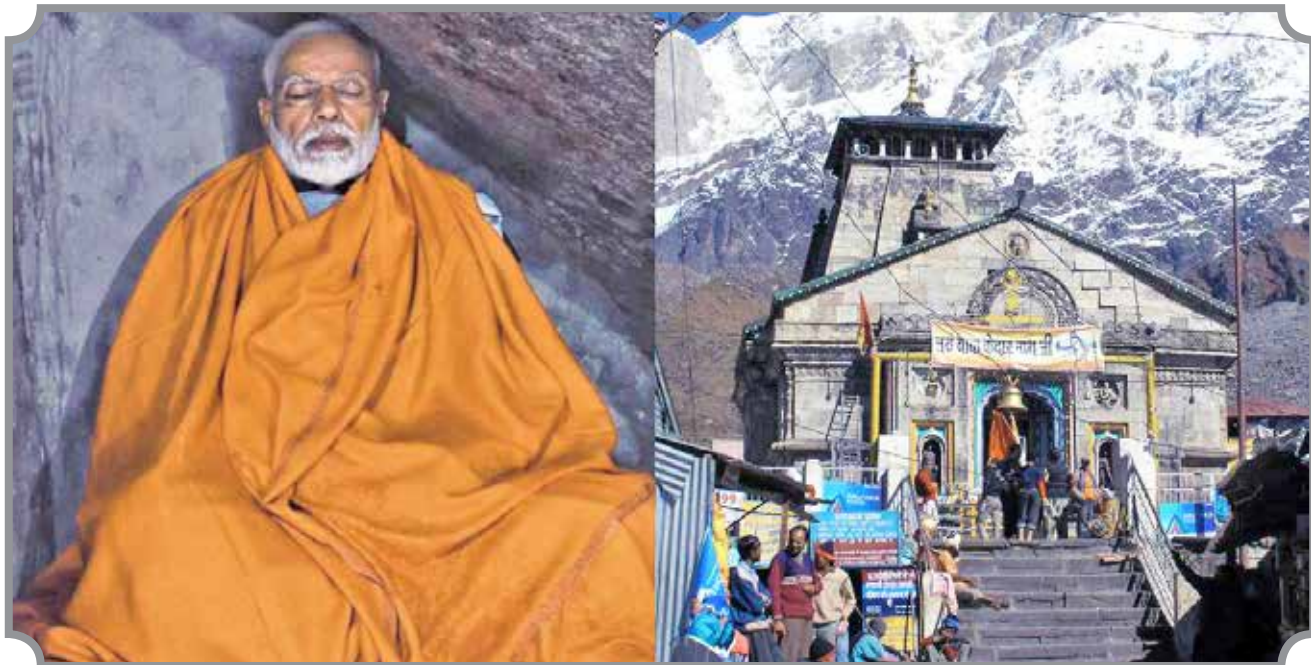
श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री के रूप में दूसरी बार 30 मई, 2019 को शपथ ली



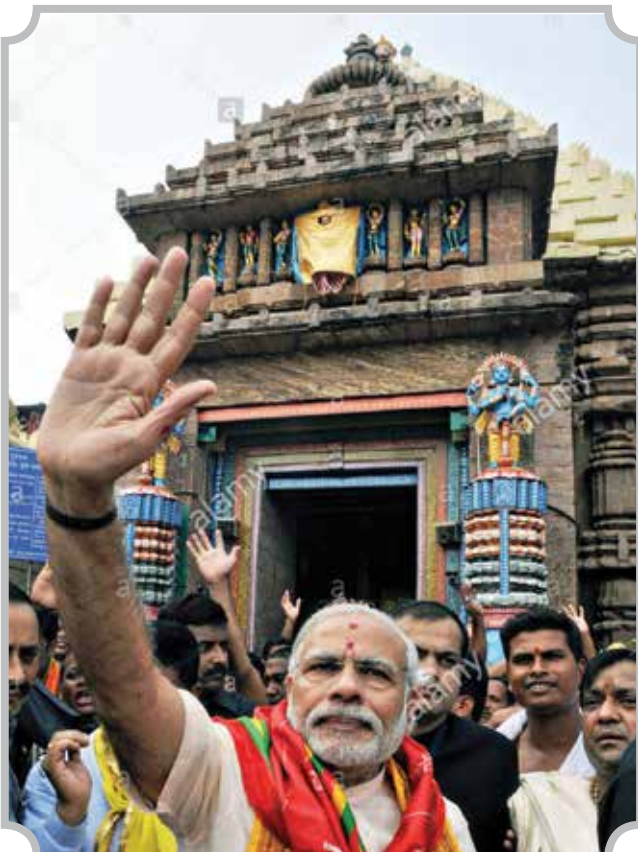
२०१९ में दूसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद जन अभिवादन स्वीकार करते श्री नरेन्द्र मोदी

आध्यात्मिक एवं सामाजिक सक्रियता

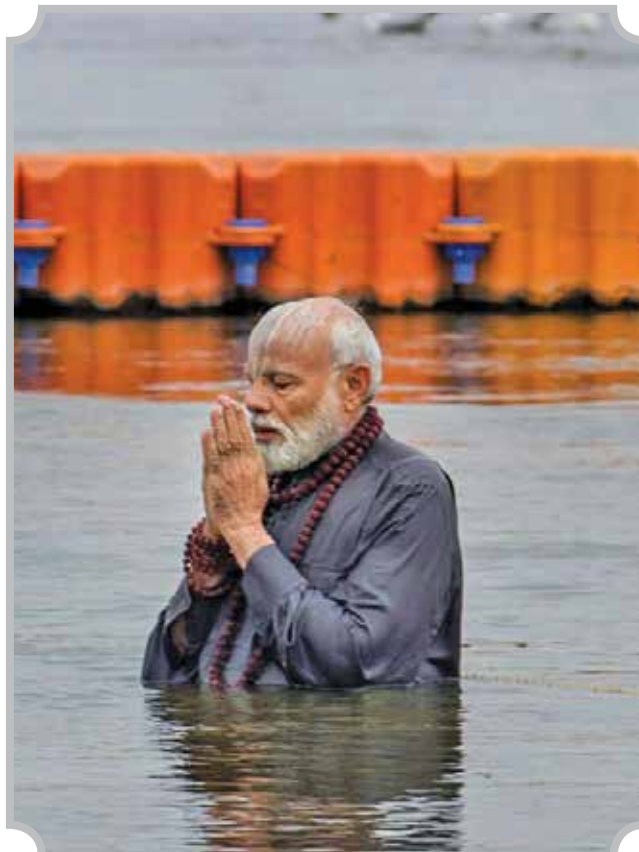




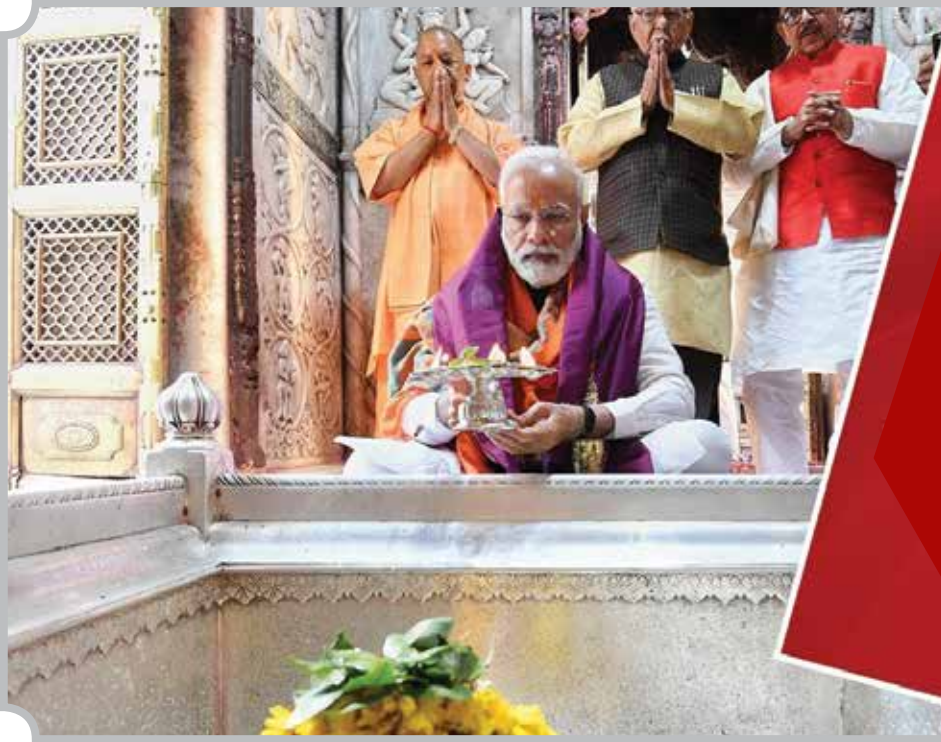
केदारनाथ (उत्तराखंड) में स्थित गुफा में ध्यानमग्न प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



पुरी (ओडिशा) स्थित जगन्नाथ मंदिर परिसर में



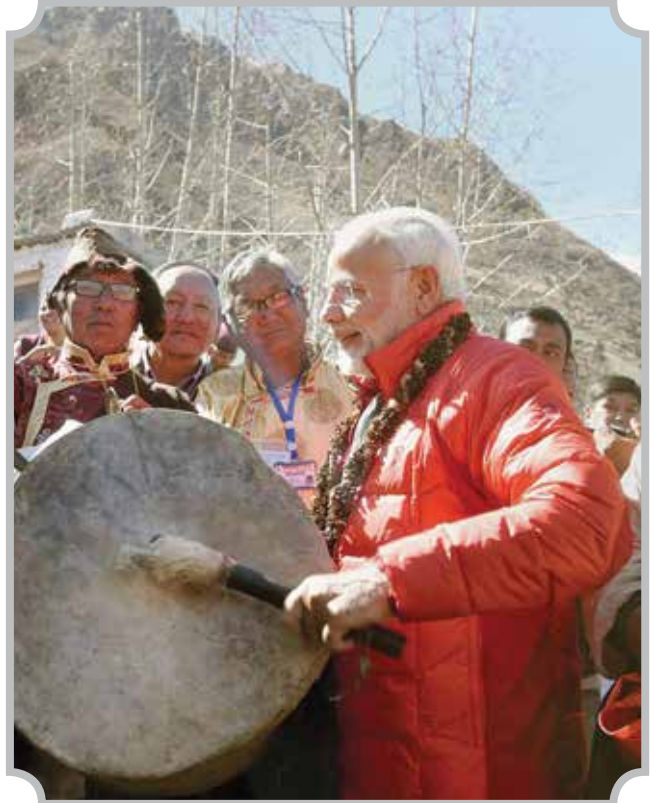
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) में संपन्न कुंभ मेला में स्नान के दौरान करब्यद्ध



वाराणसी
स्थित काशी
विश्वनाथ मंदिर में
पूजा करते प्रधानमंत्री
श्री नरेन्द्र मोदी



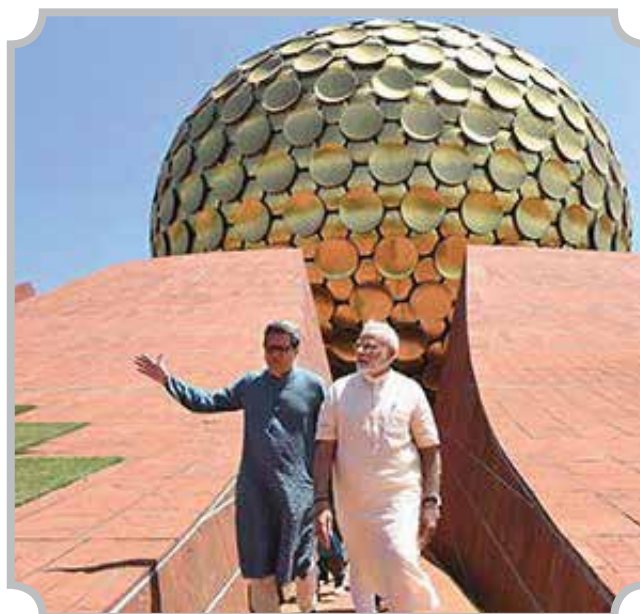
बोधगया में



नेपाल स्थित मुक्तिनाथ मंदिर में



11 मई 2018 को जनकपुरधाम (नेपाल) में जानकी मंदिर परिसर में नेपाल के प्रधानमंत्री श्री के.पी. शर्मा ओली के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



पुडुचेरी में अरबिंदो आश्रम में



2015 में वाराणसी में गंगा आरती में जापान के प्रधानमंत्री के साथ प्रधानमंत्री श्री मोदी



वडनगर (गुजरात) में सटकेश्वर मंदिर में पूजा करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



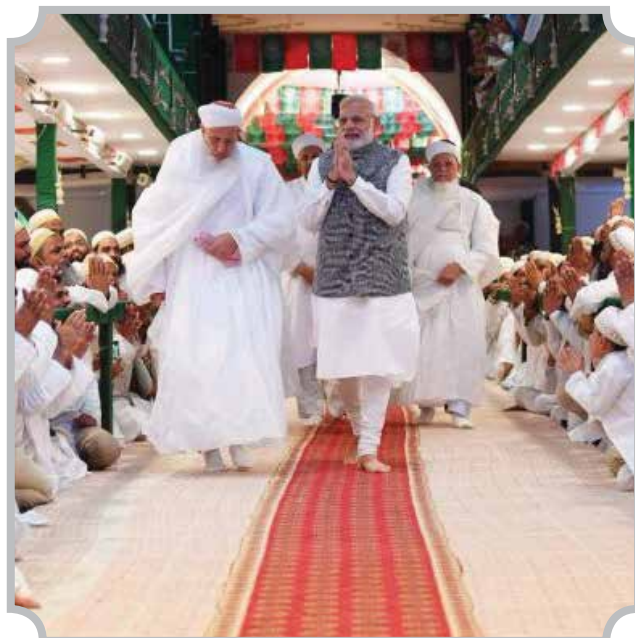
लिंगराज (ओडिशा) में



केदारनाथ गुफा में



अमृतसर (पंजाब) स्थित स्वर्ण मंदिर में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



इंदौर (मध्य प्रदेश) में दाउदी बोहरा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी



सेंट एंथोनी चर्च (श्रीलंका), जहां बम धमाके हुए थे, में मृतकों को श्रद्धांजलि देते हुए

वैश्विक मंच पर सम्मान



प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को रूसी संघ के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपॉस्टल' से सम्मानित किया गया



ऑर्डर ऑफ जायद पुरस्कार, अप्रैल २०१९, यूईई



चैपियंस ऑफ अर्थ पुरस्कार, सितंबर २०१८, संयुक्त राष्ट्र



सियोल शांति पुरस्कार २०१८, अक्टूबर २०१८, दक्षिण कोरिया



ग्रैंड कॉलर सम्मान, फिलिस्तीन, फरवरी २०१८



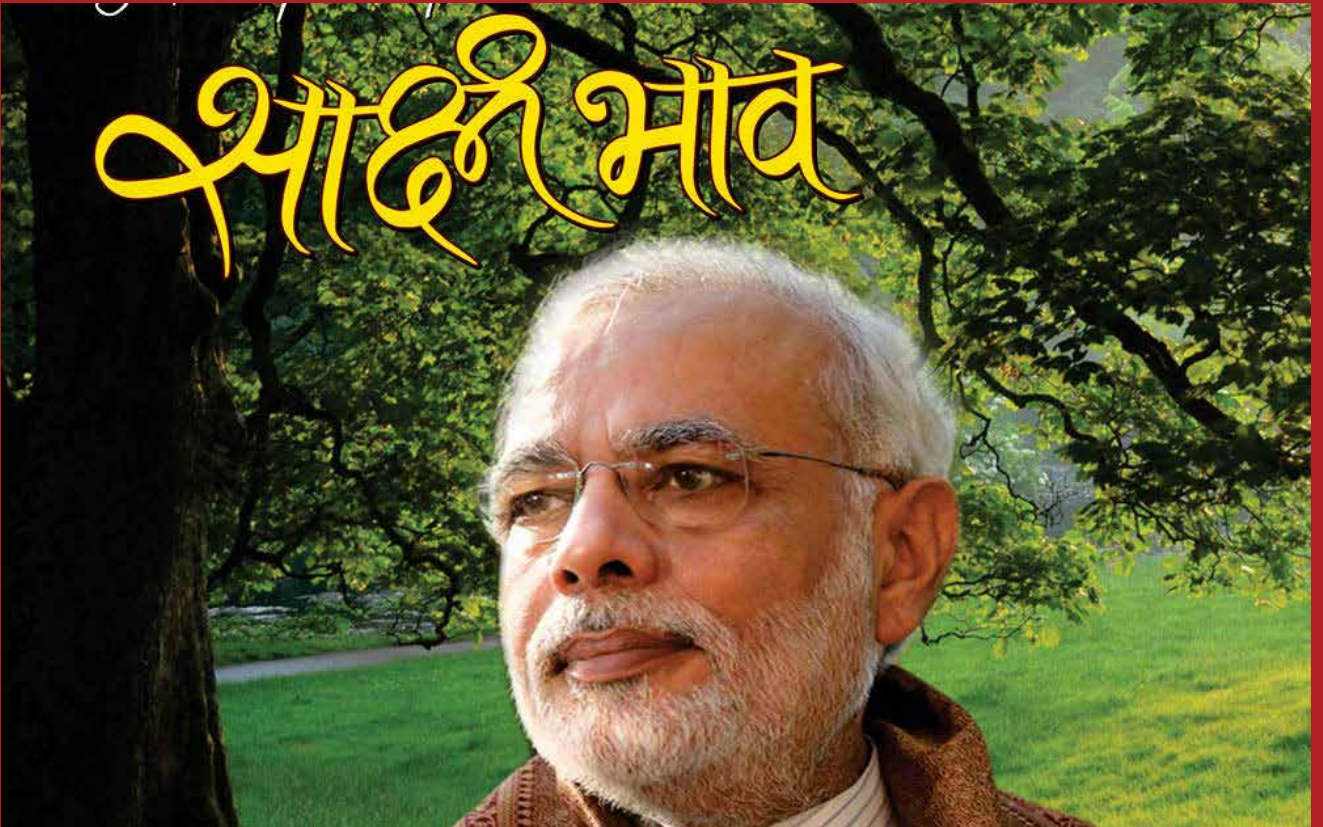
किंग अब्दुल अजीजसैश पुरस्कार, अप्रैल २०१६, सऊदी अरब



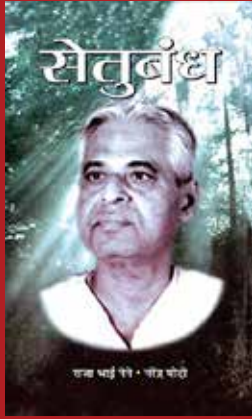
अमीर अमानुल्लाह खान पुरस्कार, जून २०१६, अफगानिस्तान

साहित्यकार नरेन्द्र मोदी

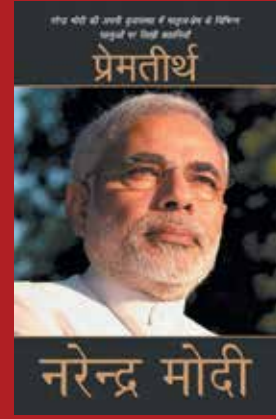
भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। वे दूरदर्शी राजनेता के साथ-साथ सहृदय कवि-लेखक के रूप में भी जाने जाते हैं। उनके लेखन में राष्ट्र सर्वोपरि का भाव प्रमुखता से प्रस्तुत रहता है। उन्होंने सामाजिक एकात्मता, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं नीतिगत मामलों को लेकर विपुल लेखन किया है। उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जो हिंदी, मराठी, अंग्रेजी सहित अनेक भाषाओं में अनूदित हुई हैं। 2007 में 'आंख आ धन्य छे' नाम से गुजराती भाषा में उनका कविता संग्रह प्रकाशित हुआ था। उनके द्वारा रचित पुस्तकों में साक्षी भाव, प्रेमतीर्थ, सेतुबंध, आपातकाल में गुजरात, ज्योतिपुंज, सामाजिक समरसता, एग्जाम वॉरियर्स आदि उल्लेखनीय हैं।



'साक्षी भाव' पुस्तक संवाद रूप में व्यक्त उनके मनोभावों का संकलन है।



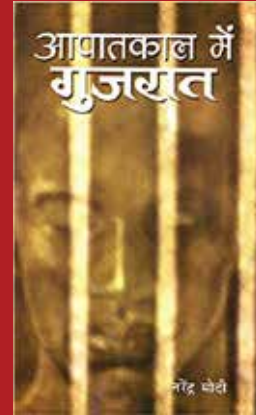
‘सेतुबंध’ पुस्तक में सामाजिक कार्यकर्ता लक्ष्मण इनामदार जी के प्रेरक जीवन दर्शन पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं।



‘प्रेमतीर्थ’ पुस्तक में प्रेम और अनुराग से संबंधित कहानियां प्रस्तुत हैं।



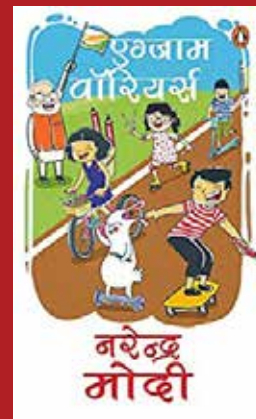
‘ज्योतिपुंज’ में स्वामी विवेकानंद, आद्य सरसंघचालक डॉ. रेडगेवार, श्रीगुरुजी, लक्ष्मणराव इनामदार, मधुकरराव भागवत, केशवराव देशमुख जैसे महापुरुषों का प्रेरणास्यद जीवन वृत्तांत लिखा गया है।



‘आपातकाल में गुजरात’ पुस्तक में आपातकाल में तत्कालीन निरंकुश सरकार की ज्यादतियों के विरुद्ध जनमानस के शौर्य का दिग्दर्शन है।



सामाजिक एकता की दृष्टि से यह पुस्तक उल्लेखनीय है।



‘एगजाम दोरिस’ पुस्तक में परीक्षा में अच्छे अंक लाने एवं परीक्षा का भय दूर करने के लिए संवाद किया गया है।



महाबलीपुरम में सागर से संवाद

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

तू धीर है, गंभीर है,
जग को जीवन देता, नीला है नीर तेरा।
ये अथाह विस्तार, ये विशालता,
तेरा ये रूप निराला।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

सतह पर चलता ये कोलाहल, ये उत्पात,
कभी ऊपर तो कभी नीचे।
गरजती लहरों का प्रताप,
ये तुम्हारा दर्द है, आक्रोश है
या फिर संताप ?
तुम न होते विचलित
न आशंकित, न भयभीत
क्योंकि तुममें है गहराई!

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

शक्ति का अपार भंडार समेटे,
असीमित ऊर्जा स्वयं में लपेटे।
फिर भी अपनी मयार्दाओं को बांधे,
तुम कभी न अपनी सीमाएं लांघे!
हर पल बड़प्पन का बोध दिलाते।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

तू शिक्षादाता, तू दीक्षादाता
तेरी लहरों में जीवन का
संदेश समाता।
न वाह की चाह,
न पनाह की आस,
बेपरवाह सा ये प्रवास।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

चलते-चलाते जीवन संवारती,
लहरों की दौड़ तेरी।
न रुकती, न थकती,
चरैवती, चरैवती, चरैवती का मंत्र सुनाती।
निरंतर... सर्वत्र!
ये यात्रा अनवरत,
ये संदेश अनवरत।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

लहरों से उभरती नई लहरें।
विलय में भी उदय,
जनम-मरण का क्रम है अनूठा,
ये मिटती-मिटती, तुम में समाती,
पुनर्जन्म का अहसास कराती।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

सूरज से तुम्हारा नाता पुराना,
तपता-तपाता,
ये जीवंत-जल तुम्हारा।
खुद को मिटाता, आसमान को छूता,
मानो सूरज को चूमता,
बन बादल फिर बरसता,
मधु भाव बिखेरता।
सुजलाम-सुफलाम सृष्टि सजाता।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

जीवन का ये सौंदर्य,
जैसे नीलकंठ का आदर्श,
धरा का विष, खुद में समाया,
खारापन समेट अपने भीतर,
जग को जीवन नया दिलाया,
जीवन जीने का मर्म सिखाया।

हे... सागर !!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

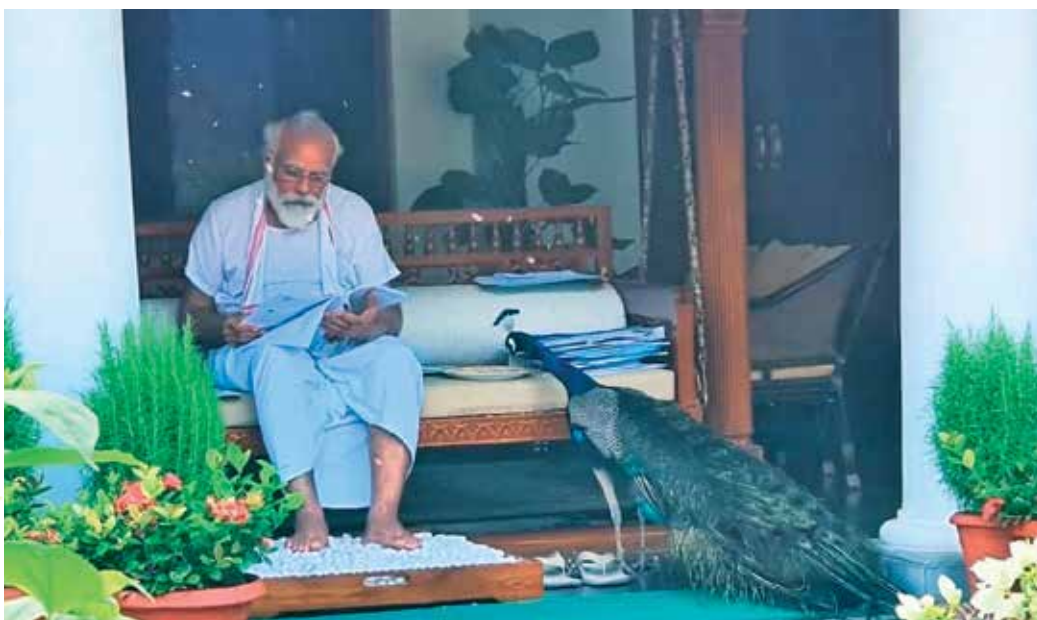

Narendra Modi



भोर भयो, बिन शोर...

भोर भयो, बिन शोर,
मन मोर, भयो विभोर,
रग-रग है रंगा,
नीला भूरा श्याम सुहाना,
मनमोहक, मोर निराला।
रंग है, पर राग नहीं,
विराग का विश्वास यही,
न चाह, न वाह, न आह,
गूँजे घर-घर आज भी गान,
जिये तो मुरली के साथ

जाये तो मुरलीधर के ताज।
जीवात्मा ही शिवात्मा,
अंतर्मन की अनंत धारा
मन मंदिर में उजियारा सारा,
बिन वाद-विवाद, संवाद
बिन सुर-स्वर, संदेश
मोर चहकता मौन महकता।





‘ आत्मनिर्भरता देश को वैश्विक आपूर्ति शृंखला में कड़ी प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करेगी और यह आवश्यक है कि देश इस प्रतिस्पर्धा में अवश्य ही जीत हासिल करे। ’

कमल संदेश

डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास

पी.पी.- 66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली - 110003

फोन: 23381428 - 011, फैक्स: 23387887 - 011

ईमेल: mail.kamalsandesh@gmail.com

वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

सहयोग राशि: ₹ 100